दिव्याङ्गनातन्त्र

स्वोपज्ञ 'अनुपमा' हिन्दीव्याख्यासहितम्

30669

16

14
DV
0669

JACL-KRC

030669

अजय कुमार उत्तम

16

केन्द्रीय संस्कृत संस्थान
जयपुर परिसर, जयपुर
पुस्तकालय
क्रमांक ....

30669

SV-2024

सिद्धाश्रमस्थपरमहंसस्वामीश्रीनिखिलेश्वरानन्दशिष्य-
अजयकुमार उत्तमसङ्कलितं

दिव्याङ्गनातन्त्रम्

स्वोपज्ञ 'अनुपमा' हिन्दीव्याख्यासहितम्

30669

भारतीय विद्या संस्थान
वाराणसी-२२१००२

प्रकाशक :
© **भारतीय विद्या संस्थान**
प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
सी. २७/५९ जगतगंज
वाराणसी-२२१००२ (उ० प्र०)

ISBN - 8187415-35-5
संस्करण - (प्रथम) 2003
मूल्य - रु० ४०/-

JACL-KRC
030669

अक्षर संयोजक -
वीज बिजनेस सेन्टर
सी. 21/91 महामण्डल नगर,
लहुराबीर, वाराणसी
फोन : 0542-312375

DIVYĀNGANĀ TANTRAM

OF

AJAY KUMĀR UTTAM

(DISCIPLE OF PARAMHANS SWĀMĪ
SRĪ NIKHILESHWARĀNAND OF SIDDHĀSRAM)

WITH

OWN HINDI COMMENTARY "ANUPAMĀ"

30669

BHĀRATĪYA VIDYĀ SANSTHĀN

VĀRĀNASĪ - 221002

Published by :
© **Bharatīya Vidyā Sansthān**
Publisher & Booksellers
C. 27/59 Jagatganj,
Vārānasi 221 002 (U.P.)

ISBN : 8187415-35-5

Edition - First -2003

Price - Rs. 40/-

Computer Composing :
Vee's Business Centre
C. 21/91 Mahamandal Nagar,
Lahurabir, Varanasi.
Tel : 0542 - 312 375

भूमिका

भारतीय साधना जगत् में तान्त्रिक क्रियाओं का अपना विशिष्ट स्थान है। तन्त्रशास्त्र में असंख्य तांत्रिक क्रियाओं का वर्णन विवरण प्राप्त होता है। सम्पूर्ण तन्त्रशास्त्र मुख्यतया तीन भागों में विभाजित है—१. देवता, २. देवीतन्त्र एवं ३. मिश्र तन्त्र।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य, राम, कृष्ण, भैरव, कार्त्तिकेय, आदि की साधना देवता तन्त्र के अन्तर्गत की जाती है। इनके भी सम्प्रदायभेद से अनेक रूप हैं—यथा—वैष्णव, शैव, गाणपत्य, सौद आदि।

दुर्गा, काली, तारा, लक्ष्मी, त्रिपुरसुन्दरी, छिन्नमस्ता, भुवनेश्वरी रति, प्रत्यंगिरा, धूमावती, कामाक्षी, मीनाक्षी, आदि की साधना शाक्ततन्त्र के अंतर्गत की जाती है। इन देवियों के भी साधना दो प्रमुख कुलों में विभाजित है यथा—काली कुल तथा श्रीकुल।

यक्षिणी, अप्सरा, किन्नरी, सुन्दरी, कात्यायनी, नागकन्या, राक्षसकन्या, कामरूपिणी, भूत, प्रेत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, वेताल, राक्षस विद्याधर, विद्याधरी, नायिका, योगिनी आदि की साधना मिश्रतन्त्र के अन्तर्गत की जाती है।

प्रस्तुत ग्रन्थ "दिव्याङ्गनातन्त्र" "मिश्रतन्त्र" का ग्रन्थ है। इसमें प्रमुख रूप से अप्सरा, यक्षिणी, सुन्दरी, कात्यायनी, किन्नरी आदि का प्रामाणिक एवं विस्तृत वर्णन किया गया है।

अप्सरा साधना का वर्णन बौद्ध तान्त्रिक ग्रन्थ [1]**कृष्णयमारि तन्त्र** में विस्तार पूर्वक किया गया है। इस ग्रन्थ के पन्द्रहवें पटल में एक ऐसे विशिष्ट मन्त्र का वर्णन किया गया है जिसके द्वारा किसी भी अप्सरा को सिद्ध कर उससे सुख भोग प्राप्त किया जा सकता है।

इस ग्रन्थ के अतिरिक्त [2]**भूतडामरमहातन्त्र** नामक ग्रन्थ में भी अष्ट अप्सरा साधना तथा उनकी मुद्राओं का वर्णन किया गया है।

यक्षिणी साधना का वर्णन रुद्रयामल तन्त्र, उड्डामरेश्वर तन्त्र, कामरत्न, भूतडामर महातन्त्र, तन्त्रराजतन्त्र, विद्यार्णव तन्त्र, दत्तात्रेय तन्त्र, आर्यमञ्जुश्रीमूलकल्प, किंकिर्णा

---

१. यह ग्रन्थ तिब्बती संस्थान वाराणसी से प्रकाशित है, २. यह ग्रन्थ भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी से प्रकाशित है।

तन्त्र आदि में प्राप्त होता है। वहीं पर इनकी साधनाविधि भी प्राप्त हो जाती है। तन्त्रराजतन्त्र में नीलपताकानित्या का मन्त्र दिया गया है जिसके माध्यम से किसी भी यक्षिणी को अपने वश में किया जा सकता है। जैसे हमें यदि विचित्रा यक्षिणी को सिद्ध करना है तो मन्त्र इस प्रकार होगा—

ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदविचित्रे श्रीं ह्रीं।।

इसी प्रकार कामेश्वरी यक्षिणी का मन्त्र होगा—

ह्रीं श्रीं नित्यद्रवे मदकामेश्वरि श्रीं ह्रीं।।

प्रसिद्ध ग्रन्थ शिवतत्त्वरत्नाकर में अप्सराओं, योगिनियों एवं यक्षिणियों के नाम इस प्रकार दिये गये हैं—

अप्सरा

उर्वशी मेनका रम्भा चन्द्ररेखा तिलोत्तमा ।
वपुष्मती कान्तिमती लीलावत्युत्पलावती ।।
अलम्बुसा गुणवती स्यूतकेशी कलावती ।
कलानिधिर्गुणवती कर्पूरतिलकोर्वरा ।।
अनङ्गतिलका चापि तथा मद्यनमोहिनी ।
चकोराक्षी चन्द्रकला तथा मुनिमनोहरा ।।
ग्रावद्रावा तपोद्वेष्ट्री सुनासा च सुवर्णिका ।
दारुसञ्जीविनी सुश्रीः क्रतुः शुल्का शुभानना ।।
तपः शुल्का तीर्थशुल्का दानशुल्का हिमावती ।
पञ्चाश्वमेधिका चैव राजसूयार्थिनी तथा ।।
अष्टाग्नीषोमिका तद्वद्वाजपेयशतार्थिनी ।
इत्याद्यप्सरसां श्रेष्ठाः सहस्रं षष्टिसम्मितम् ।।
एतस्मिन्नप्सरोलोके वसन्त्यन्या अपि स्त्रियः ।
गीतज्ञा नृत्यकुशला, कामकेलिषु कोविदाः ।।
नानादेशविशेषज्ञा नानाभाषाविशारदाः ।
दिव्यभोगैः सुसम्पन्नाः स्वेच्छाविधृतविग्रहाः ।।

(शिवतत्त्वरत्नाकर ३/३/१८-२५)

सिद्धयोगिन्यश्चतुः षष्टिः

दिव्ययोगा महायोगा सिद्धयोगा गणेश्वरी ।
पिशाचिनी डाकिनी च कालरात्रिर्निशाचरी ।
कङ्काली रौद्रवेताली हुङ्कारी भुवनेश्वरी ।
ऊर्ध्वकेशी विरुपाक्षी शुष्काङ्गी नरभोजिनी ।।
फट्कारी वीरभद्री च धूम्राक्षी कलहप्रिया ।
रक्ताक्षी राक्षसी घोरा विश्वरूपा भयङ्करी ।।
कामाक्षी चोग्रचामुण्डा भीषणा त्रिपुरान्तकी ।
वीरकौमारिकी चण्डी वाराही मुण्डधारिणी ।।
भैरवी हस्तिनी क्रोधिनी दुर्मुखी प्रेतवाहिनी ।
खट्वाङ्गी दीर्घलम्बोष्ठी मालती मन्त्रयोगिनी ।।
[1]अर्दिनी चक्रिणी ग्राहकङ्काली [2]कालरूपिणी ।
कण्टकी ताडकी शुक्री यमदूती करालिनी ।
शङ्खिनी पद्मिनी क्षीरा असङ्गा च प्रहारिणी ।।
लक्ष्मीश्च कामुकी लोला काकदृष्टिरधोमुखी ।
धूर्जटी मालिनी घोरा कपाली विषभोजिनी ।।
चतुष्षष्टिः समाख्याता योगिन्यो वरसिद्धिदाः ।।

(शिवतत्त्वरत्नाकर ३/५/११३-१२१)

यक्षिण्यः षट्त्रिंशत्

विचित्रा विभ्रमा हंसी भीषणी जनरञ्जिका ।
विशाला मदना दुष्टा कालकण्ठी महाभया ।।
माहेन्द्री शङ्खिनी चान्द्री मङ्गला वटवासिनी ।
मेखला सकला लक्ष्मीर्मालिनी विश्वनायिका ।
सुलोचना सुशोभा च कामदा च विलासिनी ।।
कामेश्वरी नन्दिनी च स्वर्णरेखा मनोहरा ।
प्रमोदा रागिणी सिद्धा पद्मिनी च रतिप्रिया ।।
कल्याणदा कलारक्षा ततश्च सुरसुन्दरी ।
इति षट्त्रिंशदाख्याता यक्षिण्योऽभीष्टसिद्धिदाः ।।

(शिवतत्त्वरत्नाकर ३/५/९२-९६)

---

१. अस्थिनी, २. भुवनेश्वरी इति पाठान्तरः ।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त और भी अनेक ऐसे ग्रन्थ हैं जिनमें अप्सरा, यक्षिणी, किन्नरी तथा योगिनी का वर्णन किया है। अप्सराओं का वर्णन तो लगभग सभी पुराणों में प्राप्त हो जाता है। अप्सरा साधना में सिद्धि प्राप्त किये बिना कोई साधक कैसे कहला सकता है। इस साधना में अत्यन्त सावधानी, एकाग्रता व दृढ़ इच्छा शक्ति की आवश्यकता होती है। कुछ विशिष्ट तांत्रिक मुद्राओं का भी प्रयोग किया जाता है। इन सभी क्रियाओं के द्वारा ही अप्सरा साधना में सिद्धि प्राप्त होती है। यहाँ कुछ अप्सराओं के नाम दिये जा रहे हैं—

अद्रिका, अलम्बुषा, अरुणा, अम्बिका, असिता, अम्बुजाक्षी, अनुम्लोचा, अरुणप्रिया, अपराजिता, अभवा, इन्दुमती, इरा, उर्वशी, उम्लोचा, उर्वरा, उज्ज्वला, ऋतुस्थली, कमला, कला, कलावती, कटाक्षा, कनकावती, कर्णिका, काम्या, काञ्चनमाला, कृतस्थली, कुण्डला, काञ्ची, कुंभयोनि, केशिनी, कुलहारिणी, कुशला, कात्यायनी, कमलिनी, कामवेगा, कलरवा, कर्पूरगन्धा, कुंकुमगन्धिनी, कनका, कामदा, कामविमोहिनी, कर्पूराङ्गिका, खेचरी, गन्धकेशिका, गालिनी, गीतज्ञा, गोपाली, गौरी, गुञ्जा, गन्धकाली, गम्भीरा, घृताची, चन्द्रप्रभा, चन्द्रोज्ज्वला, चित्रिणी, चित्ररेखा, चन्द्रलेखा, चन्द्रकान्ता, चारुशीला, चारुदेहा, चित्राङ्गिका, चित्रदेहा, चारुदृक्, चारुनेत्रा, चारुहासिनी, चित्रा, चित्रसेना, चित्रलेखा, चित्राङ्गदा, चन्द्रकान्ति, चारुकेशी, चारुकन्या, चारुमुखी, चन्द्रावली, जानपदी, ज्योति, जीवान्गी, जया, जयन्ती, तिलोत्तमा, तारा, दण्डगौरी, देवी, देवरूपा, देवरति, देवमाला, देवप्रिया, दिव्या, दान्ता, दीर्घलोचनी, धनदारति, धन्या, निम्लोचन्ती, नित्यया, पूर्वचित्ति, पुण्डरीका, प्रमथिनी, पुञ्जिकस्थली, प्रम्लोचा, पुण्यगन्धा, प्रमद्वरा, प्रज्ञा, प्रजागरा, पुष्पवल्लभा, प्राणवल्लभा, पुष्पधन्वा, प्रभा, पद्मावती, पुष्पवती, पद्मचूड़ा, प्रशमी, प्रियतमा, प्रभवा, पद्मवक्त्रा, पद्मिनी, पद्मगन्धा, पद्महस्ता, प्रेमदा, प्रेमप्रदा, पद्मा, बुद्बुदा, बुद्धिदा, बुद्धा, बाणमाता, भद्ररूपा, भवा, भद्रदा, मिश्रकेशी, मनोरमा, मरीचि, महाश्वेता, महासेना, महारंगवती, मञ्जूषा, मोहिनी, मञ्जुघोषा, मीनाक्षी, मदोत्कटा, मनोहरा, मदालसा, महामाया, मुञ्जिकस्तनी, महाभर्गा, माया, मालिनी, मुञ्जकेशिनी, माल्या, महार्हा, माधवी, मेदिनी, माधुरर्यका, योगिनी, रक्षिता, रुचि, रति, रमणी, रतिप्रिया, रत्नप्रभा, रमा, राधा, रुचिररूपा, लक्षणा, लता, ललिता, लीला, लीलावती, विश्वाची, विद्युत्पर्णा, वर्गा, विद्युन्माला, विप्रचित्ति, वेदजातिविशारदा, वपु,

वरुथिनी, विशालनेत्रा, विद्युता, विलासिनी, विपुला, वर्चा, विभावरी, विद्योता, विरला, वरदा, विद्युत्प्रभा, विशालाक्षी, विजया, वसन्ततिलका, वरलोचना, वरारोहा, वृन्दया, विमला, विद्युल्लता, वरपद्मरेखा, वरश्रोणी, वरसुधा, विशदाक्षिका, वरोत्पला, शुचिका, शारद्वती, शोभा, शुचिस्मती, शिवदूती, शीलमण्डिता, शशिनी, शिवप्रिया, शंखिनी, शोभना, शुभदा, शान्ता, शशिमुखी, शुभदन्तिका, शुकसम्भवा, सहा, सुकेशी, सुबाहु, सुरता, सुरजा, सुप्रिया, सहजन्या, सोमा, सुवपु, सुगन्धा, सौरभमेयी, समीची, स्वर्णावती, स्वयंवरा, स्वयंप्रभा, सेनजिति, स्वर्णदेहा, सुवृत्ता, सुलोचना, सानुमती, सुदर्शना, सूजूर्णि, सुम्न, सुनयना, सुरसुन्दरी, सुभद्रा, सम्भवा, साराङ्गी, सारविक्रमा, सप्तशायका, सूर्पकान्ति, सुजाता, सुरुचि, सुरतमञ्जरी, सुरतोत्सवा, सुविशारदा, सती, सुस्मिता, सन्तोषिका, सुखदा, सुवर्णा, सुरभि, सुरसोत्सुका, सुवर्चला, हेमाङ्गिनी, हासिनी, हरिणी, हिरण्याक्षी, हिरण्यमयी, हंसजातिविशारदा, हेमा, हंसिनी, हरिवल्लभा, त्रिपुरसुन्दरी, त्रिलोचनी, त्रिवेदिस्था।

"कृष्णयमारितन्त्र" में एक विशिष्ट साधना का वर्णन जिसमें किसी भी अप्सरा को वशीभूत कर उससे प्रेम, धन, ऐश्वर्य एवं सुख प्राप्त किया जा सकता है। वही साधना यहाँ प्रस्तुत है—

अथातो रहस्यं वक्ष्ये समासान्न तु विस्तरात् ।
येन विज्ञानमात्रेण अप्सराकर्षणं भवेत् ।।
द्विभुजमेकवक्त्रं तु शरकार्मुकपाणिनम् ।
पीतदेहं महारूपं वज्रानङ्गं विभावयेत् ।।
पूर्वेण रतिं ध्यायाद् दक्षिणे मदनसुन्दरीम् ।
पश्चिमे कामदेवीं तु उत्तरे मदनोत्सुकाम् ।।
सर्वासां कामदेवीनां कार्मुकं भावयेच्छरम् ।
पीतां रक्तां तथा श्यामां शुक्लवर्णां च भावयेत् ।।
कोणे चैव न्यसेन्नित्यमनिरुद्धमुषापतिम् ।
वसन्तं मकरकेतुं च द्वारभागे प्रकथ्यते ।।
कन्दर्पदर्पकं चोक्तं स्मरं बाणायुधं तथा ।
सर्वेणां देवतानां तु यमघ्नं मूर्ध्नि भावयेत् ।।

स्त्रीणां खगमुखान्तस्थं वज्रानङ्गं विभावयेत् ।
शीत्कारमन्त्रसम्भूतं विस्फुरन्तं समन्ततः ।।
वाञ्छितां विह्वलां ध्यात्वा वेपमानां मदोत्सुकाम् ।
पादयोः पतितां चैव रक्तवस्त्रपरीवृताम् ।।
मन्त्रं चैव जपेत् तत्र ॐकारस्वभेदितम् ।
स्वाहाकारं ततो दत्त्वा शीत्कारमन्त्रमुच्चरेत् ।।
अमुकी मे वशीभवतु भावयेत् सप्तवासरम् ।
वाञ्छितां लभते योगी कृष्णस्य वचनं यथा ।।

खमुखान्तस्थं- साध्यस्त्रीयोनिमध्यस्थम्, मदोत्सुका- मदनोत्सुका, सुरतकाङ्क्षिणी।

मन्त्रः—**ॐ ह्रीः अमुकी मे वशीभवतु शीत् स्वाहा।**

इस मन्त्र में "अमुकी" के स्थान पर मनोवाञ्छित अप्सरा का नाम लें। इस मन्त्र का शुक्रवार से प्रारम्भ कर सात दिन तक करें। प्रतिदिन मन्त्र का कुल दश हजार मन्त्र जप करें। इससे अप्सरा अवश्य ही सिद्ध होती है। मन्त्र जप के साथ-साथ मुद्राओं का भी प्रयोग करें जो इस ग्रन्थ में दी गयी हैं। एक बार में यदि सफलता न प्राप्त हो तो पुनः पुनः करें किन्तु निराशा न हों क्योंकि अप्सराएँ असाधारण रूप यौवन से सम्पन्न देवलोक की रमणियाँ हैं, वे साधारण मनुष्य को सिद्धि नहीं प्रदान करती, किन्तु इतिहास साक्षी है कि महर्षि विश्वामित्र ने भी अपने तपोबल से उर्वशी, रम्भा व मेनका को अपने वश में किया था। साधना से क्या नहीं हो सकता। इसलिए सर्वप्रथम बनें फिर साधना करें।

इस ग्रन्थ को भारतीय विद्या संस्थान के श्री कुलदीप जैन ने अत्यन्त ही सुन्दर रूप में प्रकाशित किया है। इसके लिए श्री जैन बधाई के पात्र हैं। मेरे अन्य कई ग्रन्थ भी श्री कुलदीप जैन ही प्रकाशित कर रहे हैं। पाठकों को मेरा यह ग्रन्थ अवश्य ही पसन्द आयेगा, विशेष कर उन साधकों को भी यह लाभान्वित करेगा जो अप्सरा, यक्षिणी, किन्नरी, सुन्दरी आदि की साधना में लगे हुए हैं—

शुभाकाङ्क्षी

अजय कुमार उत्तम

विषयानुक्रमणिका

प्रथमः तरङ्गः

अष्ट अप्सरा-साधना

30669

अष्टाप्सरसामावाहनादिमन्त्रः १

शशिदेव्याप्सरा मन्त्रप्रयोगः ३

तिलोत्तमा अप्सरा मन्त्रप्रयोगः ३

काञ्चनमाला अप्सरा मन्त्रप्रयोगः ४

कुण्डलाहारिण्य अप्सरा मन्त्रप्रयोगः ४

रत्नमाला अप्सरा मन्त्रप्रयोगः ५

रम्भा अप्सरा मन्त्रप्रयोगः ६

उर्वशी अप्सरा मन्त्रप्रयोगः ६

श्रीभूषणी अप्सरा मन्त्रप्रयोगः ७

अप्सराएँ ७

उर्वशी की उत्पत्ति-कथा ९

द्वितीयः तरङ्गः

यक्षिणीतन्त्रम्

षट्त्रिंशद्यक्षिणीनामानि १६

षोडशनित्यातन्त्रे षट्त्रिंशद्यक्षिणीनामानि १६

विचित्रायक्षिणीमन्त्रसाधनम् १७

विभ्रमायक्षिणीमन्त्रसाधनम् १८

हंसीयक्षिणीमन्त्रसाधनम् १८

भीषणी (भिक्षिणी) यक्षिणीमन्त्रसाधनम् १९

जनरञ्जिनीयक्षिणीमन्त्रसाधनम् १९

विशालायक्षिणीमन्त्रसाधनम् २०

मदनायक्षिणीमन्त्रसाधनम् २०

घण्टायक्षिणीमन्त्रसाधनम् २१

कालकर्णीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	२१
महाभयायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	२२
माहेन्द्रीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	२२
शङ्खिनीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	२३
चान्द्री (चन्द्रिका) यक्षिणीमन्त्रसाधनम्	२३
श्मशानीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	२४
वटयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	२४
मदनमेखलायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३१
विकलायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३१
लक्ष्मीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३२
मालिनीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३२
मानिनीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३२
शतपत्रिकायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३३
सुलोचनायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३३
शोभनायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३३
कपालिनीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३४
विलासिनीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३४
विशालिनीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३४
नटीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३५
सुरसुन्दरीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	३७
कामेश्वरीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	४०
मनोहरायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	४२
कनकावतीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	४४
रतिप्रियायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	४५
पद्मिनीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	४७
पद्मावतीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	४८
अनुरागिणीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	५०
स्वर्णरेखायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	५२
प्रमदायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	५२
प्रमोदायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	५६

नखकेशिकायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	५६
भामिनीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	५७
स्वर्णावतीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	५७
महायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	५८
चन्द्रद्रवायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६०
धनदापिप्पलयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६०
पुत्रप्रदयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६१
अशुभक्षयकरी धात्रीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६१
विद्यादात्र्युदुंबरयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६१
विद्यादात्रीनिर्गुण्डीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६२
जयायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६२
संतोषा श्वेतगुञ्जा यक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६२
राज्यदा तुलसीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६२
राज्यदांकोलयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६३
कुशयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६३
अपामार्गयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६३
क्षीरार्णवायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६३
उच्छिष्टयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६४
चन्द्रामृतयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६४
स्वामीश्वरीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६४
महामायायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६५
त्यागीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६५
सर्वाङ्गसुलोचनायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६५
भूतलोचनायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६६
जलपाणिनीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६६
मातंगेश्वरीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६७
विद्यायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६७
हटेलेकुमारीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६७
बन्दीयक्षिणीमन्त्रसाधनम्	६७
धनदारतिप्रियायक्षिणीमन्त्रसाधनम्	७३

तृतीयः तरङ्गः

किन्नरीमन्त्रसाधनम्

मञ्जुघोषाकिन्नरीमन्त्रसाधनम्	८५
मनोहारिणीकिन्नरीमन्त्रसाधनम्	८५
सुभगाकिन्नरीमन्त्रसाधनम्	८६
विशालनेत्राकिन्नरीमन्त्रसाधनम्	८६
सुरतप्रियाकिन्नरीमन्त्रसाधनम्	८७
अश्वमुखीकिन्नरीमन्त्रसाधनम्	८७
सुमुखीकिन्नरीमन्त्रसाधनम्	८७
दिवाकरमुखीकिन्नरीमन्त्रसाधनम्	८८
क्रोधमन्त्रः	८८

चतुर्थः तरङ्गः

नागकन्यामन्त्रसाधनम्

अष्टनागिनी मन्त्रः	८९
साधनाविधानम्	९०
आवाहनमन्त्रः	९२
पुष्पगन्धदानमन्त्रः	९२
अर्घ्यमन्त्रः	९२
सर्वनागकन्यासाधनमन्त्रः	९२
विसर्जनमन्त्रः	९२
मुद्राविधानम्	९३

पञ्चमः तरङ्गः

सुन्दरीमन्त्रसाधनम्

अष्टसुन्दरीमुद्राविधानम् ९४
क्रोधमन्त्र ९५
कुलसुन्दरीसुन्दरीमन्त्रसाधनम् ९६
विजयसुन्दरीसुन्दरीमन्त्रसाधनम् ९७
विमलसुन्दरीमन्त्रसाधनम् ९७
सुन्दरीमन्त्रसाधनम् ९८
मनोहरीसुन्दरीमन्त्रसाधनम् ९८
भूषणसुन्दरीमन्त्रसाधनम् ९९
धवलसुन्दरीमन्त्रसाधनम् १००
मधुमत्तसुन्दरीमन्त्रसाधनम् १०१

षष्ठः तरङ्गः

भूतिनीमन्त्रसाधनम्

विभूषिणीभूतिनीमन्त्रसाधनम् १०२
कुण्डलधारिणीभूतिनीमन्त्रसाधनम् १०३
सिन्दूरहारिणीभूतिनीमन्त्रसाधनम् १०४
सिंहिनीभूतिनीमन्त्रसाधनम् १०४
हंसिनीभूतिनीमन्त्रसाधनम् १०५
नटीभूतिनीमन्त्रसाधनम् १०६
चेटीभूतिनीमन्त्रसाधनम् १०७
कामेश्वरीभूतिनीमन्त्रसाधनम् १०८
रतिप्रियामन्त्रसाधनम् १०८
कुमारीमन्त्रसाधनम् १०९

सप्तमः तरङ्गः

कात्यायनीमन्त्रसाधनम्

सुरकात्यायनी मन्त्रः १ १ ०
महाकात्यायनी मन्त्र १ १ ०
रुद्रकात्यायनी मन्त्र १ १ ०
चण्डकात्यायनी मन्त्र १ १ ०
वज्रकात्यायनी मन्त्र १ १ ०
कुण्डलकात्यायनी मन्त्र १ १ ०
जयकात्यायनी मन्त्र १ १ ०
सुभगकात्यायनी मन्त्र १ १ ०
कात्यायनीमुद्राविधानम् १ १ ०
साधनाविधानम् (श्लोक १४ से ४८ तक) १ १ २

अथाष्टमः तरङ्गः

भूतकात्यायनीमन्त्रसाधनम् १ १ ८
चित्रलेखासाधनम् १ १ ९
कनकपरीसाधनम् १ २ ०

परिशिष्टम् प्रथम

आर्यमञ्जुश्रीमूलकल्पोक्तम् १ २ २
यक्षिणीमन्त्रसाधनम् १ २ २

परिशिष्ट द्वितीय

नायिकासाधनम् १ ३ १

परिशिष्ट तृतीय

नायिकाकवच एवं स्तोत्र १ ३ ३

परिशिष्ट चतुर्थ

धनदारतिप्रियायक्षिणीकवच एवं स्तोत्र १ ३ ८

***

श्रीगणेशाय नमः
श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः
अजयकुमारउत्तमविरचिता

दिव्याङ्गनातन्त्रम्

'अनुपमा' हिन्दीव्याख्यासहितम्

अथ प्रथमः तरङ्गः

अथ अष्ट अप्सरा साधना

भूतडामरतन्त्रे–

अन्योऽन्यमुष्टियोगेन पद्मावर्तौ करावुभौ ।
मध्याङ्गुल्यौ शुचिंकृत्वा मुद्रा दुःखविनाशिनी ।।१।।

* अनुपमा *

सर्वप्रथम अप्सरा मुद्रा का वर्णन किया जा रहा है–दोनों हाथों की मुट्ठी बाँध कर कमलपुष्प के समान करे तथा मध्यमा अंगुलियों को शुचि के आकार में रखे। इस मुद्रा से दुःख का नाश होता है।।१।।

उभौ खड्गाकृतीकृत्य पाण्यप्सरोवशङ्करी ।
सान्निध्यकारिणी मुद्रा सर्वाप्सरःप्रसाधिनी ।।२।।
मुद्राबन्धनमात्रेण वशीभवति तत्क्षणात् ।
पद्मावर्त्तावुभौ हस्तौ कृत्वाप्सरःप्रसाधिनी ।।३।।

दोनों हाथों को खड्ग के आकार में करे। यह अप्सराओं को वश में करने वाली 'सान्निध्यकारिणी मुद्रा' है। इस मुद्रा के बन्धन से सभी अप्सरायें तत्क्षण वशीभूत होती हैं। दोनों हाथों को कमलपुष्प के समान करने से अप्सरा साधन मुद्रा होती है।

मन्त्रमहार्णवे अष्टाप्सरसामावाहनादिमन्त्रो यथा–

तत्क्षणात्सर्वाप्सरस आगच्छ आगच्छ हूँ यः यः।

भूतडामरतन्त्रे–

तत्क्षणात्सर्वाप्सरस आगच्छागच्छ हूँ हूँ ॐ फट्।

मन्त्रमहार्णव ग्रन्थ में अष्ट अप्सरा आवाहन मन्त्र इस प्रकार है–'तत्क्षणात्सर्वाप्सरस आगच्छ आगच्छ हूँ यः यः।' भूतडामर तन्त्र में यही मन्त्र इस प्रकार कहा गया है–'तत्क्षणात्सर्वाप्सरस आगच्छागच्छ हूँ हूँ ॐ फट्'।।

ॐ सर्वसिद्धि भोगेश्वरि स्वाहा; अनेन सान्निध्यकरणम्।।

'ॐ सर्वसिद्धि भोगेश्वरि स्वाहा' यह अप्सराओं का सान्निध्यकरण मन्त्र है।

ॐ कामप्रियायै स्वाहा; अनेनाभिमुखीकरणम्।।

'ॐ कामप्रियायै स्वाहा'–यह अप्सराओं का अभिमुखीकरण मन्त्र है।

ॐ वाँ प्राँ हुँ हुँ यं हौं; अनेन मोहनम्।।

'ॐ वाँ प्राँ हुँ हुँ यँ हौं' इस मन्त्र से अप्सराओं का मोहन होता है।

यद्यप्सरसो न सिध्यन्ति तदा क्रोधसहितः क्रोधमन्त्रं जपेत्–

ॐ ह्रीं आकट्टः कट्टः हँ वः फट् इति मन्त्रमहार्णवे।

ॐ कटु कटु अमुकी (साध्य अप्सरानाम) हुं फट् इति भूतडामरतन्त्रे।

यदि अप्सराएँ न सिद्ध हों तो क्रोधसहित क्रोधमंत्र जप करे। मंत्रमहार्णव में क्रोधमंत्र इस प्रकार कहा गया है–'ॐ ह्रीं आकट्टः कट्टः हँ व फट्।' भूतडामर तन्त्र में यही मन्त्र इस प्रकार कहा गया है–'ॐ कटु कटु अमुकी (साध्य अप्सरा नाम) हुं फट्।'

एतज्जपमात्रेण शिरः स्फुटति। शतखण्डं विशीर्यति तदागच्छति।। अष्ट-सहस्त्रजपात् सिद्धिः।

क्रोधमंत्र के जपमात्र से अप्सरा आती है; अन्यथा उसका सिर सौ टुकड़ों में फूट जाता है। क्रोधमंत्र का आठ हज़ार जप करने पर सिद्धि होती है।

ॐ बन्ध बन्ध हन हन अमुकीं हूँ; अनेन बन्धनम्।

'ॐ बन्ध बन्ध हन हन अमुकी हूँ'–इस मंत्र से अप्सराओं का बन्धन होता है।

ॐ सबंधसबंधस्तनू हुँ फट्; अनेन मंत्रेण वेष्टयेत्।

'ॐ सबंध सबंधस्तनू हुँ फट्'–इस मंत्र से अप्सराओं का वेष्टन करे।

ॐ चल चल अमुकीं वशमानय हुँ फट्। अनेन सर्वाप्सरसो वशमानयेत्।

'ॐ चल चल अमुकीं वशमानय हुँ फट् इस मंत्र का जप करने से सभी अप्सराएँ वशीभूत हो जाती हैं।२-३।।

१. अथ शशिदेव्यप्सरामन्त्रप्रयोगः

भूतडामरतंत्रे–

ॐ श्रीं शशिदेव्यागच्छागच्छ स्वाहा।

अस्य विधानम्–

शैलशृङ्गं समारुह्य जपेल्लक्षं समाहितः ।
पौर्णमास्यां समभ्यर्च्य घृतदीपं निवेदयेत् ।।४।।
प्रजपेत् सकलां रात्रिमायाति रजनीक्षये ।
चन्दनार्घ्येण सन्तुष्टा वरं वरय वक्ति सा ।।५।।
कामिता सा भवेद्भार्या प्रयच्छति रसायनम् ।
सहस्रवत्सरं पाति शशी दद्याद् यथेप्सितम् ।।६।।

भूतडामर तंत्र में शशिदेवी अप्सरा का मंत्र इस प्रकार दिया है–**ॐ श्रीं शशिदेव्यागच्छागच्छ स्वाहा।** इसकी साधना-विधि इस प्रकार है–पर्वत शिखर पर साधक बैठकर एक लाख मन्त्र का जप करे। तत्पश्चात् पूर्णिमा को पूजन करके घृत का दीपक शशिदेवी को निवेदित करे। सम्पूर्ण रात्रिपर्यन्त जप करने पर प्रातः समय शशिदेवी अप्सरा आती है। अप्सरा के आने पर चन्दन का अर्घ्य प्रदान करे। वह सन्तुष्ट होकर साधक से वर माँगने को कहती है। शशिदेवी साधक की प्रिया बनकर रसायन द्रव्य प्रदान करती है एवं सहस्र वर्ष तक साधक का पालन करती है।।४-६।।

२. अथ तिलोत्तमा अप्सरा मन्त्रप्रयोगः

ॐ श्रीं तिलोत्तमे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।।

जपेदयुतमानन्तु क्षीराशी सप्तवासरान् ।
चन्दनेन विधायाथ मण्डले सप्तमे दिने ।।७।।
सम्पूज्य शक्तितः शुक्लाष्टम्यां पर्वतमूर्द्धनि ।
प्रजपेत् सकलां रात्रिं समायाति निशाक्षये ।।८।।
आगत्य पुरतस्तिष्ठेत् स्मितवक्त्रोत्तमस्तनी ।
चुम्बत्यालिङ्गयत्याशु भार्या भवति कामिता ।।९।।

ॐ श्रीं तिलोत्तमे आगच्छागच्छ स्वाहा यह तिलोत्तमा अप्सरा का मंत्र है। साधक केवल दूध पीकर सात दिन तक दश हजार मंत्र का जप करे। सातवें दिन चन्दन का मण्डल बनाकर अपनी क्षमता के अनुसार पूजन करे। शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को पर्वतशिखर पर आसीन होकर मन्त्र का जप करे। सम्पूर्ण रात्रि जप करने पर प्रातःकाल प्रसन्न मुख तथा उत्तम स्तनवाली तिलोत्तमा अप्सरा प्रकट होती है। वह साधक की भार्या बनकर उसका आलिंगन एवं चुम्बन करती है।।७-९।।

३. काञ्चनमाला अप्सरा मन्त्रप्रयोगः

ॐ श्रीं काञ्चनमाले आगच्छागच्छ स्वाहा।।

नीचगासङ्गमं गत्वा मण्डलं चन्दनेन च ।
धूपं दत्त्वाऽगुरुञ्चैव बलिञ्चापि प्रदापयेत् ।।१०।।
जपेदष्टसहस्त्रन्तु नित्यं सप्तदिनावधि ।
सप्तमे दिवसे पूजां कृत्वा धूपं प्रदापयेत् ।।११।।
प्रजपेत् सकलां रात्रिं समायाति निशाक्षये ।
भार्या भवति कामिता च सर्वाशां पूरयत्यपि ।।१२।।

ॐ श्रीं काञ्चनमाले आगच्छागच्छ स्वाहा यह काञ्चनमाला अप्सरा का मन्त्र है। साधक किसी नदी के संगम तट पर जाकर चन्दन के द्वारा मण्डल निर्मित कर अगुरु की धूप एवं बलि प्रदान करे। प्रतिदिन आठ हजार मंत्र का जप करे। ऐसा सात दिन तक करे। सातवें दिन जप करके पूजा करे तथा धूप प्रदान करे। सम्पूर्ण रात्रि जप करने पर प्रातः समय काञ्चनमाला अप्सरा साधक के समक्ष प्रकट होती है। वह साधक की भार्या बनकर सभी कामनाएँ तथा इच्छा पूर्ण करती है।।१०-१२।।

४. अथ कुण्डलाहारिणी अप्सरा मन्त्रप्रयोगः

ॐ श्रीं ह्रीं कुण्डलाहारिणि आगच्छागच्छ स्वाहा।।

न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासो विधीयते ।
नदीतीरं समास्थायायुतं मासं जपेन्मनुम् ।।१३।।
धूपं दत्त्वा समभ्यर्च्य पुना रात्रौ जपेत्ततः ।
अर्धरात्रे समायाति प्राग्वदर्घ्यं प्रदापयेत् ।।१४।।
कामिता सा भवेद्भार्या प्रत्यहं सम्प्रयच्छति ।
दीनाराणां लक्षमेकं सिद्धिद्रव्यं रसायनम् ।
दर्शयेत् पृष्ठमारोप्य त्रिदिवं कुलहारिणी ।।१५।।

ॐ श्रीं ह्रीं कुण्डलाहारिणि आगच्छागच्छ स्वाहा यह कुण्डलाहारिणी (कुलहारिणी) अप्सरा का मन्त्र है। साधक इस साधना में किसी तिथि, नक्षत्र या उपवास की विवेचना न करके नदीतट पर बैठकर दश हजार मन्त्र का जप करे। इस प्रकार एक महीना जप करने के उपरान्त अन्तिम दिन धूपदान करके रात्रि में पुनः जप करे। ऐसा करने पर अप्सरा अर्द्धरात्रि में आती है। साधक उसी समय उसे अर्घ्य प्रदान करे। इससे अप्सरा प्रसन्न होकर साधक की पत्नी बन जाती है तथा प्रतिदिन एक लाख स्वर्ण मुद्राएं तथा विविध द्रव्य एवं रसायन प्रदान करती है। साथ ही साधक को अपनी पीठ पर चढ़ाकर स्वर्ग का दर्शन भी कराती है।।१३-१५।।

५. अथ रत्नमाला अप्सरा मन्त्रप्रयोगः

ॐ हूँ रत्नमाले आगच्छ आगच्छ स्वाहा।।

देवतायतनं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
मासमेकन्तु मासान्ते पौर्णमास्यां पुनर्जपेत् ।।१६।।
समभ्यर्च्यार्द्धरात्रे तु श्रूयते नूपुरध्वनिः ।
समायात्यन्तिकं दद्यात् पुष्पासनमनुत्तमम् ।।१७।।
किमिच्छसि वद त्वं मे भव भार्येति साधकः ।
भार्याकर्म करोत्येव भोज्यं यच्छति कामिकम् ।
पाति वर्षसहस्राणि रत्नमाला मनोरमा ।।१८।।

ॐ हूँ रत्नमाले आगच्छ आगच्छ स्वाहा यह बारह अक्षरों का रत्नमाला अप्सरा का मन्त्र है। साधक किसी देवालय में जाकर विधिपूर्वक आठ हजार मंत्र का जप करे। एक महीने जप करने पर पूर्णिमा की रात्रि को पुनः मन्त्र का जप करे। विधिवत् पूजन अर्चन करने के पश्चात् आधी रात्रि को नूपुर ध्वनि सुनाई देती है। कुछ समय के उपरान्त रत्नमाला अप्सरा जब प्रत्यक्ष हो तब उन्हें पुष्पासन प्रदान करे। साधक से उसकी इच्छा पूछने पर उनसे भार्या बनने का निवेदन करे। रत्नमाला साधक को पत्नीभाव से सन्तुष्ट करती है तथा इच्छित भोज्य पदार्थ एवं द्रव्य प्रदान करती है। मनोहर रत्नमाला अप्सरा एक हजार वर्ष तक पतिभाव से साधक का पालन करती है।।१६-१८।।

६. अथ रम्भा अप्सरा मन्त्रप्रयोगः

ॐ सः रम्भे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।।

प्रतिपत्तिथिमारभ्य कृत्वा चन्दनमण्डलम् ।
धूपञ्च गुग्गुलं दत्त्वा जपेदष्टसहस्त्रकम् ।।१९।।
त्रिसन्ध्यां पौर्णमास्यान्तु पूजां कृत्वा सुशोभनाम् ।
प्रजपेत् सकलां रात्रिं समायाति निशाक्षये ।।२०।।
कामिता सा भवेद्धार्या त्वन्यथा म्रियते ध्रुवम् ।
ददाति कामितं द्रव्यं भोजद्रव्यं रसायनम् ।।२१।।

ॐ सः रम्भे आगच्छ आगच्छ स्वाहा यह बारह अक्षरों का रम्भा अप्सरा का मन्त्र है। साधक इस साधना का प्रतिपदा तिथि से प्रारम्भ करे। चन्दन के द्वारा मण्डल का निर्माण करके गुग्गुल का धूप प्रदान करे तथा आठ हजार रम्भामन्त्र का जप करे। प्रतिपदा तिथि से चतुर्दशी तिथि तक जप करे तथा पूर्णिमा को तीन संध्याओं में तीन बार पूजा करके सम्पूर्ण रात्रिपर्यन्त मन्त्रजप करे। प्रातः रम्भा अप्सरा साधक के समक्ष उपस्थित होती है तथा उसकी पत्नी बन जाती है। साधक को इच्छित द्रव्य एवं विविध रसपूर्ण भोज्य पदार्थ प्रदान करती है। यदि रम्भा ऐसा नहीं करती है तो उसकी मृत्यु हो जाती है।।१९-२१।।

७. अथ उर्वशी अप्सरा मन्त्रप्रयोगः

ॐ श्रीं उर्वशी आगच्छ आगच्छ स्वाहा।।

रात्रौ देवगृहं गत्वा चन्दनेन च मण्डलम् ।
कृत्वा धूपं ततो दत्त्वायुतं मासं जपेन्मनुम् ।।२२।।
मासान्ते महतीं पूजां कृत्वा रात्रौ जपञ्चरेत् ।
निशात्यये समायाति प्रदद्यात् कुसुमासनम् ।।२३।।
कृते च स्वागते प्रश्ने किमिच्छसि च भाषते ।
साधकः प्राह भार्या त्वं भव यच्छ रसायनम् ।।२४।।
पाति वर्षसहस्त्राणि अप्सराः स्वयमुर्वशी ।
परस्त्रीं वर्जयेत् सर्वामन्यथा म्रियते ध्रुवम् ।।२५।।

ॐ श्रीं उर्वशी आगच्छ आगच्छ स्वाहा यह उर्वशी अप्सरा का मन्त्र है। साधक रात्रि में देवालय में जाकर चन्दन के द्वारा मण्डल का निर्माण करे। धूप प्रदान करके उर्वशी मन्त्र का दश हजार जप करे। एक मास तक प्रतिदिन दश हजार जप करे। महीने के अन्त में रात्रि में विस्तृत पूजा एवं जप करे। रात्रि भर जप करने पर प्रातः काल उर्वशी अप्सरा साधक के समक्ष उपस्थित होती है। साधक उन्हें पुष्पासन प्रदान करे। उर्वशी साधक से कुशल पूछकर उससे वर मांगने को कहती है। साधक उनसे अपनी पत्नी होने तथा विविध रस एवं भोज्य द्रव्य एवं रसायन प्रदान करने का वचन ले ले। उर्वशी के सिद्ध होने पर साधक अन्य किसी स्त्री से शारीरिक सम्पर्क न रखे; अन्यथा वह मृत्यु को प्राप्त होता है।।२२-२५।।

८. अथ श्रीभूषणी अप्सरा मन्त्रप्रयोगः

ॐ वाः श्रीं वाः श्रीभूषणि आगच्छागच्छ स्वाहा।।

एकाकी शयने स्थित्वा शुची रात्रौ च कुङ्कुमैः ।
लिखित्वा भूषणीं भूर्जे चन्दनेन तु धूपयेत् ।।२६।।
जपेदष्टसहस्त्रन्तु मासं यावत् प्रयत्नतः ।
मासान्ते तु समभ्यर्च्य जपेदष्टसहस्त्रकम् ।।२७।।
रात्र्यर्द्धेऽन्तिकमायाति भार्या भवति कामिता ।
सिद्धिद्रव्यं हिरण्यञ्च तुष्टा यच्छति भूषणाम् ।।२८।।

ॐ वाः श्रीं वाः श्रीभूषणि आगच्छागच्छ स्वाहा यह पन्द्रह अक्षरों का मन्त्र श्रीभूषणी अप्सरा का है। रात्रि को शुद्ध एवं पवित्र होकर शय्या पर आसीन होकर श्रीभूषणी अप्सरा की प्रतिमूर्ति निर्मित कर चन्दन से धूपित करे तथा मन्त्र का आठ हजार जप करे। ऐसा एक महीने तक करे। महीने के अन्त में अप्सरा का पूजन कर आठ हजार जप करे। अप्सरा आधी रात्रि को आकर साधक की पत्नी बन जाती है तथा प्रसन्न होकर मनोवांछित वर एवं आभूषण प्रदान करती है।।२६-२८।।

अप्सराएँ

पुराणों के अनुसार अप्सराओं की उत्पत्ति समुद्रमंथन से हुई थी। कुछ विशेष अप्सरायें भी हैं, जिनकी उत्पत्ति समुद्रमंथन से न होकर किसी ऋषि या किसी देवता द्वारा किसी कार्यविशेष के लिए हुई। यहाँ पर कुछ अप्सराओं के नाम दिये जा रहे हैं। बाद में उनके विषय में लिखा जायेगा–

त्रिपुरमदनाक्षी, सुगन्धमोदिनी, उर्वशी, पुष्पदेहा, निर्झररूपा, शशिदेवी, श्वेतांगना, रूपोज्ज्वला, यौवनगर्विता, मृगाक्षी, रम्भा, दिव्यांगना, तिलोत्तमा, रंजिनी, सुनयना, मेनका, कनकावती, रत्नमाला, नाभिदर्शना, चन्द्रज्योत्स्ना, लीलावती, सौन्दर्योत्तमा, स्वर्णसिद्धा, मनोविनोदिनी, दीपांगना, अनंगमेखला, यौवनमंजरी, सुवर्णगौरी, हेमांगिनी, अद्रिका, अलम्बुषा, अरुणा, असिता, अम्बिका, अम्बुजाक्षी, अनुम्लोचा, अरुणप्रिया, अपराजिता, अभवा, इन्दुमती, इरा, उम्लांचा, उर्वरा, ऋतुपर्णा, ऋतुस्थली, कमला, कलावती, कटाक्षा, कर्णिका, काञ्ची, काम्या, काञ्चनमाला, कुरङ्गाक्षी, कृतस्थली, कुण्डला, कुंभयोनि, केशिनी, कुलहारिणी, कात्यायनी, कामवेगा, खेचरी, गन्धकेशिका, गीतज्ञा, गोपाली, गौरी, गुञ्जा, गन्धकाली, गम्भीरा, घृताची, चन्द्रप्रभा, चन्द्रलेखा, चन्द्रकान्ता, चारुनेत्रा, चारुहासिनी, चित्रा, चित्रसेना, चित्रलेखा, चित्रांगदा, चन्द्रकान्ति, चारुकेशी, चारुकन्या, चारुमुखी, जानपदी, ज्योति, जीवांगी, जया, जयन्ती, दण्डगौरी, देवी, देवरूपा, देवरति, देवमाला, देवप्रिया, दिव्य, दान्ता, दीर्घलोचना, धनदारति, धन्या, निम्लोचन्ती, पूर्वचित्ति, पुण्डरीका, प्रमथिनी, पुञ्जिकस्थली, प्रम्लोचा, पुष्पगन्धा, प्रमद्वरा, प्रज्ञा, प्रजागरा, पुष्पवल्लभा, प्राणवल्लभा, पुष्पधन्वा, प्रभा, पुष्पवती, पञ्चचूड़ा, प्रशमी, प्रियतमा, प्रभवा, पद्मवक्त्रा, पद्मिनी, पद्मावती, बुद्बुदा, बुद्धिदा, बुद्धा, बाणमाता, भवा, मिश्रकेशी, मनोरमा, मरीचि, महाश्वेता, महारंगवती, महासेना, मञ्जूषा, मोहिनी, मञ्जुघोषा, मीनाक्षी, मदोत्कटा, मनोहरा, मदालसा, महामाया, मुञ्जिकस्तनी, महाभर्गा, माया, मालिनी, मुञ्जकेशिनी, योगिनी, रक्षिता, रुचि, रति, रमणी, रतिप्रिया, रत्नप्रभा, लक्षणा, ललिता, लता, विश्वाची, विद्युत्पर्णा, वर्गा, विद्युन्माला, विप्रचित्ति, वपु, वरूथिनी, विशालनेत्रा, विद्युता, विलासिनी, विपुला, वर्चा, विभावरी, विद्योता, विरला, वरदा, विद्युत्प्रभा, विशालाक्षी, विजया, शुचिका, शारद्वती, शोभा, शुचिस्मिता, शिवदूती, शीलमण्डिता, शशिनी, सहा, सुकेशी, सुबाहु, सुरता, सुरजा, सुप्रिया, सहजन्या, सोमा, सुवपु, सुगन्धा, सुरसा, सौरभेयी, समीची, स्वर्णावती, स्वयंवरा, स्वयंप्रभा, सेनजिति, स्वर्णदेहा, सुवृत्ता, सुलोचना, सानुमती, सुदर्शना, सूजूर्णि, सुम्न, सुरसुन्दरी, सुभद्रा, सम्भवा, साराङ्गी, सारविक्रमा, सप्तशायका, सूर्यकान्ति, सुजाता, सुरुचि, सुरतमञ्जरी, हेमाङ्गिनी, हासिनी, हिरण्याक्षी, हिरण्यमयी, हरिणी, क्षेमा, त्रिपुरसुन्दरी, त्रिलोचनी, त्रिवेदिस्था, शिवप्रिया, चन्द्रोज्ज्वला, वसन्ततिलका,

शङ्खिनी, चित्रिणी, चित्ररेखा, मृगलोचना, चन्द्रावली, कर्पूरगन्धा, कलरवा, वरलोचना, हेमा, पद्मगन्धा, वरारोहा, गालिनी, सुरतोत्सवा, हरिणी, कमलिनी, रमा, राधा, हंसिनी, पद्महस्ता, वृन्दया, सुप्रेयसी, विमला, नित्यया, सिता, शुकसम्भवा, हरिवल्लभा, सुविशारदा, वेदजातिविशारदा, क्षीरोद्भवा, भद्ररूपा, भद्रदा, विद्युल्लता, चारुशीला, सती, हंससुगामिनी, वरपद्मरेखा, प्रेमदा, सुस्मिता, कुंकुमगन्धिनी, शोभना, शुभदा, शान्ता, धरा, सन्तोषिका, सुखदा, सुवर्णा, क्षेमदा, चारुदेहा, कुशला, मेदिनी, माल्या, महार्हा, माधवी, कामदा, कामविमोहिनी, कनका, चित्राङ्गिका, शशिमुखी, हंसी, परश्रोणी, चित्रदेहा, लीला, कला, प्रेमप्रदा, कर्पूराङ्गिका, वरसुधा, उज्ज्वला, सुरभि, विशदाक्षिका, शुभदन्तिका, माधुर्य्यका, वरोत्पला, रुचिररूपा, चारुदृक, नतिमती, सुरतोत्सुका, तारा, पद्मा, सुवर्चना, पूतना।

उर्वशी की उत्पत्ति-कथा

वामनपुराणे–

पुलस्त्य उवाच

हृद्भवो ब्रह्मणो योऽसौ धर्मो दिव्यवपुर्मुने ।
दाक्षायणी तस्य भार्या तस्यामजनयत्सुतान् ।।२९।।
हरिं कृष्णं च देवर्षे नारायणनरौ तथा ।
योगाभ्यासरतौ नित्यं हरिकृष्णौ बभूवतुः ।।३०।।
नरनारायणौ चैव जगतो हितकाम्यया ।
तप्येतां च तपः सौम्यौ पुराणावृषिसत्तमौ ।।३१।।
प्रालेयाद्रिं समागम्य तीर्थे बदरिकाश्रमे ।
गृणान्तौ तत्परं ब्रह्म गङ्गाया विपुले तटे ।।३२।।
नरनारायणाभ्यां च जगदेतच्चराचरम् ।
तापितं तपसा ब्रह्मञ्छक्रः क्षोभं तदा ययौ ।।३३।।
संक्षुब्धस्तपसा ताभ्यां क्षोभणाय शतक्रतुः ।
रम्भाद्याप्सरसः श्रेष्ठाः प्रेषयत्स महाश्रमम् ।।३४।।
कन्दर्पश्च सुदुर्धर्षश्चूताङ्कुरमहायुधः ।
समं सहचरेणैव वसन्तेनाश्रमं गतः ।।३५।।
ततो माधवकन्दर्पौ ताश्चैवाप्सरसो वराः ।
बदर्याश्रममागम्य विचिक्रीडुर्यथेच्छया ।।३६।।

उर्वशी की उत्पत्ति कथा वामन पुराण में इस प्रकार वर्णित है–

पुलस्त्य जी ने कहा–हे मुने! ब्रह्मदेव के हृदय से जो दिव्य शरीरधारी धर्म प्रकट हुआ था, उसने दक्ष प्रजापति की पुत्री 'मूर्ति' से विवाह कर चार पुत्रों–हरि, कृष्ण, नर तथा नारायण को उत्पन्न किया। हे देवर्षे! इनमें हरि तथा कृष्ण–यह दो तो नित्य योगाभ्यास में लग गये तथा पुरातन ऋषि नर एवं नारायण संसार की हितकामना के लिए हिमालय पर्वत पर स्थित बदरिकाश्रम तीर्थ में गंगा के पवित्र तट पर तप करने लगे। नर–नारायण की घोर तपस्या से सम्पूर्ण स्थावर–जंगम जगत तपने लगा। इससे इन्द्र क्षुब्ध हो गये। दोनों ऋषियों की तपस्या से अत्यन्त व्यग्र इन्द्र ने उन्हें मोहित करने के लिए रम्भा आदि श्रेष्ठ अप्सराओं को मुनियों के आश्रम में भेजा। कामदेव के अस्त्रों में अशोक, आम्रमञ्जरियाँ विशेष प्रभावक हैं। कामदेव अपने आयुधों, अप्सराओं तथा वसन्त को साथ लेकर बदरिकाश्रम में गया। वसन्त, कामदेव तथा श्रेष्ठ अप्सराएँ बदरिकाश्रम में जाकर निर्विघ्न क्रीड़ा करने लगे।।२९–३६।।

ततो वसन्ते संप्राप्ते किंशुका ज्वलनप्रभाः ।
निष्पत्राः सततं रेणुः शोभयन्तो धरातलम् ।।३७।।
शिशिरं नाम मातङ्गं विदार्य नखरैरिव ।
वसन्तकेसरी प्रातः पलाशकुसुमैर्मुने ।।३८।।
मया तुषारौघकरी निर्जितः स्वेन तेजसा ।
तमेव हसतेत्युच्चैः वसन्तः कुन्दकुड्मलैः ।।३९।।
वनानि कर्णिकाराणां पुष्पितानि विरेजिरे ।
यथा नरेन्द्रपुत्राणि कनकाभरणानि हि ।।४०।।
तेषामनु तथा नीपाः किङ्करा इव रेजिरे ।
स्वामिसंलब्धसंमाना भृत्या राजसुतानिव ।।४१।।
रक्ताशोकवना भान्ति पुष्पिताः सहसोज्ज्वलाः ।
भृत्या वसन्तनृपतेः संग्रामे सृक्प्लुता इव ।।४२।।
मृगवृन्दाः पिञ्जरिता राजन्ते गहने वने ।
पुलकाभिर्वृता यद्वत् सज्जनाः सुहृदागमे ।।४३।।
मञ्जरीभिर्विराजन्ते नदीकूलेषु वेतसाः ।
वक्तुकामा इवाङ्गुल्याकोऽस्माकं सदृशो नगः ।।४४।।

तब वसन्त ऋतु के आ जाने पर अग्निशिखा के समान कान्ति वाले पलाश वृक्ष पत्तों को छोड़कर रात्रि-दिन पृथ्वी की शोभा बढ़ाते हुए सुशोभित होने लगे। हे मुने! वसन्तरूपी सिंह मानों पलाशपुष्परूपी नखों से शिशिररूपी गजराज को फाड़कर वहाँ अपना साम्राज्य स्थापित कर चुका था। वसन्त सोचने लगा कि मैंने अपने तेज के द्वारा शीतसमूहरूपी गज को विजित कर लिया है और वह कुन्द की कलियों के माध्यम से उसका उपहास भी करने लगा है। स्वर्ण के आभूषणों से शोभित राजकुमारों के समान पुष्पित कचनार एवं अमलतास से वन शोभायमान होने लगे। जिस प्रकार राजपुत्रों के पीछे खड़े होकर सेवक उनका सम्मान करते हैं उसी प्रकार उन वनों के पीछे कदम्ब के वृक्ष शोभायमान हो रहे थे। इसी प्रकार रक्त अशोक के वन भी सहसा फलने-फूलने एवं सुशोभित होने लगे। ऐसा प्रतीत होता था मानो ऋतुराज वसन्त के अनुयायी युद्ध में रक्त से लथपथ हो रहे हों। सघन वन में पीले रंग के हिरण (मृग) इस प्रकार शोभित हो रहे थे जिस प्रकार अपने सुहृद के आगमन से सज्जन पुरुष प्रसन्न होकर सुशोभित होते हैं। नदी के किनारों पर मञ्जरियों के समूह इस प्रकार शोभायमान हो रहे थे मानों वे अँगुलियों के द्वारा कहना चाह रहे हों कि हमारे समान अन्य कौन वृक्ष हैं।।३७-४४।।

रक्ताशोककरा तन्वी देवर्षे किंशुकाङ्घ्रिका ।
नीलाशोककचा श्यामा विकासिकमलानना ।।४५।।
नीलेन्दीवरनेत्रा च ब्रह्मन् बिल्वफलस्तनी ।
प्रफुल्लकुन्ददशना मञ्जरीकरशोभिता ।।४६।।
बन्धुजीवाधरा शुभ्रा सिन्दुवारनखाद्भुता ।
पुंस्कोकिलस्वना दिव्या अङ्कोलवसना शुभा ।।४७।।
बर्हिवृन्दकलापा च सारसस्वरनूपुरा ।
प्राग्वंशरसना ब्रह्मन् मत्तहंसगतिस्तथा ।।४८।।
पुत्रजीवांशुका भृङ्गरोमराजिविराजिता ।
वसन्तलक्ष्मीः सम्प्राप्ता ब्रह्मन् बदरिकाश्रमे ।।४९।।
ततो नारायणो दृष्ट्वा आश्रमस्यानवद्यताम् ।
समीक्ष्य च दिशः सर्वास्ततोऽनङ्गमपश्यत ।।५०।।

हे देवर्षे! जो दिव्य तन्वी एवं यौवनवान वसन्तलक्ष्मी बदरिकाश्रम में प्रकट हुई थी उसके रक्ताशोक हाथ, पलाश चरण, नीलाशोक केशपाश, विकसित कमल ही मुख

तथा नीलकमल ही नेत्र, बिल्वफल स्तन, कुन्दपुष्प दाँत, मञ्जरी हाथों की शोभा, बन्धुजीवा (दुपहरिया) अधर, सिन्दुवार नख, नरकोयल की काकली स्वर, अंकोल वस्त्र, मयूरसमूह आभूषण, सारस नूपुरस्वरूप एवं आश्रम के शिखर करधनी के समान, मतवाले हंस थाल, पुत्रजीव ऊपरी वस्त्र तथा भ्रमर रोमावलिसदृश रूप में स्थित थे। नारायण मुनि ने आश्रम की अद्‌भुत छटा देखकर समस्त दिशाओं की ओर देखा तथा फिर कामदेव को भी देखा।।४५-५०।।

ततोऽनङ्गं विभुर्दृष्ट्वा ब्रह्मन् नारायणो मुनिः ।
प्रहस्यैवं वचः प्राह कन्दर्प इह आस्यताम् ।।५१।।
तदक्षुब्धत्वमीक्ष्यास्य कामो विस्मयमागतः ।
वसन्तोऽपि महाचिन्तां जगामाशु महामुने ।।५२।।
ततश्चाप्सरसो दृष्ट्वा स्वागतेनाभिपूज्य च ।
वसन्तमाह भगवानेह्येहि स्थीयतामिति ।।५३।।
ततो विहस्य भगवान् मञ्जरीं कुसुमावृताम् ।
आदाय प्राक्सुवर्णाङ्गीमूर्वोर्बालां विनिर्ममे ।।५४।।
ऊरूद्भवां स कन्दर्पो दृष्ट्वा सर्वाङ्गसुन्दरीम् ।
अमन्यत तदाऽनङ्गः किमियं सा प्रिया रतिः ।।५५।।

हे नारदजी! नारायण ऋषि कामदेव को देखकर हँसते हुए बोले—काम! तुम यहाँ पर बैठो। काम उनकी विकारहीनता देखकर चकित हो गया। वसन्त भी उस समय अत्यधिक चिन्तित हुआ। तदुपरान्त अप्सराओं की ओर देखकर स्वागत के द्वारा उनकी पूजा कर भगवान् नारायण ने वसन्त से कहा—हे वसन्त! आओ बैठो। इसके उपरान्त भगवान नारायण ऋषि ने हंसकर पुष्प से पूर्ण एक मञ्जरी लेकर अपने ऊरू पर एक सुवर्ण के अङ्गवाली तरुणी का चित्र बनाकर उसमें प्राणों का संचार कर दिया। नारायण मुनि की जाँघ से उत्पन्न उस सर्वाङ्ग सुन्दरी नवयौवना को देखकर कामदेव मन में विचार करने लगा कि क्या यह सुन्दरी मेरी पत्नी रति है।।५१-५५।।

तदेव वदनं चारु स्वाक्षिभ्रुकुटिलालकम् ।
सुनासावंशाधरोष्ठमालोकनपरायणम् ।।५६।।
तावेवाहार्यविरलौ पीवरौ मग्नचूचुकौ ।
राजेतेऽस्याः कुचौ पीनौ सज्जनाविव संहतौ ।।५७।।

तदेव तनु चार्वङ्ग्या वलित्रयविभूषितम् ।
उदरं राजते श्लक्ष्णं रोमावलिविभूषितम् ।।५८।।
रोमावली च जघनाद् यान्तो स्तनतटं त्वियम् ।
राजते भृङ्गमालेव पुलिनात् कमलाकरम् ।।५९।।
जघनं त्वतिविस्तीर्णं भात्यस्या रशनावृतम् ।
क्षीरोदमथने नद्धं भुजङ्गेनेव मन्दरम् ।।६०।।
कदलीस्तम्भसदृशैरूर्ध्वमूलैरथोरुभिः ।
विभाति सा सुचार्वङ्गी पद्मकिञ्जल्कसन्निभा ।।६१।।
जानुनी गूढगुल्फे च शुभे जङ्घे त्वरोमशे ।
विभातोऽस्यास्तथा पादावलक्तकसमत्विषौ ।।६२।।
इति सञ्चिन्तयन् कामस्तामनिन्दितलोचनाम् ।
कामातुरोऽसौ सञ्जातः किमुतान्यो जनो मुने ।।६३।।

इसकी रति के समान ही सुन्दर नेत्र, भौंह एवं कुटिल अलकें हैं। रति के समान ही इसका मुखमण्डल, वैसी ही सुन्दर नासिका, वैसा ही वंश तथा वैसे ही सुन्दर इसके अधरोष्ठ हैं। इस सुन्दरी को देखने से तृप्ति नहीं होती है। रति के समान ही सुन्दर एवं मनोहर तथा अत्यन्त मग्न चूचुकवाले मांसल स्तन दो सज्जन पुरुषों के समान परस्पर मिले हुए हैं। इस सुन्दरी का रति के समान ही छरहरा, त्रिवलीयुक्त, कोमल तथा रोमावलि वाला उदर भी सुशोभित हो रहा है। उदर पर नीचे से ऊपर तक स्तनतट तक जाती हुई इसकी रोमराजि सरोवर के तट से कमलसमूह की ओर जाती हुई भ्रमरमण्डली के समान सुशोभित हो रही है। इसका करधनी से विभूषित मांसल जघन प्रदेश क्षीरसागर के मन्थन के समय में वासुकि नाग से वेष्टित मन्दर पर्वत की भाँति सुशोभित हो रहा है। कदलीस्तम्भ के समान गोल एवं चिकने ऊर्ध्वमूल ऊरुओं वाली कमल के सर के समान गोरे रंग की यह सुन्दरी है। इसके दोनों घुटने, गूढ़गुल्फ, रोमरहित सुन्दर जंघा तथा अलक्तक के समान कान्तिवाले दोनों पैर अत्यन्त सुशोभित हो रहे हैं। हे मुनिवर! इस प्रकार उस सुन्दरी के विषय में चिन्तन करते हुए जब कामदेव स्वयं कामातुर हो गया तो फिर अन्य साधारण व्यक्तियों की तो बात ही क्या थी।।५६-६३।।

माधवोऽप्युर्वशीं दृष्ट्वा सञ्चिन्तयत नारद ।
किंस्वित् कामनरेन्द्रस्य राजधानी स्वयं स्थिता ।।६४।।
आयाता शशिनो नूनमियं कान्तिर्निशाक्षये ।
रविरश्मिप्रतापार्तिभीता शरणमागता ।।६५।।

इत्थं सञ्चिन्तयन्नेव अवष्टभ्याप्सरोगणम् ।
तस्थौ मुनिरिव ध्यानमास्थितः स तु माधवः ।।६६।।
ततः स विस्मितान् सर्वान् कन्दर्पादीन् महामुने ।
दृष्ट्वा प्रोवाच वचनं स्मितं कृत्वा शुभव्रतः ।।६७।।
इयं ममोरूसम्भूता कामाप्सरस माधव ।
नीयतां सुरलोकाय दीयतां वासवाय च ।।६८।।
इत्युक्ताः कम्पमानास्ते जग्मुर्गृह्योर्वशीं दिवम् ।
सहस्राक्षाय तां प्रादाद् रूपयौवनशालिनीम् ।।६९।।
आचक्षुश्चरितं ताभ्यां धर्मजाभ्यां महामुने! ।
देवराजाय कामाद्यास्ततोऽभूद् विस्मयः परः ।।७०।।
एतादृशं हि चरितं ख्यातिमग्र्यां जगाम ह ।
पातालेषु तथा मर्त्ये दिक्ष्वष्टासु जगाम च ।।७१।।

इति सिद्धाश्रमस्थपरमहंसश्रीनिखिलेश्वरानन्दतच्छिष्यअजय कुमार उत्तम-विरचितायां दिव्याङ्गनातन्त्रे अष्ट अप्सरासाधन कथनंनाम प्रथमस्तरङ्गः।।१।।

हे नारद जी! वसन्त भी उर्वशी अप्सरा को देखकर सोचने लगा कि नृप कामदेव की राजधानी ही स्वयं आकर उपस्थित हो गयी है अथवा रात्रि का अन्त होने पर सूर्य-रश्मियों के ताप के भय से चन्द्रिका ही शरण में आ गयी है। इस प्रकार चिन्तन करते हुए अप्सराओं को रोककर वसन्त मुनि के समान ध्यानमग्न हो गया। हे महामुने! उसके उपरान्त शुभव्रत नारायण मुनि ने कामदेवादि सभी को विस्मित देखकर हँसते हुए कहा– हे कामदेव! हे वसन्त! हे अप्सराओं यह अप्सरा मेरी जाँघ से उत्पन्न हुई है। इसे तुम सभी लोग देवलोक में ले जाओ और इन्द्र को प्रदान कर दो। उनके ऐसा कहने पर वे सभी भय से काँपते हुए उर्वशी अप्सरा को लेकर स्वर्ग में चले गए तथा रूप एवं यौवनशालिनी अप्सरा उर्वशी को इन्द्र को प्रदान कर दिया। हे महामुने! वसन्त, कामदेव तथा अप्सराओं ने नर–नारायण के चरित्र को कहा; जिससे इन्द्र को अत्यधिक विस्मय हुआ। मुनिद्वय नर–नारायण के इस चरित्र की ख्याति सर्वत्र बढ़ती गयी तथा पृथ्वी, पातालादि लोकों एवं सभी दिशाओं में फैल गयी।।६४–७१।।

इस प्रकार सिद्धाश्रमस्थित परमहंस स्वामीश्रीनिखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य
अजय कुमार उत्तम द्वारा रचित दिव्यांगनातन्त्र के प्रथम तरंग की ''अनुपमा''
हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई।।१।।

अथ द्वितीयः तरङ्गः

अथ यक्षिणीतन्त्रम्

।।श्रीदेव्युवाच।।

श्रुतं च साधनं पुण्यं यक्षिणीनां सुखप्रदम् ।
कस्मिन्काले प्रकर्त्तव्यं विधिना केन वा प्रभो ।।१।।
अथाधिकारिणः के वा समासेन वद प्रभो ।

।।ईश्वर उवाच।।

वसंते साधयेद्धीमान् हविष्याशी जितेन्द्रियः ।।२।।
सदा ध्यानपरो भूत्वा तद्दर्शनमहोत्सुकः ।
उज्जटे प्रान्तरे वापि कामरूपे विशेषतः ।।३।।
स्थानेष्वेकतमं प्राप्य साधयेत्सुसमाहितः ।
अनेन विधिना साक्षाद्भविष्यति न संशयः ।।४।।
देव्याश्च सेवकाः सर्वे परं चात्राधिकारिणः ।
तारकं ब्रह्मणो भृत्यं विनाप्यत्राधिकारिणः ।।५।।
अग्निहोत्री विशेषेण साधयेद्यक्षिणीः शुभाः ।
सर्वासां यक्षिणीनां तु ध्यानं कुर्यात्समाहितः ।
भगिनीमातृपुत्रीस्त्रीरूपतुल्या यथेप्सिताः ।।६।।

श्रीदेवी पार्वती ने भगवान् शिव से पूछा–हे प्रभो ! मैंने आपसे पुण्यप्रद यक्षिणीसाधन सुना है। यह सुखप्रदायक साधन किस समय तथा किस विधि से कहना चाहिए? कौन से मनुष्य इस विद्या के अधिकारी हैं? यह सब आप मेरे प्रति कहिए।

भगवान् शिव ने कहा–हे प्रिये! बुद्धिमान साधक हविष्याशी तथा जितेन्द्रिय होकर वसन्तकाल में यक्षिणीसाधन करे। साधक यक्षिणी का ध्यान करके उसके दर्शन के लिए उत्सुक रहे। यह यक्षिणीसाधन उजाड़, निर्जन वन तथा एकान्त स्थान में करे। यह यक्षिणीसाधन कामरूप (कामाख्या स्थल) में शीघ्र फलदायक होता है। इन सभी स्थानों में से किसी एक स्थान पर एकाग्र चित्त से यह साधना करे। इस विधि से साधना करने पर निश्चित रूप से यक्षिणी प्रत्यक्ष होती है तथा सिद्धि प्राप्त होती है।

जो देवी के सेवक हैं वही इस यक्षिणी विद्या के अधिकारी हैं। ब्रह्म की उपासना में तत्पर रहने वाले व्यक्ति इस विद्या के अधिकारी नहीं हैं। अग्निहोत्री अर्थात् यज्ञ- होमादि को करने वाला व्यक्ति शुभ यक्षिणियों की साधना करे। एकाग्र चित्त से सभी यक्षिणियों का ध्यान बहन, माता, पुत्री तथा पत्नी–इन रूपों में जिसकी इच्छा हो उसको करे।।१-६।।

तत्रादौ षट्त्रिंशद्यक्षिणीनामानि किंकिणीतन्त्रे–

अथातः संप्रवक्ष्यामि यक्षिणीनां सुसाधनम् ।
यस्मिन्सिद्धे मनुष्याणां सर्वे सिद्ध्यन्ति हृच्छयाः ।।७।।
षट्त्रिंशद्यक्षिणीनां तु नामानि प्रवदाम्यथ ।
विचित्रा विभ्रमा हंसी भिक्षिणी जनरञ्जिका ।।८।।
विशाला मदना घण्टा कालकर्णी महाभया ।
माहेन्द्री शंखिनी चान्द्री श्मशानी वटयक्षिणी ।।९।।
मेखला विकला लक्ष्मीः कामिनी शतपत्रिका ।
सुलोचना सुशोभाख्या कपाली च विलासिनी ।।१०।।
नटी कामेश्वरी चैव स्वर्णरेखा सुरसुन्दरी ।
मनोहरा प्रमोदा तु रागिणी नखकेशिका ।।११।।
नेमिनी पद्मिनी स्वर्णावती देवी रतिप्रिया ।
इमाः षट्त्रिंशदाख्याता यक्षिण्यश्च सुसिद्धिदः ।।१२।।

सर्वप्रथम किंकिणी तंत्र में वर्णित छत्तीस यक्षिणियों के नाम कहे जाते हैं–अब मैं श्रेष्ठ यक्षिणी साधन कहता हूँ, जिसकी सिद्धि प्राप्त कर मनुष्य अपनी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण कर सकता है। मैं अब छत्तीस यक्षिणियों के नाम कहता हूँ। वे हैं–विचित्रा, विभ्रमा, हंसी, भिक्षिणी, जनरंजिका, विशाला, मदना, घण्टा, कालकर्णी, महाभया, माहेन्द्री, शंखिनी, चान्द्री, श्मशानी, वटयक्षिणी, मेखला, विकला, लक्ष्मी, कामिनी, शतपत्रिका, सुलोचना, सुशोभाढ्या, कपाली, विलासिनी, नटी, कामेश्वरी, स्वर्णरेखा, सुरसुन्दरी, मनोहरा, प्रमोदा, रागिणी, नखकेशिका, नेमिनी, पद्मिनी, स्वर्णावती तथा रतिप्रिया। यह छत्तीस सिद्धिप्रदा यक्षिणियाँ हैं।।७-१२।।

षोडशनित्यातन्त्रे षट्त्रिंशद् यक्षिणीनामानि–

विचित्रा विभ्रमा हंसी भीषणी जनरञ्जिका ।
विशाला मदना रुद्धा कालकण्ठी महाभया ।।१३।।

माहेन्द्री शशिनी चान्द्री मङ्गला वटवासिनी ।
मेखला सकला लक्ष्मीर्मालिनी विश्वनायिका ।।१४।।
सुलोचना सशोभा च कामदा सविलासिनी ।
कामेश्वरी नन्दिनी च स्वर्णरिखा मनोरमा ।।१५।।
प्रमोदा रागिणी सिद्धा पद्मिनी सरतिप्रिया ।
कल्याणदा कलादक्षा ततश्च सुरसुन्दरी ।।१६।।

षोडशनित्यातन्त्र ग्रन्थ में ३६ यक्षिणियों के नाम इस प्रकार हैं–विचित्रा, विभ्रम हंसी, भीषणी, जनरञ्जिका, विशाला, मदना, रुद्धा, कालकण्ठो, महाभया, माहेन्द्री शशिनी, चान्द्री, मंगला, वटवासिनी, मेखला, सकला, लक्ष्मी, मालिनी, विश्वनायिक सुलोचना, सशोभा, कामदा, सविलासिनी, कामेश्वरी, नन्दिनी, स्वर्णरिखा, मनोरमा, प्रमोद रागिणी, सिद्धा, पद्मिनी, सरतिप्रिया, कल्याणदा, कलादक्षा तथा सुरसुन्दरी।

स्पष्ट है कि उपरोक्त दोनों क्रम कुछ भिन्नता के साथ वर्णित हैं। कुछ यक्षिणिय के नामों को छोड़कर सभी के नाम समान हैं। उड्डामरेश्वर तन्त्र में भी छत्तीस यक्षिणियों व नाम इसी प्रकार दिए हैं–

विचित्रा विभ्रमा हंसी भीषणी जनरञ्जिनी ।
विशाला मदना घण्टा कालकर्णी महाभया ।।
माहेन्द्री शङ्खिनी चान्द्री श्मशाना वटयक्षिणी ।
मेखला विकला लक्ष्मीर्मालिनी शतपत्रिका ।।
सुलोचना सुशोभाढ्या कपालिनी विशालिनी ।
नटी कामेश्वरी स्वर्णरिखा च सुरसुन्दरी ।।
मनोहरा प्रमोदानुरागिणी नखकेशिका ।
भामिनी पद्मिनी चैव स्वर्णावती रतिप्रिया ।।

१. अथ विचित्रा यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ विचित्रे चित्ररूपिणी सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा (शिवार्चनचंद्रिका)
ॐ विचित्रे चित्ररूपे सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)
ॐ विचित्रे चित्ररूपिणि मे सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)
ॐ विचित्रे विचित्ररूपे सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा (कामरत्नम्)

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं वटवृक्षतले शुचिः ।
बन्धूककुसुमैश्चैव मध्वाज्यक्षीरमिश्रितैः ।।१७।।
दशांशं योनिकुण्डे तु हुत्वा देवी प्रसीदति ।
विचित्रा साधकस्याथ प्रयच्छति समाहितम् ।।१८।।

शुद्ध एवं पवित्र होकर वटवृक्ष के नीचे एक लाख मंत्र का जप करे। इसके पश्चात् बन्धूक पुष्प, मधु, घी तथा दुग्ध मिलाकर दशांश योनिकुण्ड में हवन करने पर विचित्रा यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को इच्छित वस्तु प्रदान करती है।।१७-१८।।

२. अथ विभ्रमा यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं वाँ विभ्रमरूपे एहि एहि भगवति स्वाहा। (कामरत्नम्)

ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा।। (कामरत्नम्)

ॐ ह्रीं विभ्रमे विभ्रमाङ्गरूपे विभ्रमं कुरु रहिं रहिं भगवति स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरु कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा।। (शिवार्चनचन्द्रिका)

लक्षद्वयं जपेन्मन्त्रं श्मशाने निभृते निशि ।
घृताक्तैर्गुग्गुलैर्होमं दशांशेन कृते सति ।।१९।।
विभ्रमा तोषमायाति पञ्चाशन्मानुषैः समम् ।
ददाति भोजनं द्रव्यं प्रत्यहं शङ्करोऽब्रवीत् ।।२०।।

विभ्रमा यक्षिणी के मन्त्र ऊपर मूल में लिखे हैं। साधक श्मशान में जाकर एकाग्र चित्त से उपरिलिखित मन्त्र में से किसी एक मन्त्र का दो लाख जप करे। जप का दशांश घी तथा गुग्गुल से हवन करने पर विभ्रमा यक्षिणी प्रसन्न होकर पचास मनुष्यों के पालन हेतु प्रतिदिन भोजन एवं द्रव्य प्रदान करती है—ऐसा भगवान् शिव का कथन है।।१९-२०।।

३. अथ हंसी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

हंसी हंस हां नें ह्रीं स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ हंसि हंसिजने ह्रीं क्लीं स्वाहा।। (कामरत्नम्)

ॐ नमो हंसिनि हंसगते माँ स्वाहा।। (कामरत्नम्)

ॐ द्रीं नमो हंसि हंसवाहिनि क्लीं क्लीं स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

प्रवेशे नग्नगः स्थास्नुर्लक्षसंख्यं जपेच्छुचिः ।
पद्मपत्रघृतोपेतमन्ते होमं दशांशतः ।।२१।।
प्रयच्छत्यञ्जनं हंसी येन पश्यति भूनिधिम् ।
सुखेन तं च गृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते ।।२२।।

शुद्ध एवं पवित्र होकर साधनास्थल में नग्न होकर मूल मंत्र का एक लाख जप करे। जप का दशांश कमल पुष्प की पंखुड़ियों तथा घृत से हवन करे। इससे हंसी यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को अंजन प्रदान करती है, जिससे पृथ्वी में गड़ा हुआ धन भी दिखाई देता है। साधक उस धन को सुखपूर्वक ग्रहण करता है तथा विघ्नों से पीड़ित नहीं होता है।।२१-२२।।

४. अथ भीषणी (भिक्षिणी) मंत्रसाधनम्

ॐ ऐं महानादे भिक्षिणि हाँ ह्रीं स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ ऐं द्रीं महामोदे भीषणि द्राँ द्राँ स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ऐं महामदे भीषणे हाँ हूँ स्वाहा।। (शिवार्चनचन्द्रिका)

त्रिपथस्थो जपेन्मन्त्रं लक्षसङ्ख्यं दशांशतः ।
घृताक्तगुग्गुलैर्होमे भीषणी चिन्तितप्रदा ।।२३।।

जहाँ पर तीन मार्ग मिलते हों वहाँ पर भीषणी (भिक्षिणी) यक्षिणी का मन्त्र एकाग्र चित्त से एक लाख की संख्या में जपे। मन्त्र मूल में लिखे हैं। जप का दशांश घी एवं गुग्गुल से होम करने पर साधक का मनोवाञ्छित कार्य करने वाली भीषणी (भिक्षिणी) यक्षिणी सिद्ध हो जाती है।।२३।।

५. अथ जनरञ्जिनी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ क्लें जनरञ्जिनि स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं क्लीं जनरञ्जिनि स्वाहा। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

कदम्बाधो जपेन्मन्त्रं निशि लक्षद्वयं ततः ।
घृताक्तगुग्गुलैर्होमे देवी सौभाग्यदा भवेत् ।।२४।।

कदम्ब वृक्ष के नीचे बैठकर एकाग्र चित्त से मूलमन्त्र का दो लाख जप करे तथा घी एवं गुग्गुल से दशांश हवन करे। इससे यक्षिणी प्रसन्न होकर सिद्ध होती है तथा साधक को सौभाग्य प्रदान करती है।।२४।।

६. अथ विशाला यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ऐँ विशाले ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वाहा।। (मन्त्रमहोदधि)

ॐ ऐँ विशाले त्राँ त्रीँ क्लीँ स्वाहा।। (कामरत्नम् तथा दत्तात्रेयतन्त्रम्)

ॐ ऐँ विशाले क्रीँ ह्रीँ व्रीँ क्लीँ क्रीँ स्वाहा।। (कामरत्नम्)

ॐ ऐँ ह्रीँ विशाले स्त्राँ स्त्रीँ एह्येहि स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ ऐँ विशाले ह्राँ ह्रीँ क्लीँ स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ ह्रीँ विशाले द्राँ द्रूँ क्लीँ एह्येहि स्वाहा।। (शिवार्चनचन्द्रिका)

चिञ्चावृक्षतले मन्त्रं लक्षमावर्त्तयेच्छुचिः ।
शतपत्रोद्भवैः पुष्पैः सघृतैर्होममाचरेत् ।।२५।।
ततः सिद्धा भवेद् देवि विशालाकाशगामिनी ।
ददाति मन्त्रिणे तुष्टा रसं दिव्यरसायनम् ।।२६।।

साधक विशाला यक्षिणी के ऊपर लिखे गए किसी एक मन्त्र का इमली के वृक्ष के नीचे बैठकर पवित्रतापूर्वक एकाग्रचित्त से एक लाख जप करे तथा जप का दशांश कमलपुष्प एवं घी को मिलाकर हवन करे। ऐसा करने पर आकाश में विचरण करनेवाली विशाला यक्षिणी सिद्ध हो जाती है तथा साधक को दिव्य रसायन प्रदान करती है।।२५-२६।।

७. अथ मदना यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ मदने मदने देवि मामालिंगय संगं देहि देहि श्रीः स्वाहा।।
(किंकिणीतंत्रम्)

ॐ ह्रीँ मदने मदनविडम्बिनि आलये सङ्गमं देहि देहि श्रीं स्वाहा।।
(उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ ऐं मदने मदनविद्रावणे अनङ्गसङ्गमं देहि देहि क्रीँ क्रीँ स्वाहा।।
(कामरत्नम्)

ॐ ऐं मदने मदनविद्रावणे अनङ्गसङ्गमं देहि देहि क्रीँ स्वाहा।।
(दत्तात्रेयतन्त्रम्)

लक्षसङ्ख्यं जपेन्मन्त्रं राजद्वारे स्थितः शुचिः ।
सक्षीरमालतीपुष्पैः कृते होमे दशांशतः ।।२७।।
मदना यक्षिणी तुष्टा गुटिकां सम्प्रयच्छति ।
यया आस्यस्थयाऽदृश्यः शुचिः स्थायी भवेन्नरः ।।२८।।

शुद्ध एवं पवित्र होकर राजद्वार पर स्थित होकर मूललिखित किसी एक मन्त्र का एकाग्र चित्त से एक लाख की संख्या में जप करे। जप का दशांश दूध तथा चमेली के पुष्पों से हवन करे। इससे मदना यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को गुटिका प्रदान करती है; जिसे पवित्रतापूर्वक मुख में रखकर साधक अदृश्य हो जाता है।।२७-२८।।

८. अथ घण्टा यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ऐँ द्रीँ पुरीँ क्षोभय प्रजाः क्षोभय भगवति गम्भीरस्वने स्वप्ने स्वाहा।।

(उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ ऐँ पुरं क्षोभय क्षोभय भगवति गंभीरस्वरे क्लें स्वाहा।।

(किंकिणीतंत्रम्)

सुघण्टां वादयन्मन्त्री जपेन्मन्त्रायुतद्वयम् ।
तत्र क्षोभयते लोकान् दर्शनादेव साधकः ।।२९।।

साधक सुन्दर घण्टे को बजाता हुआ एकान्त स्थान में मूल मंत्र का बीस हजार जप करे। ऐसा करने पर साधक संपूर्ण संसार को दर्शन मात्र से क्षुब्ध कर सकता है।।२९।।

९. अथ कालकर्णी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ल्वैं कालकर्णिके टः टः स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ हुँ कालकर्णि ठः ठः स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

लक्षसङ्ख्यं मनुं जप्त्वा पलाशतरुजेन्धनैः ।
मधुनाक्तैः कृते होमे कालकर्णी प्रसीदति ।।३०।।
सौख्यं ददाति तुष्टा वै गतिस्तम्भकरी भवेत् ।
सततं संस्मरेन्मन्त्री विविधाश्चर्यकारिणीम् ।।३१।।

कालकर्णी यक्षिणी के मूल मन्त्र का एक लाख जप करके पलाश वृक्ष की समिधाओं को मधु में मिश्रित करके दशांश हवन करने पर कालकर्णी यक्षिणी प्रसन्न होती है। प्रसन्न होकर साधक को सौख्य प्रदान करती है तथा शत्रु की गति स्तम्भित करती है। साधक विविध आश्चर्य करने वाली यक्षिणी का निरन्तर स्मरण करे।।३०-३१।।

१०. अथ महाभया यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ द्रीं महाभये प्रैं स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं महाभये हुँ फट् स्वाहा।। (प्राकृत ग्रन्थ)

ॐ ह्रीं त्राँ महाभये क्लीं स्वाहा।। (कामरत्नम्)

ॐ क्रौं महाभये क्लीं स्वाहा।। (कामरत्नम्)

नरास्थिनिर्मितां मालां गले पाणौ च कर्णयोः ।
धारयेज्जपमालां च तादृशीं तु श्मशानतः ।।३२।।
लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं साधको निर्भयश्शुचिः ।
ततो महाभया यक्षी प्रयच्छति रसायनम् ।।३३।।
तस्य भक्षणमात्रेण सर्वरत्नानि चालयेत् ।
वलीपलितनिर्मुक्तश्चिरञ्जीवी भवेन्नरः ।।३४।।

मनुष्य की हड्डियों से बनी माला को गला, हाथ तथा कान में धारण कर पवित्र एवं निर्भय हृदय से श्मशान में एकाकी वास करे। मनुष्य की हड्डियों की माला को हाथ में धारण कर एक लाख मूल मन्त्र का जप करे। इससे महाभया यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को रसायन प्रदान करती है। उस रसायन के भक्षणमात्र से साधक सभी रत्नों को अपने स्थान से चलायमान करने में समर्थ हो जाता है। साधक वली-पलित से मुक्त होकर चिरंजीवी हो जाता है।।३२-३४।।

११. अथ माहेन्द्री यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ऐं क्लीं ऐन्द्रि माहेन्द्रि कुलु कुलु चुलु चुलु हंसः स्वाहा।।
(प्राकृत ग्रन्थ)

ॐ माहेन्द्रि कुलु कुलु हंसः स्वाहा।। (किंकिणीतंत्रम्)

ॐ ह्रीं माहेन्द्रि मन्त्रसिद्धिं कुरु कुरु कुलु कुलु हंसः सोऽहं स्वाहा।।
(उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

शक्रचापोदये लक्षं निर्गुण्डीतलमध्यगः ।
जपेन्मन्त्रं ततः सिद्धा भवेत् पातालसिद्धिदा ।।३५।।

इन्द्र धनुष उदय होने के समय साधक निर्गुण्डी वृक्ष के नीचे बैठकर मूल मन्त्र का एक लाख जप करे। ऐसा करने पर पाताल की सिद्धि प्रदान करने वाली माहेन्द्री यक्षिणी सिद्ध हो जाती है।।३५।।

१२. अथ शङ्खिनी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ शङ्खधारिणि शङ्खाभरणे ह्राँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ श्रीः स्वाहा।। (किंकिणीतंत्रम्)

ॐ ह्रीँ शङ्खधारिणि शङ्खाभरणे ह्राँ ह्रीँ क्लीँ ऐँ आँ स्वाहा।। (प्राकृत ग्रन्थ)

ॐ ह्रीँ शङ्खधारिणि शङ्खधारणे द्राँ द्रीँ क्लीँ श्रीँ स्वाहा।।(उड्डामरेश्वर तन्त्रम्)

मन्त्रायुतं जपेन्मन्त्री सति भानूदये शुचिः ।
शङ्खमालिकया पश्चादिन्धनैः करवीरजैः ।।३६।।
घृताक्तैर्होमयेन्मन्त्री दशांशेन शुचिस्ततः ।
ध्रुवं सिद्धा भवेद् देवी शङ्खिनी वाञ्छितप्रदा ।।३७।।

षोडश नित्या तन्त्र में शङ्खिनी को शशिनी कहा गया है। साधक शुद्ध एवं पवित्र होकर सूर्य के उदय होने पर शङ्ख की माला से मूल मन्त्र का दश हजार जप करे। जप का दशांश घृतमिश्रित कनेर की लकड़ियों से हवन करे। ऐसा करने पर निश्चित रूप से साधक को मनोवाञ्छित प्रदान करने वाली यक्षिणी सिद्ध हो जाती है।।३६-३७।।

१३. अथ चान्द्री (चन्द्रिका) यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीँ चन्द्रिके हंसः स्वाहा।। (प्राकृत ग्रन्थ)

ॐ ह्रीँ चन्द्रिके हंसः क्लीं स्वाहा।। (मतान्तरे)

ॐ ह्रीँ चन्द्रिके हंसः क्रीँ क्लीँ स्वाहा।। (कामरत्नम्, दत्तात्रेयतन्त्रम्)

शुक्लपक्षे जपेत्तावद्यावत्संदृश्यते विधुः ।
प्रतिपत्पूर्वपूर्णान्तं तावल्लक्षमिमं जपेत् ।
अमृतं चन्द्रिकादत्तं पीत्वा जीवोऽमरो भवेत् ।।३८।।

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि से साधक मूल मन्त्र का जप करे। मन्त्र का जप तब तक करे जब तक चन्द्रमा आकाश में दिखाई देता रहे। प्रतिपदा से पूर्णिमा तक एक लाख मन्त्र का जप करने पर चन्द्रिका यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को अमृत प्रदान करती है, जिसका पान करने पर साधक अमर हो जाता है।।३८।।

१४. अथ श्मशानी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ हूँ ह्रीं स्फूँ श्मशानवासिनि श्मशाने स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ द्राँ द्रीं श्मशानवासिनि स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

चतुर्लक्षमिमं मन्त्रं श्मशाने प्रजपेच्छुचिः ।
नग्नव्रतोऽञ्जनं तुष्टा श्मशाने प्रयच्छति ।।३९।।
तेन पश्येन्नरोऽदृश्यो विचरेद्वसुधातले ।
निधिं पश्यति गृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते ।।४०।।

साधक शुद्ध पवित्र एवं नग्न होकर श्मशान में मूल मन्त्र का चार लाख जप करे। इससे यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को दिव्य अञ्जन प्रदान करती है। उस अंजन के प्रयोग से साधक पृथ्वी पर भ्रमण करता हुआ मनुष्यों को दिखाई नहीं देता है। साधक पृथ्वी में छिपी हुई निधि को देखकर उसे ग्रहण कर लेता है। श्मशानसिद्ध साधक कभी भी विघ्नों से पराभूत नहीं होता है।।३९-४०।।

१५. अथ वटयक्षिणी मन्त्रसाधनम्

एह्येहि यक्षि यक्षि महायक्षि वटवृक्षनिवासिनि शीघ्रं मे सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।।

(मन्त्रमहोदधि)

अस्य विधानम्–

विनियोगः– ॐ अस्य श्रीवटयक्षिणीमन्त्रस्य विश्रवा ऋषिरनुष्टुप्छन्दः यक्षिणीदेवतात्मनोऽभीष्टसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।।

ऋष्यादिन्यासः– ॐ विश्रवाऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। यक्षिणीदेवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।। **इति ऋष्यादिन्यासः।**

करन्यासः– एह्येहि अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।। यक्षि यक्षि तर्जनीभ्यां नमः।। महायक्षि मध्यमाभ्यां नमः।। वटवृक्षनिवासिनि अनामिकाभ्यां नमः।। शीघ्रं मे सर्वसौख्यं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।। कुरु कुरु स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। **इति करन्यासः।।**

हृदयादिषडंगन्यासः– एह्येहि हृदयाय नमः। यक्षि यक्षि शिरसे स्वाहा।। महायक्षि शिखायै वषट्।। वटवृक्षनिवासिनी कवचाय हुम्।। शीघ्रं मे सर्वसौख्यं नेत्रत्रयाय वौषट्।। कुरु कुरु स्वाहाऽस्त्राय फट्।। **इति हृदयादिषडंगन्यासः।।**

मन्त्रवर्णन्यासः– ॐ ऐं नमः मस्तके १।। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे २।। ॐ हिँ नमः वामनेत्रे ३।। ॐ यं नमः वक्त्रे ४।। ॐ क्षिं नमः दक्षिणनासापुटे ५।। ॐ यं नमः

वामनासापुटे ६।। ॐ क्षिं नमः दक्षकर्णे ७।। ॐ मं नमः वामकर्णे ८।। ॐ हां नमः दक्षस्तने ९।। ॐ यं नमः वामस्तने १०।। ॐ क्षिं नमः वक्षःस्थले ११।। ॐ वं नमः दक्षिणपार्श्वे १२।। ॐ टं नमः वामपार्श्वे १३।। ॐ वृं नमः हृदि १४।। ॐ क्षँ नमः उदरे १५।। ॐ निं नमः नाभौ १६।। ॐ वां नमः ललाटे १७।। ॐ सिं नमः भ्रुवोः १८।। ॐ निं नमः दक्षकट्याम् १९।। ॐ शीं नमः वामकट्याम् २०।। ॐ घ्रं नमः दक्षोरौ २१।। ॐ मे नमः वामोरौ २२।। ॐ सं नमः नाभौ २३।। ॐ वं नमः दक्षिणजंघायाम् २४।। ॐ सौं नमः वामजंघायाम् २५।। ॐ ख्यं नमः दक्षजानुनि २६।। ॐ कुं नमः वामजानुनि २७।। ॐ रुं नमः दक्षिणमणिबन्धे २८।। ॐ कुं नमः वाममणिबन्धे २९।। ॐ रुं नमः दक्षिणकरे ३०।। ॐ स्वां नमः वामकरे ३१।। ॐ हां नमः मूर्ध्नि ३२।। **इति मन्त्रवर्णन्यासः**।

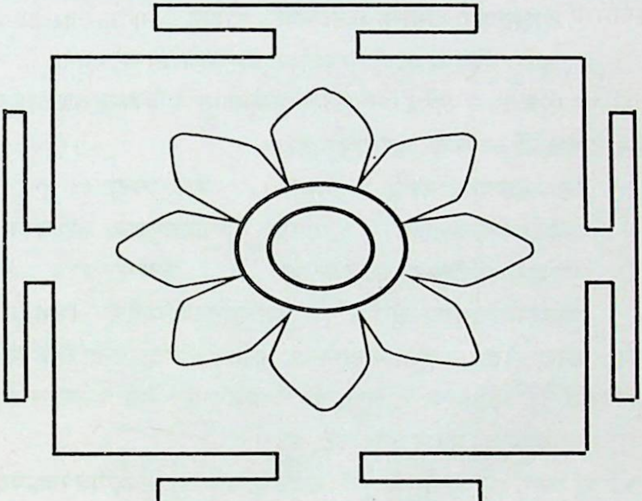

मतान्तरे–ॐ ऐं नमः मस्तके, ह्रों नमः दक्षनेत्रे, हिं नमः वामनेत्रे, यं नमः मुखे, क्षिं नमः दक्षनासायाम्, यं नमः वामनासायाम्, क्षिं नमः दक्षकर्णे, मं नमः वामकर्णे, हां नमः वामस्तने, टं नमः दक्षिणपार्श्वे, वृं नमः वामपार्श्वे, क्षं नमः हृदि, निं नमः नाभौ, वां नमः लिङ्गे, सिं नमः उदरे, निं नमः दक्षिणकट्याम्, शीं नमः वामकट्याम्,

घ्रं नमः दक्षिण उरौ, में नमः वाम उरौ, सं नमः नाभौ, र्वं नमः दक्षिणजंघायाम्, सौं नमः वामजंघायाम्, ख्यं नमः दक्षिणजानौ, कुं नमः वामजानौ, रुं नमः दक्षिणमणिबन्धे, कुं नमः वाममणिबन्धे, रुं नमः दक्षिणहस्ते, स्वां नमः वामहस्ते, हां नमः शिरसि।।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्–

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे–

ॐ अरुणचन्दनवस्त्रविभूषितां सजलतोयदतुल्यतनूरुहाम् ।
स्मरकुरंगदृशं वटयक्षिणीं क्रमुकनागलतादलपुष्कराम् ।।४१।।

लाल चन्दन एवं लाल वस्त्रों से सुशोभित शरीर वाली, विशाल जलधर मेघ के समान कान्ति वाली, मदमत्त हरिणी के समान चञ्चल नेत्रों वाली, अपने दोनों हाथों में पूगीफल एवं नागवल्ली दल लिए हुए वटयक्षिणी का मैं ध्यान करता हूँ।।४१।।

लक्षद्वयं जपेन्मन्त्रं बन्धूकैस्तद्दशांशतः।
हुत्वा पीठे यजेद्देवीमुच्यते पीठशक्तयः।।४२।।

वटयक्षिणी मन्त्र का २ लाख जप करके बन्धूक पुष्पों से मन्त्र का दशांश होम करे। अब मैं पीठशक्तियों का वर्णन करता हूँ।।४२।।

कामदामानदानक्ता मधुरा मधुरानना ।
नर्मदाभोगदानन्दा प्राणदा पीठशक्तयः ।।४३।।
मनोहराययक्षिण्यायोगपीठाय हृन्मनुः ।
पीठस्योक्तस्तत्र देवीं पूजयेद्वटयक्षिणीम् ।।४४।।

कामदा, मानदा, नक्ता, मधुरा, मधुरानन्दा, नर्मदा, भोगदा, नन्दा तथा प्राणदा– यह नौ पीठशक्तियाँ हैं। 'मनोहराय यक्षिणी योगपीठाय नमः' यह पीठमन्त्र है। इसी पूजित पीठ पर वटयक्षिणी का पूजन करे।।४३-४४।।

यक्षिणी का ध्यान कर मानसिक पूजन करने के उपरान्त अर्घ्यपात्र स्थापित करे। 'फट' से अर्घ्यपात्र धोकर ॐ से जल, गन्ध, पुष्पादि डालकर **गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।** इस मन्त्र से जल में तीर्थ का आवाहन करे। तत्पश्चात् धेनुमुद्रा का प्रदर्शन कर अर्घ्यपात्र पर हाथ रखकर मूल मन्त्र का दश बार जप करे। तदुपरान्त अर्घ्यपात्र से कुछ जल प्रोक्षणी पात्र

में लेकर मूलमन्त्र पढ़कर ३ बार अपने शरीर का एवं पूजन सामग्री का प्रोक्षण करे। इसके पश्चात् वृत्ताकार कर्णिका, उसके पश्चात् अष्टदल कमल, तदुपरान्त भूपुर–इस प्रकार का यन्त्र बनाकर यक्षिणी देवी का पूजन करे–

श्रीवटयक्षिणीपूजनयन्त्र

इसके उपरान्त पीठ पूजा करे–

ॐ आधारशक्तये नमः	ॐ प्रकृतये नमः	ॐ कूर्माय नमः
ॐ अनन्तराय नमः	ॐ पृथिव्यै नमः	ॐ क्षीरसमुद्राय नमः
ॐ रत्नद्वीपाय नमः	ॐ कल्पवृक्षाय नमः	ॐ स्वर्णसिंहासनाय नमः
ॐ आनन्दकन्दाय नमः	ॐ संविन्नालय नमः	ॐ सर्वतत्त्वात्मकपद्माय नमः
ॐ सं सत्त्वाय नमः	ॐ रं रजसे नमः	ॐ तं तमसे नमः
ॐ आं आत्मने नमः	ॐ अं अन्तरात्मने नमः	ॐ पं परमात्मने नमः
ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।		

इसके उपरान्त पूर्वादि दिशाओं में क्रमपूर्वक नौ शक्तियों की पूजा करे। यथा–

ॐ कामदायै नमः	ॐ मानदायै नमः	ॐ नक्तायै नमः
ॐ मधुरायै नमः	ॐ मधुराननायै नमः	ॐ नर्मदायै नमः
ॐ भोगदायै नमः	ॐ नन्दायै नमः	ॐ प्राणदायै नमः।

इसके पश्चात् 'ॐ मनोहराय यक्षिणी योगपीठाय नमः' इस मन्त्र के द्वारा पुष्पासन प्रदान कर पीठपूजा कर यक्षिणी के यन्त्र में यक्षिणी का ध्यान कर पाद्यादि तथा पुष्पों से उनका पूजन कर 'आज्ञापय आवरणं ते पूजयामि' इस मन्त्र के द्वारा आज्ञा लेकर आवरणपूजा करे–

कर्णिकायां षडंगानि पत्रेष्वेता यजेत्पुनः ।
सुनन्दा चन्द्रिका हासा सुलापा मदविह्वला ।।४५।।
आमोदा च प्रमोदापि वसुदेत्यष्टशक्तयः ।
इन्द्रादीनथ वज्रादीन् सम्पूज्य लभते सुखम् ।।४६।।

कर्णिका में षडङ्गपूजा एवं पत्रों में सुनन्दा, चन्द्रिका, हासा, सुलापा, मदविह्वला, आमोदा, प्रमोदा तथा वसुदा–इन आठ शक्तियों की पूजा करे। इसके पश्चात् भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों का तथा भूपुर से बाहर उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करने पर साधक सुख को प्राप्त करता है।

प्रथमावरण पूजा वृत्ताकार कर्णिका में–

एह्येहि हृदयाय नमः यक्षि यक्षि शिरसे स्वाहा

महायक्षि शिखायै वषट् वटवृक्षनिवासिनि कवचाय हुम्

शीघ्रं मे सर्वसौख्यं नेत्रत्रयाय वौषट् कुरु कुरु स्वाहा अस्त्राय फट्

द्वितीयावरणपूजा अष्टदलों में– ॐ सुनन्दायै नमः ॐ चन्द्रिकायै नमः

ॐ हासायै नमः ॐ सुलापायै नमः ॐ मदविह्वलायै नमः

ॐ आमोदायै नमः ॐ प्रमोदायै नमः ॐ वसुदायै नमः।

तृतीयावरण की पूजा भूपुर के भीतर पूर्वादि दिशाओं के क्रम में–

ॐ इन्द्राय नमः पूर्वे ॐ अग्नये नमः आग्नेये

ॐ यमाय नमः दक्षिणे ॐ निर्ऋतये नमः नैर्ऋत्ये

ॐ वरुणाय नमः पश्चिमे ॐ वायवे नमः वायव्ये

ॐ सोमाय नमः उत्तरे ॐ ईशानाय नमः ऐशान्यै

ॐ ब्रह्मणे नमः पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ अनन्ताय नमः पश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्ये

चतुर्थावरण पूजा भूपुर के बाहर वज्रादि आयुध पूजन–

ॐ वज्राय नमः पूर्वे ॐ शक्तये नमः आग्नेये

ॐ दण्डाय नमः दक्षिणे ॐ खड्गाय नमः नैर्ऋत्ये

ॐ पाशाय नमः पश्चिमे ॐ अंकुशाय नमः वायव्ये

ॐ गदायै नमः उत्तरे ॐ त्रिशूलाय नमः ऐशान्यै

ॐ पद्माय नमः पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ चक्राय नमः निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये।

इस प्रकार आवरण पूजन करने के पश्चात् यक्षिणी देवी का पञ्चोपचारों से पूजन कर चार पुष्पाञ्जलि समर्पित कर जप प्रारम्भ करे।।४५–४६।।

एवमाराधितो मन्त्रः प्रयोगेषु क्षमो भवेत् ।
निर्मनुष्ये वने गत्वा न्यग्रोधाधस्तले जपेत् ।।४७।।
प्रतिघस्त्रं तमस्विन्या सहस्त्रं नियतेन्द्रियः ।
सप्तमे दिवसे प्राप्ते कृत्वा चन्दनमण्डलम् ।।४८।।
तत्राज्यदीपं कृत्वाऽस्मिन् पूजयेद्वटयक्षिणीम् ।
तदग्रे प्रजपेन्मन्त्रमानिशीथं समाहितः ।।४९।।

श्रृणोति नूपुरारावं मन्त्री गीतध्वनिं ततः ।
श्रुत्वैव प्रजपेन्मन्त्रं वीतत्रासश्च तां स्मरेत् ।।५०।।
ततः प्रत्यक्षतो देवीमीक्षते सुरतार्थिनीम् ।
तत्कामपूरणात् सा तु ददातीष्टानि मन्त्रिणे ।।५१।।
किं बहूक्तेन सर्वेष्टपूरणी वटयक्षिणी ।

इस प्रकार पूजन करने पर साधक मन्त्रप्रयोग का अधिकारी हो जाता है। निर्जन वन में वटवृक्ष के नीचे बैठकर प्रतिदिन रात्रि में संयमपूर्वक जप करे। तदुपरान्त सातवें दिन चन्दन के द्वारा मण्डल बनाकर उसमें घृत का दीपक जलाकर मण्डल में वटयक्षिणी का पूजन करे। अत्यन्त सतर्कतापूर्वक मध्य रात्रिपर्यन्त उसके सामने जप करते हुए साधक को नूपुर की ध्वनि सुनाई पड़ती है। नूपुर ध्वनि को सुनते हुए यक्षिणी देवी का ध्यान करते हुए साधक निर्भय होकर जप में लगा रहे। इस प्रकार करते रहने से कामातुर वटयक्षिणी साधक को दिखाई देती है तथा उससे सम्भोग की इच्छा करती है। साधक द्वारा उसके साथ सम्भोग किये जाने पर वह उसकी सभी इच्छाएं पूरी करती है। अधिक क्या कहा जाए, वह साधक की सभी कामनाएं पूर्ण करती है।।४७-५१[१/२]।।

पद्माद्वयं यक्षिणीति सचन्द्रं गगनत्रयम् ।।५२।।
वैश्वानरप्रियान्तोऽयं दशवर्णो मनुर्मतः ।
ऋषिः पूर्वोदितश्छन्दः पंक्तिर्देवो तु यक्षिणी ।।५३।।
चन्द्रैकत्रित्रियुग्मेन सर्वेणाङ्गक्रिया मता ।
स्मरेच्चम्पककान्तारे रत्नसिंहासनस्थिताम् ।।५४।।
सुवर्णप्रभां रत्नभूषाभिरामां जपापुष्पसच्छायवासो युगाढ्याम् ।
चतुर्दिक्षु दासीगणैः सेवितांघ्रिं भजे सर्वसौख्यप्रदां यक्षिणीं ताम् ।।५५।।
एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं जपापुष्पैर्दशांशतः ।
जुहुयात् पूर्ववत् पीठे पूर्वोक्ते प्रयजेदिमाम् ।।५६।।

पद्माद्वय–श्रीं श्रीं–तत्पश्चात् 'यक्षिणी' पद तत्पश्चात् सचन्द्र गगन त्रय–हं हं हं – इसके उपरान्त वैश्वानर प्रिया–स्वाहा–लगाने से वट–यक्षिणी का द्वितीय दशाक्षर मन्त्र बनता है।। **'श्रीं श्रीं यक्षिणी हं हं हं स्वाहा'** यह दशाक्षर मन्त्र है।

इस मन्त्र के ऋषि विश्रवा, पंक्ति छन्द तथा यक्षिणी देवता हैं। मन्त्र के १, १, ३, ३, तथा २ अक्षरों से न्यास करे तथा समस्त मन्त्राक्षरों से षडङ्गन्यास करे। जैसे–

विनियोगः– ॐ अस्य श्रीवटयक्षिणीमन्त्रस्य विश्रवा ऋषिः पंक्तिश्छन्दः वटयक्षिणीदेवता आत्मनोऽभीष्टसिद्धये मन्त्रजपे विनियोगः।

षडङ्गन्यासः– श्रीं हृदयाय नमः, श्रीं शिरसे स्वाहा, यक्षिणी शिखायै वषट्, हं हं हं कवचाय हुम्, स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्, श्रीं श्रीं यक्षिणी हं हं हं स्वाहा अस्त्राय फट्। शेष पूर्वोक्त की भाँति।

यक्षिणी ध्यान– चम्पक वन में रत्नसिंहासन पर विराजमान, स्वर्ण के समान कान्ति वाली, रत्ननिर्मित आभूषणों से सुशोभित, जपाकुसुम के समान लाल वर्ण के युगल वस्त्र धारण करने वाली, दासियों द्वारा चारों दिशाओं में सेव्यमान चरणयुगलों वाली तथा अपने साधकों को सुख प्रदान करने वाली यक्षिणी देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

इस प्रकार ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का एक लाख जप करे तथा जपाकुसुम से दशांश होम करे। पीठपूजन पूर्व की भाँति करें।।५२-५६।।

अन्यः शिवार्चनचन्द्रिकोक्तमन्त्रः–**ॐ ह्रीं श्रीं वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणी एह्येहि स्वाहा।।**

किंकिणीतन्त्रोक्तमन्त्रः – **ॐ वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा।**

अस्य विधानम् –

त्रिपथस्थो वटाधःस्थो रात्रौ मन्त्रं जपेत्सदा ।
लक्षत्रयं तदा सिद्धा स्याद्देवी वटयक्षिणी ।।५७।।
वस्त्रालङ्करणे दिव्ये सिद्धिं रसरसायनम् ।
दिव्याञ्जनं च सा तुष्टा साधकाय प्रयच्छति ।।५८।।

'शिवार्चन चन्द्रिका' में वटयक्षिणी का मन्त्र इस प्रकार है–ॐ ह्रीं श्रीं वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणी एह्येहि स्वाहा।।

'किंकिणीतन्त्र' में मन्त्र इस प्रकार है– ॐ वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा।।

विधान–रात्रि में जहाँ पर तीन मार्ग मिलते हों वहीं पर स्थित वटवृक्ष के नीचे साधक एकाग्र चित्त से मंत्र का तीन लाख जप करे। ऐसा करने पर वटयक्षिणी साधक को दिव्य वस्त्राभूषण, रस, रसायन, दिव्य अंजन प्रदान करती है तथा सभी प्रकार से सन्तुष्ट करती है।।५७-५८।।

१६. अथ मदनमेखलायक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ क्रौं मदनमेखले नमः स्वाहा।। (मन्त्रमहोदधि)

ॐ हूँ मदनमेखले नमः स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ द्रीं हुँ मदनमेखलायै मदनविडम्बनायै नमः स्वाहा।।

(उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

अस्येज्यापूर्ववत्सर्वा मेखला यक्षिणी त्वियम् ।
चतुर्दशाहपर्यन्तं मधूकावनिरुट्तले ।।५९।।
प्रजपेदयुतं नित्यं सहस्त्रं हवनं चरेत् ।
मधूकपुष्पैर्मध्वाक्तैस्तत्काष्ठैश्च हुताशने ।।६०।।
सन्तुष्टैवं कृते देवी प्रयच्छेदञ्जनं शुभम् ।
येनाक्तनयनो मन्त्री निधिं पश्येद्धरागतम् ।।६१।।

मदनमेखला यक्षिणी के मन्त्र मूल में लिखे हैं। इनमें से किसी एक का साधन करे। साधक महुआ के वृक्ष के नीचे बैठकर निरन्तर चौदह दिन तक दश हजार की संख्या में प्रतिदिन मूल मन्त्र का जप करे तथा महुआ के लकड़ी की अग्नि में मधुमिश्रित महुए के फूलों की एक हजार आहुतियाँ दे। इस प्रकार यक्षिणी को सन्तुष्ट करने पर यक्षिणी साधक को एक दिव्य अञ्जन प्रदान करती है, जिससे साधक भूमि में छुपी हुई निधि को देख सकने में समर्थ हो जाता है।।५९-६१।।

१७. अथ विकला यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ विकले ऐँ ह्रीं श्रीं क्लैं स्वाहा।। (प्राकृत ग्रन्थ)

ॐ विकले ऐँ द्रीं श्रीं क्लैं स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ विकले ऐँ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

गुहान्तःस्थोऽधरे मासत्रयं मन्त्रं जपेन्नरः ।
ततः सिद्धा भवेद् देवि विकला वाञ्छितप्रदा ।।६२।।

विकला यक्षिणी के मन्त्र ऊपर मूल में लिखे हैं। पर्वत की गुफा के भीतर बैठकर साधक तीन महीने तक विकला यक्षिणी का मूल मन्त्र तीन लाख की संख्या में जपे। ऐसा करने पर मनोवाञ्छित सिद्धि प्रदान करने वाली विकला यक्षिणी सिद्ध हो जाती है।।६२।।

१८. अथ लक्ष्मी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।। (दत्तात्रेयतंत्रम्)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लक्ष्मि कमलधारिणि हं सः सो हं स्वाहा।।

(उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ ऐं लक्ष्मीं श्रीं कमलधारिणीं कलहंसि स्वाहा।।

(दत्तात्रेयतन्त्रम्, कामरत्नम्)

ॐ ऐं लक्ष्मीं वँ श्रीं कमलधारिणि हंसः स्वाहा।। (तन्त्रान्तरे)

स्वगृहावस्थितो रक्तैः प्रसूनैः करवीरजैः ।
लक्षमावर्तयेन् मन्त्री दूर्वाज्याभ्यां दशांशतः ।।६३।।
होमे कृते भवेत् सिद्धा लक्ष्मीनाम्नी च यक्षिणी ।
रसं रसायनं दिव्यं निधानं च प्रयच्छति ।।६४।।

साधक अपने घर में स्थित होकर मूल मन्त्र का एक लाख जप करे तथा लाल कनेर के पुष्प, दूर्वा तथा घी से जप का दशांश हवन करे। ऐसा करने पर लक्ष्मी यक्षिणी सिद्ध हो जाती है तथा प्रसन्न होकर साधक को दिव्य रस, रसायन तथा धन का भण्डार प्रदान करती है।।६३-६४।।

१९. अथ मालिनी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ द्रीं ॐ नमो मालिनि स्त्रि एह्येहि सुन्दरि हंसहंसि समीहं मे सङ्गमय स्वाहा।।

(उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

चतुष्पथस्थितो लक्षमापदि प्रजपेन्मनुम् ।
मालिनी जायते सिद्धा दिव्यं खड्गं प्रयच्छति ।
यत्प्रभावेन लोकेऽस्मिन् दुर्लभं राज्यमाप्नुयात् ।।६५।।

साधक उपरोक्त मन्त्र का चतुष्पथ (चौराहा) पर बैठकर एक लाख जप करे। ऐसा करने पर मालिनी यक्षिणी सिद्ध होकर साधक को दिव्य खड्ग प्रदान करती है, जिसके प्रभाव से वह इस विश्व में दुर्लभ राज्य प्राप्त करता है।।६५।।

२०. अथ मानिनी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ऐं मानिनि ह्रीं एह्येहि सुन्दरि हसहसमिह संगमहः स्वाहा।।

(किंकिणीतंत्रम्)

मानिनी यक्षिणी की साधना भी मालिनी यक्षिणी की भाँति करे।।

२१. अथ शतपत्रिका यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्राँ शतपत्रिके ह्राँ ह्रीँ श्रीँ स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ द्रीँ शतपत्रिके द्रीँ द्रीँ श्रीँ स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

शतपत्रवनांतस्थो लक्षसंख्यं जपेन्मनुम् ।
क्षीराज्यं होमयेद्यस्तु रससिद्धिं च भूनिधिम् ।।६६।।

साधक जहाँ पर कमल का समूह हो वहाँ पर बैठकर मन्त्र का एक लाख जप करे, तथा मन्त्र का दशांश दूध तथा घी से हवन करे। ऐसा करने पर यक्षिणी साधक को रससिद्धि एवं भूनिधि (धन) प्रदान करती है।।६६।।

२२. अथ सुलोचना यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ क्लौं सुलोचनादिदेवि स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ द्रीँ क्लीँ सुलोचने सिद्धिं मे देहि देहि स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

नदीतीरे स्थितो लक्षत्रयं मन्त्री जपेन्मनुम् ।
घृतहोमे दशांशेन कृते देवी प्रसीदति ।।६७।।
ददाति पादुकां तस्मै यथारुचि नभस्तले ।
मनः पवनवेगेन याति चायाति साधकः ।।६८।।

साधक नदीतीर पर स्थित होकर सुलोचना यक्षिणी के मूल मन्त्र का ३ लाख जप करे। जप का दशांश हवन करने पर सुलोचना प्रसन्न होती है और साधक को पादुका प्रदान करती है, जिससे साधक इच्छानुसार आकाश में मन एवं वचन के वेग से गमन करने में समर्थ हो जाता है।।६७-६८।।

२३. अथ शोभना यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ अशोकपल्लवाकारकरतले शोभनीँ श्रीँ क्षः स्वाहा।। (कामरत्नम्)

ॐ द्रीँ अशोकपल्लवकरतले शोभने श्रीँ क्षः स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ अशोकपल्लवाकारकरतले शोभने देवि श्रीँ क्षः स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

रक्तमाल्याम्बरो मन्त्रं चतुर्दशिदिने जपेत् ।
ततः सिद्धा भवेद्देवी शोभना भोगदायिनी ।।६९।।

लाल माला तथा लाल वस्त्र धारण कर शोभना यक्षिणी का मूल मन्त्र

चतुर्दशी के दिन जपे। इस प्रकार समस्त भोग प्रदान करने वाली शोभना यक्षिणी प्रसन्न हो जाती है।।६९।।

२४. अथ कपालिनी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ऐं कपालिनि हाँ हीं क्लीं क्लैं क्लौं हससकल ह्रीं फट् स्वाहा।।

(किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ ऐं कपालिनि द्राँ द्रीं क्लाँ क्लीं क्लूँ क्लैं क्लौं क्लः हं सः सोहं सकलह्रीं फट् स्वाहा।।

महाव्रतधरो मन्त्री यः शाल्योदनभोजनैः ।
लक्षद्वयं जपेन्मन्त्रं कपालं लभते मुनिः ।।७०।।
आकाशगमनं दूरात् स्वप्नरूपसमागमः ।
दूराद्दर्शनमित्यादि साधकाय प्रयच्छति ।।७१।।

साधक, महाव्रत को धारण करके खीर का भोजन करे तथा मौन रहकर दो लाख मूल मन्त्र का जप करे। जप करने पर साधक को कपाल की प्राप्ति होती है। इस कपाल के द्वारा आकाश गमन एवं स्वप्न में दूर से रूप समागम होता है। यक्षिणी साधक को दूर से दर्शन प्रदान करती है। इसका एक मन्त्र इस प्रकार है– **ॐ हूँ ह्राँ कालि करालिनि ह्रौं क्षां क्षीं क्षौं फट्।।७०-७१।।**

२५. अथ विलासिनी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ विरूपाक्षविलासिनि आगच्छागच्छ ह्रीं प्रिया मे भव प्रिया मे भव क्लैं स्वाहा।।

(किंकिणीतन्त्रम्)

सरस्तीरे जपेन्मन्त्रमर्द्धलक्षप्रमाणतः ।
घृतगुग्गुलहोमेन देवी सौभाग्यदायिनी ।।७२।।

साधक एकाग्रचित्त से नदी के किनारे मूल मन्त्र का पचास हजार जप करे तथा जप का दशांश घी एवं गुग्गुल से होम करे। ऐसा करने पर सौभाग्य प्रदान करने वाली विलासिनी यक्षिणी सिद्ध हो जाती है।।७२।।

२६. अथ विशालिनी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ऐं विशाले त्राँ त्रीं क्लीं स्वाहा।। (दत्तात्रेयतंत्रम्, कामरत्नम्)

ॐ ऐं विशाले क्रीं ह्रीं व्रीं क्लीं क्रीं स्वाहा।। (कामरत्नम्)

सरित्तीरे जपेन्मन्त्रमर्धं लक्षस्य देशिकः ।
घृताक्तगुग्गुलैर्होमे देवी सौभाग्यदा भवेत् ।।७३।।

यक्षिणी साधक नदी के किनारे पचास हजार मूल मन्त्र का जप करे तथा घी-गुग्गुल के मिश्रण से हवन करे। ऐसा करने पर सौभाग्य प्रदान करने वाली विशाला यक्षिणी सिद्ध हो जाती है।।७३।।

२७. अथ नटी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं नटिनि स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं नटि महानटि स्वरूपवति स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं आगच्छ नटि स्वाहा।। (मन्त्रसिद्धभाण्डागार, दत्तात्रेयतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं क्रीं नटि महानटि स्वरूपवति स्वाहा।। (कामरत्नम्)

ॐ द्रीं नटि महानटि रूपवति द्रीं स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं नटि महानटि स्वर्गरूपवति ह्रौं (भूतडामरतन्त्रम्)

।। अस्य विधानम् ।।

भूतडामरतन्त्रे–

ततो वक्ष्ये महाविद्यां विश्वामित्रेण धीमता ।
ज्ञात्वा या साधिता विद्या बला चातिबला प्रिये! ।।७४।।
महाविद्येति कथिता गोपनीया प्रयत्नतः ।
अशोकस्य तटं गत्वा स्नानं पूर्ववदाचरेत् ।।७५।।
मूलमन्त्रेण सकलं कुर्याच्च सुसमाहितः ।
त्रैलोक्यमोहिनीं गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम् ।।७६।।
विचित्रालङ्कृतां रम्यां नर्तकीवेषधारिणीम् ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं सहस्त्रं च दिने दिने ।।७७।।
मांसोपहारैः सम्पूज्य धूपदीपौ निवेदयेत् ।
गन्धचन्दनताम्बूलं दद्यात्तस्यै सदा बुधः ।।७८।।
मासमेकं तु तां भक्त्या पूजयेत्साधकोत्तमः ।
मासान्ते दिवसं प्राप्य कुर्याच्च पूजनं महत् ।।७९।।
अर्द्धरात्रौ भयं दत्त्वा किञ्चित्साधकसत्तमे ।
सुदृढं साधकं मत्त्वा याति सा साधकालयम् ।।८०।।
विद्याभिः सकलाभिश्च किञ्चित्स्मेरमुखी ततः ।
वरं वरय शीघ्रं त्वं यत्ते मनसि वर्त्तते ।।८१।।

तच्छ्रुत्वा साधकश्रेष्ठो भावयेन्मनसा धिया ।
मातरं भगिनीं वापि भार्यां वा प्रीतिभावतः ।।८२।।
कृत्वा सन्तोषयेद्भक्त्या नटिनी तत्करोत्यलम् ।
माता स्याद्यदि सा देवी पुत्रवत्पालितं मुदा ।।८३।।
स्वर्णशतं सिद्धिद्रव्यं ददाति सा दिने दिने ।
भगिनी यदि सा कन्या देवस्य नागकन्यकाम् ।।८४।।
राजकन्यां समानीय ददाति सा दिने दिने ।
अतीतानागतां वार्त्तां सर्वां जानाति साधकम् ।।८५।।
भार्या स्याद्यदि सा देवी ददाति विपुलं धनम् ।
अन्नाद्यैरुपचारैस्तु ददाति कामभोजनम् ।
स्वर्णशतं सदा तस्मै सा ददाति ध्रुवं प्रिये! ।।८६।।

भूतडामरतन्त्र में नटी यक्षिणी की साधना-विधि इस प्रकार वर्णित है-हे प्रिये! अब मैं अन्य महाविद्या साधन कहता हूँ। इसको बला-अतिबला विद्या भी कहा जाता है। ब्रह्मर्षि विश्वामित्र ने इस विद्या की साधना की थी। यह महाविद्या कही गयी है। इसका मन्त्र मूल में लिखा है। इसे सभी प्रकार से गोपनीय रखे। अशोक वृक्ष के नीचे जाकर साधक विधिपूर्वक मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए स्नानादि कर्म करे तथा मूल मंत्र से पूजन करे। यह देवी अपने रूप-लावण्य एवं यौवन से त्रिभुवन को मोहित करने वाली, गौरवर्णा, विचित्र प्रकार के वस्त्र धारण करने वाली, विभिन्न आभूषणों से विभूषित, सुन्दर आकृति वाली एवं नर्त्तकी का वेष धारण करने वाली है। इस प्रकार का ध्यान करके प्रतिदिन एक हजार मंत्र जप करे। मांसादि के उपहार से देवी का पूजन करके धूप, दीप, गन्ध, चन्दन तथा ताम्बूल प्रदान करे। साधक इस प्रकार एक महीने तक पूजन एवं मन्त्र जप करे। महीने के अन्तिम दिन में बृहत् पूजा करे। देवी अर्द्धरात्रि को आकर साधक को कुछ भय दिखाती है। साधक उससे विचलित न होकर एकाग्र चित्त से मन्त्रजप करता रहे। देवी साधक को दृढ़प्रतिज्ञ देखकर साधक के समीप उपस्थित होती है। उस समय संपूर्ण विद्यावती देवी साधक से मुस्कराते हुए कहती है कि 'तुम अपना अभिलषित वर माँगो।' साधक अपनी इच्छानुसार उनसे अपनी माँ, बहन अथवा भार्या बनने का अनुरोध करे। साधक यक्षिणी से जो सम्बन्ध रखेगा उसे वह उसी रूप में सन्तुष्ट रखेगी। 'माता' सम्बोधित करने पर देवी साधक को अन्नादि भोजन प्रदान

करके साधक का पुत्र की भाँति पालन करती है तथा सौ स्वर्णमुद्राएँ तथा विविध द्रव्य प्रदान करती है। बहन मानने पर देवकन्या, नागकन्या तथा राजकन्या लाकर देती है तथा साधक को भूत, भविष्य एवं वर्तमान बतलाती है। भार्या बनने पर साधक को विपुल धन, अन्नादि विविध प्रकार के इच्छित भोजन, सौ स्वर्ण मुद्राएँ तथा जो कुछ भी माँगा जाय वह प्रदान करती है।।७४-८६।।

मन्त्रसिद्धभाण्डागारे–

कुंकुमेन, भूर्जपत्रे मण्डलं कृत्वा तन्मध्ये मूलमन्त्रं विलिख्य गंधाक्षतपुष्प-धूपदीपविधिना संपूज्य त्रिसंध्यं त्रिसहस्त्रं जपेत् मासमेकं यावत्। ततः पौर्णमास्यां विधिवत् पूजा कर्त्तव्या घृतदीपं प्रज्वालयेत् सकलरात्रिपर्यन्तं जपेत्। प्रभाते नियतसमये आगच्छति। सुंदरमाभूषणं ददाति नृत्यं करोति।।

मन्त्रसिद्धभाण्डागार में इसकी साधना विधि इस प्रकार है–साधक कुंकुम से भोजपत्र पर मण्डल बनाए तथा उसके मध्य में मूलमंत्र लिखकर गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप तथा दीप से विधिवत् पूजा करके तीनों संध्याओं में तीन हजार मंत्र जप करे। ऐसा एक महीने तक करे। पूर्णिमा के दिन विधिवत् पूजा करके घृत का दीप जलाकर सम्पूर्ण रात्रि जप करे। यक्षिणी प्रातः काल आती है और साधक को सुन्दर आभूषण प्रदान करती है तथा नृत्य करती है।

२८. अथ सुरसुन्दरी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ आगच्छ सुरसुन्दरि ह्लीं हौं स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

ॐ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा।। (मंत्रसिद्धभाण्डागार)

ॐ आगच्छागच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ नमो आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा।। (प्राकृत ग्रन्थ)

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्, कामरत्नम्)

अथातः संप्रवक्ष्यामि यक्षिणीसाधनोत्तमम् ।
सर्वार्थसाधनं नाम देहिनां सर्वसिद्धिदम् ।।८७।।
अतिगुह्या महाविद्या देवानामपि दुर्लभा ।
यासामभ्यर्चनं कृत्वा यक्षेशोऽभूद्धनाधिपः ।।८८।।

तासामाद्यां प्रवक्ष्यामि सुराणां सुन्दरीं प्रिये! ।
अस्या अभ्यर्चनेनैव राजत्वं लभते नरः ।।८९।।
अथ प्रातः समुत्थाय कृत्वा स्नानादिकं शुभम् ।
प्रासादञ्च समासाद्य कुर्यादाचमनं ततः ।।९०।।
प्रणवं सहस्रारं हुँ फट् दिग्बन्धनं चरेत् ।
प्राणायामं ततः कुर्यान्मूलमन्त्रेण मन्त्रवित् ।।९१।।
षडङ्गं मायया कुर्यात्पद्ममष्टदलं लिखेत् ।
तस्मिन्पद्मे महामन्त्रं जीवन्यासं समाचरेत् ।।९२।।
पीठे देवीः समावाह्य ध्यायेद्देवीं जगत्प्रियाम् ।
पूर्णचन्द्रनिभां देवीं विचित्राम्बरधारिणीम् ।।९३।।
पीनोत्तुंगकुचां वामां सर्वेषामभयप्रदाम् ।
इति ध्यात्वा च मूलेन दद्यात्पाद्यादिकं शुभम् ।।९४।।
पुनर्धूपं निवेद्यैव नैवेद्यं मूलमन्त्रतः ।
गन्धचन्दनताम्बूलं सकर्पूरं सुशोभनम् ।।९५।।
प्रणवान्ते भुवनेशीमागच्छ सुरसुन्दरि ।
वह्नेर्भार्या जपेन्मन्त्रं त्रिसन्ध्यं च दिने दिने ।।९६।।
सहस्रैकप्रमाणेन ध्यात्वा देवीं सदा बुधः ।
मासान्ते व्याप्य दिवसं बलिपूजां सुशोभनाम् ।।९७।।
कृत्वा च प्रजपेन्मन्त्रं निशीथे यान्ति सुन्दरी ।
सुदृढ़ं साधकं मत्वा याति सा साधकालये ।।९८।।
सुप्रसन्ना साधकाग्रे सदा स्मेरमुखी ततः ।
दृष्ट्वा देवीं साधकेन्द्रो दद्यात्पाद्यादिकं शुभम् ।।९९।।
सुचन्दनं सुमनसो दत्त्वाभिलषितं वदेत् ।
मातरं भगिनीं वाथ भार्यां व भक्तिभावतः ।।१००।।
यदि माता तदा देवि द्रव्यं च सुमनोहरम् ।
भूपतित्वं प्रार्थितं यत्तद्ददाति दिने दिने ।।१०१।।
पुत्रवत्पालितं लोके सत्यं सत्यं सुनिश्चितम् ।
स्वसा ददाति द्रव्यञ्च दिव्यं वस्त्रं तथैव च ।।१०२।।

दिव्यां कन्यां समादाय नागकन्यां दिने दिने ।
यद्यद्भवति भूतं च भविष्यतीति यत्पुनः ।।१०३।।
तत्सर्वं साधकेन्द्राय निवेदयति निश्चितम् ।
यद्यत्प्रार्थयते सर्वं सा ददाति दिने दिने ।।१०४।।
मातृवत्पालितं लोके कामनाभिर्मनोगतैः ।
भार्या स्याद्यदि सा देवी साधकस्य मनोहरा ।।१०५।।
राजेन्द्र सर्वराजानां संसारे साधकोत्तमः ।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले गतिः सर्वत्र निश्चितम् ।।१०६।।
यद्यद्ददाति सा देवी कथितुं नैव शक्यते ।
तया सार्द्धं च संभोगं करोति साधकोत्तमः ।
अन्यस्त्रीगमनं त्यक्त्वा अन्यथा नश्यति ध्रुवम् ।।१०७।।

अब यक्षिणी साधना विधि कही जा रही है। इससे मनुष्यों को सर्वार्थसिद्धि प्राप्त होती है। यह महाविद्या अत्यन्त ही गुह्य एवं देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। जिसकी उपासना करके यक्षराज कुबेर भी धनाधिपति हो गए हैं तथा जिसकी आराधना से साधक को राजत्व प्राप्त होता है, उसे कहता हूँ।

प्रातःकाल शय्या से उठकर शौच-स्नानादि कर्म करके अपने घर में आकर प्रासाद मन्त्र 'हौं' से आचमन करे। 'ॐ सहस्रारं हुँ फट्' मन्त्र से दिग्बन्धन करे तथा मूल मन्त्र के द्वारा प्राणायाम करे। ह्रीँ मन्त्र से हृदयादि षडङ्गन्यास करे। यथा-ॐ ह्रीँ हृदयाय नमः, आगच्छ शिरसे स्वाहा, सुर शिखायै वषट्। सुन्दरि कवचाय हुँ। स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रीँ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा अस्त्राय फट्।। इसके पश्चात् अष्टदल कमल अंकित करके उस कमल में यक्षिणी का जीवन्यास करे तथा पीठदेवता का आवाहन करके सुरसुन्दरी यक्षिणी का ध्यान करे। यह देवी जगत्प्रिया है। इनका मुख चन्द्रमा के समान गोल एवं दीप्तिमान, गौरवर्ण है तथा ये विचित्र वस्त्र धारण करने वाली हैं। इनके दोनों स्तन सुडौल, ऊँचे, पुष्ट एवं दृढ़ हैं। यह सभी को अभय प्रदान करती हैं। ध्यान करने के उपरान्त देवी का पूजन करे। देवी के मूल मंत्र का उच्चारण करके पाद्यादि प्रदान करके धूप, दीप, नैवेद्य, गन्ध, चन्दन एवं ताम्बूल अर्पित करे। ॐ ह्रीँ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा-इस मंत्र के द्वारा पूजा करे। साधक तीनों सन्ध्याओं में ध्यान करके प्रति सन्ध्या मूल मन्त्र का एक हजार जप करे। ऐसा एक महीने तक करके महीने के अन्त में वृहत् पूजा करके बलि प्रदान करे तथा एकाग्र चित्त से जप करे। इस प्रकार

यक्षिणी साधक को दृढ़प्रतिज्ञ जानकर रात्रि में उसके समीप उपस्थित होती है। उस समय साधक देवी को पाद्य, अर्घ्य प्रदान करे। चन्दन के साथ पुष्प अर्पित करके मनोवाञ्छित वर माँगे। यक्षिणी को माता, भगिनी तथा भार्या में से किसी एक सम्बोधन से सम्बोधित करे। माता सम्बोधन से वह वित्त, विविध द्रव्य एवं प्रार्थना करने पर राजत्व भी प्रदान करती है तथा साधक का पुत्रवत् पालन करती है। यदि साधक यक्षिणी की बहन के रूप में आराधना करता है तो विभिन्न प्रकार के पदार्थ, वस्त्र, नागकन्या तथा दिव्य कन्या प्रदान करती है। भूत, भविष्य एवं वर्तमान साधक को बता देती है। साधक देवी से जिस वस्तु की प्रार्थना करता है वही तत्काल प्रदान करती है। देवी साधक का भाई के समान पालन करती है तथा उसकी सभी अभिलाषाओं को पूर्ण करती है। यदि साधक देवी की भार्यारूप में आराधना करे तो वह साधक संसार के श्रेष्ठ व्यक्तियों में प्रधान होता है। वह स्वर्ग तथा पाताल में अबाध गति से सर्वत्र विचरण करने में समर्थ होता है। यक्षिणी साधक को जो पदार्थ प्रदान करती है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। साधक उनके साथ सुखपूर्वक सम्भोग करता हुआ समय बिताता है। देवी को भार्यारूप में सिद्ध करने पर साधक अन्य स्त्री से सम्भोग न करे, अन्यथा उसका विनाश हो जाता है।।८७-१०७।।

२९. अथ कामेश्वरी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

।।मन्त्राः।।

ॐ आगच्छ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

ॐ मातरागच्छ कामेश्वरि स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ कामेश्वरि स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

।।अथ ध्यानम्।।

कामेश्वरीं शशाङ्कास्यां चलत्खञ्जनलोचनाम् ।
सदा लोलगतिं कान्तां कुसुमास्त्रशिलीमुखीम् ।।१०८।।

कामेश्वरी यक्षिणी का मुख चन्द्रमा के समान कान्तिमान एवं सुन्दर व गोल है। उनके नेत्र खंजन पक्षी के समान चञ्चल हैं। उनके हाथों में कुसुम तथा भ्रमर अस्त्र रूप में हैं।।१०८।।

।।अस्य विधानम्।।

पूर्ववत्सकलं कृत्वा भूर्जपत्रे सुशोभने ।
गोरोचनाभिः प्रतिमां विनिर्माय स्वलङ्कृताम् ।।१०९।।
शय्यामारूह्य प्रजपेन्मन्त्रमेकमनास्ततः ।
सहस्त्रैकप्रमाणेन मासमेकं जपेद्बुधः ।।११०।।
घृतेन मधुना दीपं दद्याच्च सुसमाहितः ।
रात्र्यामभ्यर्च्यं तं मन्त्रं जपेन्मन्त्री प्रसन्नधीः ।।१११।।
अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ।
रसं रसायनं वित्तं वस्त्रालङ्करणानि च ।।११२।।
स्त्रीभावे च यदा तस्यै दद्यात्पाद्यादिकं ततः ।
सुप्रसन्ना तदा देवी साधकं तोषयेत्सदा ।।११३।।
अन्नाद्यै रतिभोगेन पतिवत्पालयेत्सदा ।
नीत्वा रात्रिं सुखैश्वर्यैर्दत्त्वा च विपुलं धनम् ।।११४।।
दत्त्वाऽलङ्करणं दिव्यं प्रभाते याति निश्चितम् ।
एवं प्रतिदिनं तस्य सिद्धिः स्यात्कामरूपिणः ।।११५।।

पूर्व की भाँति समस्त न्यास पूजनादि कर्म करके भोजपत्र पर गोरोचन से सुन्दर अलङ्कृत प्रतिमा (चित्र) का निर्माण करे। शय्या पर बैठकर एकाग्र चित्त से मन्त्र का एक हजार जप करे। ऐसा एक महीने तक करे। घृत तथा मधुमिश्रित कर उसका दीपक बनाकर जलाए तथा देवी का ध्यान कर मन्त्र का जप करे। रात्रि में बुद्धिमान साधक प्रसन्न मन से पूजन कर मन्त्र का जप करे। उस समय अर्धरात्रि को देवी आकर साधक को प्रसन्न मन से रस, रसायन, धन, वस्त्र एवं विविध आभूषण प्रदान करती है। साधक देवी को स्त्री भाव से पाद्य अर्घ्य प्रदान करे। साधक पर प्रसन्न होकर देवी उसके विविध कार्य करती है तथा अन्नादि विभिन्न प्रकार के भक्ष्य द्रव्य एवं सम्भोग सुख प्रदान करती है और पति की भाँति पालन करती है। अनेक प्रकार की सुखदायक क्रीड़ाएँ करके उसके साथ रात्रि बिताकर साधक को विपुल वस्त्र, आभूषण एवं धन प्रदान करके प्रातःकाल वापस चली जाती है। इस प्रकार कामेश्वरी यक्षिणी साधक को नित्य प्रति अपना सान्निध्य प्रदान करती रहती है।।१०९-११५।।

३०. अथ मनोहरा यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

भूतडामरतन्त्रे-

ततोऽन्यत्साधनं वक्ष्ये निर्मितं ब्रह्मणा पुरा ।
नदीतीरं समासाद्य कुर्यात् स्नानादिकं ततः ।।११६।।
पूर्ववत् सकलं कार्यं चन्दनैर्मण्डलं लिखेत् ।
स्वमन्त्रं तत्र संलिख्यावाह्य ध्यायेन्मनोहराम् ।।११७।।
कुरङ्गनेत्रां शरदिन्दुवक्त्रां विम्बाधरां चन्दनगन्धलिप्ताम् ।
चीनांशुकां पीनकुचां मनोज्ञां श्यामां सदा कामदुघां विचित्राम् ।।११८।।
एवं ध्यात्वा जपेद्देवीमगरुधूपदीपकैः ।
गन्धपुष्पं रसञ्चैव ताम्बूलादींश्च मूलतः ।।११९।।
तारं माया आगच्छ मनोहरे वह्निवल्लभे ।
कृत्वायुतं प्रतिदिनं जपेन्मन्त्रं प्रसन्नधीः ।।१२०।।
मासान्तदिवसं प्राप्य कुर्याच्च जपमुत्तमम् ।
आनिशीथं जपेन्मन्त्रं ज्ञात्वा च साधकं दृढम् ।।१२१।।
गत्वा च साधकाभ्यासे सुप्रसन्नो मनोहरा ।
वरं वरय शीघ्रं त्वं यत्ते मनसि वर्त्तते ।।१२२।।
साधकेन्द्रोऽपि तां ध्यात्वा पाद्याद्यैरर्चयेन्मुदा ।
प्राणायामं षडङ्गं च मायया समाचरेत् ।।१२३।।
सद्यो मांसबलिं दत्त्वा पूजयेच्च समाहितः ।
चन्दनोदकपुष्पेण फलेन च मनोहराम् ।।१२४।।
ततोऽर्चिता प्रसन्ना स्यात्पुष्णाति प्रार्थितं च यत् ।
स्वर्णं शतं साधकाय ददाति सा दिने दिने ।।१२५।।
सावशेषं व्ययं कुर्यात् स्थिते तत्तु न दास्यति ।
अन्यस्त्रीगमनं तस्य न भवेत्सत्यमीरितम् ।।१२६।।

अव्याहतगतिस्तस्य भवतीति न संशयः ।
इयं ते कथिता विद्या सुगोप्या या सुरासुरैः ।।
तव स्नेहेन भक्त्या च वक्ष्येऽहं परमेश्वरि ।।१२७।।

भूतडामर तन्त्र में मनोहरा यक्षिणी का मन्त्र एवं साधना इस प्रकार है-

अब अन्य यक्षिणी साधना-विधि तथा मन्त्र कहा जा रहा है। पूर्वकाल में ब्रह्माजी ने इसकी साधना विधि निर्मित की थी। साधक नदीतट पर जाकर स्नानादि नित्य कर्म करके पूर्व की भाँति न्यासादि कर्म करे। तत्पश्चात् चन्दन द्वारा मण्डल बनाकर उस मण्डल में देवी का मन्त्र लिखे और ध्यान करे। देवी के नेत्र हिरण के समान सुन्दर हैं। उनका मुखमण्डल शरत्कालीन चन्द्रमा के समान है तथा अधर पके हुए बिम्बाफल के समान हैं। समस्त अंग सुगन्धित चन्दन से लिप्त है। देवी रेशम के वस्त्र धारण की हुई हैं। उनके दोनों स्तन अत्यन्त ही सुडौल, मांसल एवं पुष्ट हैं। यह देवी अत्यन्त ही सुन्दर एवं मनमोहक हैं। यह श्याम वर्ण की हैं तथा कामधेनु के समान साधक की समस्त कामना पूर्ण करती हैं। यह विचित्र वर्ण की हैं। इस प्रकार ध्यान करके अगुरु की धूप प्रदान करे तथा दीपक से देवी की आरती करे। मूल मन्त्र 'ॐ ह्रीँ आगच्छ मनोहरे स्वाहा' के द्वारा गन्ध, पुष्प एवं ताम्बूल प्रदान करे। मूल मन्त्र का नित्य दश हजार जप करे। एक महीने तक इसी प्रकार जप करे। महीने के अन्त में सम्पूर्ण रात्रिपर्यन्त जप करे। ऐसा करने पर मनोहरा यक्षिणी साधक के समीप आकर वर माँगने को कहती है। उस समय साधक देवी को पाद्य अर्घ्य द्वारा पूजन करके ' ह्रीँ ' मन्त्र से प्राणायाम तथा 'ह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' इत्यादि प्रकार से कराङ्गन्यास करे। तत्पश्चात् साधक सावधान होकर ताजे मांस के द्वारा बलि प्रदान कर पूजन करे। चन्दनमिश्रित जल, पुष्प तथा फल के द्वारा पूजन करे। यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को इच्छित वर प्रदान करती है तथा प्रतिदिन दश स्वर्णमुद्राएँ प्रदान करती हैं। इसे नित्य ही खर्च कर देना चाहिए, अन्यथा देवी भविष्य में स्वर्णमुद्राएँ प्रदान नहीं करेंगी। मनोहरा यक्षिणी के सिद्ध होने पर साधक इन्हीं के साथ सुखपूर्वक सम्भोग करे, अन्य स्त्री से भूल कर भी सम्भोग न करे; अन्यथा सिद्धि का नाश हो जाता है। साधक इस साधना के प्रभाव से सर्वत्र अव्याहत गति होकर विचरण करता है। हे परमेश्वरि! यह अत्यन्त ही गोपनीय विद्या है। तुम्हारे स्नेह तथा भक्ति के कारण ही इसे मैंने प्रकाशित किया है।।११६-१२६।।

।।अन्य मन्त्राः।।

ॐ सर्वमनोहारिणी ॐ हौं।। (भूतडामरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीँ आगच्छ आगच्छ मनोहरि स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीँ सर्वकामदे मनोहरे स्वाहा।। (शिवार्चनचन्द्रिका)

ॐ आगच्छतु मनोहरि स्वाहा।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

मनोहरा यक्षिणी के अन्य मन्त्र ऊपर लिखे गये हैं।

३१. अथ कनकावती-यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ततो वक्ष्ये महाविद्यां शृणुष्वैकमना: प्रिये! ।
गत्वा वटतलं देवीं पूजयेत् साधकोत्तमः ।।१२७।।
प्राणायामं षडङ्गञ्च माययाथ समाचरेत् ।
सद्यो मांसबलिं दत्त्वा पूजयेत्तां समाहितः ।।१२८।।
अर्घ्यमुच्छिष्टरक्तेन दद्यात्तस्मै दिने दिने ।
प्रचण्डवदनां गौरीं पक्वबिम्बाधरां प्रियाम् ।।१२९।।
रक्ताम्बरधरां वामां सर्वकामप्रदां शुभाम् ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमयुतं साधकोत्तमः ।।१३०।।
सप्तदिनं समभ्यर्च्य चाष्टमे दिवसेऽर्चयेत् ।
कामेन मनसा वाचा पूजयेच्च दिने दिने ।।१३१।।
तारं मायां तथा कूर्चं रक्षकर्मणि तद्बहिः ।
आगच्छ कनकान्ते तु वति स्वाहा महामनुः ।।१३२।।
आनिशीथं जपेन्मन्त्रं बलिं दत्त्वा मनोहरम् ।
साधकेन्द्रं दृढं मत्त्वा प्रयाति साधकालये ।।१३३।।
साधकेन्द्रोऽपि तां दृष्ट्वा दद्यादर्घ्यादिकं ततः ।
ततः सपरिवारेण भार्या स्यात् कामभोजनैः ।।१३४।।
वस्त्रभूषादिकं त्यक्त्वा याति सा निजमन्दिरम् ।
एवं भार्या भवेन्नित्यं साधकाज्ञानुरूपतः ।।१३५।।
आत्मभार्यां परित्यज्य भजेत्तां च विचक्षणः ।।१३६।।

।।अन्य मन्त्राः।।

ॐ ह्रीं कनकावति मैथुनप्रिये स्वाहा।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

ॐ कनकावति मैथुनप्रिये ह्रौं स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं कनकावति मैथुनप्रिये आगच्छ आगच्छ स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ कनकावति मैथुनप्रिये स्वाहा।। (मन्त्रसिद्धभाण्डागार)

ॐ ह्रीं आगच्छ कनकावति स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

हे प्रिये! अब मैं महाविद्या साधना कहता हूँ। इसे एकाग्र चित्त होकर सुनो। साधक वटवृक्ष के नीचे जाकर देवी का पूजन करे। 'ह्रीं' इस मन्त्र के द्वारा प्राणायाम तथा 'ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' इत्यादि प्रकार से कराङ्गन्यास करे। साधक सावधान चित्त से ताजे मांस के द्वारा बलि प्रदान करके पूजन करे। साधक इस प्रकार नित्य पूजन करे तथा उच्छिष्ट रक्त के द्वारा अर्घ्य प्रदान करे। यक्षिणी का ध्यान इस प्रकार है-अत्यन्त ही प्रचण्ड मुख, गौरवर्ण, पके हुए बिम्बाफल के समान अधर तथा रक्त वस्त्र धारण करने वाली, किशोरी स्वरूप तथा साधक की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली हैं। इस प्रकार ध्यान का चिन्तन करके मूल मंत्र 'ॐ ह्रीं हुँ रक्षकर्मणि आगच्छ कनकावति स्वाहा' का दश हजार जप करे। सात दिन तक जप पूजन करके आठवें दिन पूजन एवं बलि प्रदान करके मूल मन्त्र का जप करता रहे। साधक को दृढ़प्रतिज्ञ जानकर देवी उसके समीप उपस्थित होती है। उस समय साधक पाद्य, अर्घ्य के द्वारा देवी की पूजा करे। इससे कनकावती यक्षिणी अपनी सहयोगिनियों के साथ साधक की भार्या बन जाती है तथा साधक को विविध प्रकार की इच्छित वस्तुएं प्रदान करती रहती है। साधक के साथ सम्पूर्ण रात्रि व्यतीत करने के पश्चात् अपने वस्त्र-आभूषण आदि त्याग कर अपने स्थान को जाती है। इस प्रकार भार्या होने पर साधक की इच्छानुसार नित्य आती रहती है। बुद्धिमान साधक अपनी स्त्री का त्याग कर कनकावती को ही भार्या रूप में स्वीकार करे। अन्य मन्त्र मूल में लिखे हैं।।१२७-१३६।।

३२. अथ रतिप्रिया यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्, किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ आगच्छ रतिकरि स्वाहा।। (मन्त्रसिद्धभाण्डागार)

ॐ आगच्छ रतिप्रिये स्वाहा।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

ततः पत्रे विनिर्माय पुत्तलीं ध्यानरूपतः ।
सुवर्णवर्णां गौराङ्गीं सर्वालङ्कारभूषिताम् ।।१३७।।
नूपुराङ्गदहाराढ्यां रम्याञ्च पुष्करेक्षणाम् ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं दद्याच्च पाद्यमुत्तमम् ।।१३८।।
चन्दनेन प्रधानेन जातीपुष्पेण यत्नतः ।
गुग्गुलं धूपदीपञ्च दद्यान्मूलेन साधकः ।।१३९।।
तारं माया तथाऽऽगच्छ रतिसुन्दरि पदं ततः ।
वह्निजायाष्टसाहस्त्रं जपेन्मन्त्रं दिने दिने ।।१४०।।
मासान्तदिवसं प्राप्य कुर्यात् पूजादिकं शुभाम् ।
घृतदीपं तथा गन्धं पुष्पं ताम्बूलमेव च ।।१४१।।
तावन्मन्त्रं जपेद्विद्वान् यावदायाति सुन्दरी ।
ज्ञात्वा दृढं साधकेन्द्रं निशीथे याति निश्चितम् ।।१४२।।
ततस्तमर्चयेद्भक्त्या जातीकुसुममालया ।
सुसन्तुष्टा साधकेन्द्रं तोषयेद्रतिभोजनैः ।।१४३।।
भूत्वा भार्या च सा तस्मै ददाति वाञ्छितं वरम् ।
भूषादिकं परित्यज्य प्रभाते याति सा ध्रुवम् ।।१४४।।
साधकाज्ञानुरूपेण सा चायाति दिने दिने ।
निर्जने प्रान्तरे देवि सिद्धः स्यान्नात्र संशयः ।
त्यक्त्वा भार्यां ताञ्च भजेदन्यथा नश्यति ध्रुवम् ।।१४५।।

साधक ध्यान के अनुरूप भोजपत्र पर एक पुतली बनाकर उसमें देवी का ध्यान करे। यह देवी सुवर्ण के समान कान्ति वाली, गोरे अंगों वाली, सभी प्रकार के आभूषणों से विभूषित, पायजेब (नूपुर), अंगद, हार से अलङ्कृत, अत्यन्त ही मनोहर रूप वाली है। इसके नेत्र खिले हुए कमल की भाँति हैं। इसके रूप का चिन्तन करने के उपरान्त पाद्य, चन्दन तथा चमेली इत्यादि अनेक पुष्पों से पूजा करके मन्त्र का जप करे। भूतडामर तन्त्र के अनुसार इसका मन्त्र इस प्रकार है–'ॐ ह्रीँ आगच्छ रतिसुन्दरि

स्वाहा'। अन्य मन्त्र मूल में लिखे हैं। उपरोक्त मन्त्र का नित्य एक हजार जप एक महीने तक करे। महीने के अन्त में पूजा करके घी का दीपक, गन्ध, पुष्प, ताम्बूल प्रदान करके पुनः मन्त्र का जप करे। रतिसुन्दरी साधक को दृढ़प्रतिज्ञ जानकर रात्रि में उसके समीप आती है। साधक चमेली के पुष्प की माला से श्रद्धापूर्वक उनकी पूजा करे। रतिप्रिया प्रसन्न होकर प्रीतिदायक भोजन तथा सम्भोग-सुख प्रदान करती है और साधक की भार्या होकर उसको मनोवाञ्छित वर प्रदान करती है। रतिप्रिया साधक के साथ रात्रि बिताकर प्रातः चली जाती है। साधक की आज्ञानुसार वह दिन-प्रतिदिन निश्चित रूप से आती-जाती रहती है। साधक इस देवी को निर्जन स्थान में सिद्ध करे तथा अपनी पत्नी का त्याग करे; अन्यथा उसका विनाश हो जाता है।।१३७-१४५।।

३३. अथ पद्मिनी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ पद्मिनी स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

ॐ आगच्छ पद्मिनी स्वाहा।। (मन्त्रसिद्धभाण्डागार)

ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनी वल्लभे स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं पद्मिनि स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ततोऽन्यत् साधनं वक्ष्ये स्वगृहे शिवसन्निधौ ।
वेदाद्यं भुवनेशी चाऽऽगच्छ पद्मिनि वल्लभा ।।१४६।।
पावकश्च महामन्त्रः पूर्ववत् सकलं ततः ।
मण्डलं चन्दनैः कृत्वा मूलमन्त्रं लिखेत्ततः ।।१४७।।
पद्माननां श्यामवर्णां पीनोत्तुङ्गपयोधराम् ।
कोमलाङ्गीं स्मेरमुखीं रक्तोत्पलदलेक्षणाम् ।।१४८।।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं सहस्रञ्च दिने दिने ।
मासान्ते पूर्णिमां प्राप्य विधिवत् पूजयेन्मुदा ।।१४९।।
आनिशीथं जपं कुर्याद्दृढाभ्यासेन साधकः ।
सर्वत्र कुशलं दृष्ट्वा याति सा साधकालयम् ।।१५०।।

भूत्वा भार्या साधकं हि तोषयेद्विविधैरपि ।
भोग्यद्रव्यैर्भूषणाद्यैः पद्मिनी सा दिने दिने ।।१५१।।
पतिवत् पालयेल्लोके नित्यं स्वर्गे च सर्वदा ।
त्यक्त्वा भार्या भजेत्ताञ्च साधकेन्द्रः सदा प्रियः ।।१५२।।

अब अन्य यक्षिणी की साधना कही जा रही है। साधक अपने घर में या भगवान शिव के मन्दिर में 'ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनि वल्लभे स्वाहा' या मूल में लिखे किसी एक मन्त्र का जप करे। पूर्व की भाँति समस्त पूजा कर्म करके रक्तचन्दन के द्वारा मण्डल अंकित करे तथा उसमें मूल मन्त्र लिखे। तन्पश्चात् पद्मिनी यक्षिणी का ध्यान करे–इनका मुख कमल के समान सुन्दर है। इनके शरीर का रंग साँवला है। इनके दोनों स्तन मांसल, पुष्ट, सुडौल, आकर्षक और ऊँचे हैं। इनका शरीर अत्यधिक कोमल है। इनका मुखमण्डल सदा हास्यपूर्ण रहता है। इनके दोनों नेत्र लाल कमल के समान हैं। इस प्रकार साधक ध्यान करके प्रतिदिन एक हजार मन्त्र का जप करे। एक महीने तक इसी प्रकार जप-पूजा करके महीने के अन्तिम दिन में पूर्णिमा तिथि में विधिवत् पूजन करे तथा अर्धरात्रि तक जप करता रहे। रात्रि में पद्मिनी देवी साधक को दृढ़प्रतिज्ञ जानकर उसके समीप आती है और साधक का सभी प्रकार से कुशल करती हुई उसके घर में उपस्थित होती है। यह पद्मिनी साधक की पत्नी होकर विभिन्न भोज्य पदार्थों एवं आभूषणों आदि के द्वारा साधक को सन्तुष्ट करती है तथा पति के समान पालन करती है। पद्मिनी साधक को स्वर्ग का दर्शन कराती है। साधक अपनी पत्नी को त्याग कर पद्मिनी का प्रिय बने।।१४६-१५२।।

३४. अथ पद्मावती यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

प्राकृतग्रन्थे – ॐ पद्मावति स्वाहा।।

अस्य विधानम्– अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः। पञ्चमे वा दशांशतो होमः। तदा अष्टमहासिद्धीर्ददाति।

प्राकृत ग्रन्थ में पद्मावती का मन्त्र इस प्रकार दिया है–**ॐ पद्मावति स्वाहा।।** इसका विधान इस प्रकार है–इस मन्त्र का बारह लाख जप कर पाचवें दिन या दशांश होम करे तो पद्मावती प्रसन्न होकर साधक को अष्ट महासिद्धियाँ प्रदान करती हैं।

मतान्तरे – नानाचरणपद्मावति स्वाहा।।

अस्य विधानम् – दशलक्षजपः घृतगुग्गुलयुतसेवंतीपुष्पेण दशांशतो होमः तदा प्रसन्ना भवति। अष्टभोगान् प्रतिदिनं ददाति। तण्डुलमाषान्नकलशमापूर्य तदग्रे जपं कुर्य्यात्। यद्दिने कलशेऽन्नं न दृश्यते तदा प्रसन्ना भूत्वा सिद्धिं ददाति।।

अन्य मत से पद्मावती का मन्त्र – नानाचरणपद्मावति स्वाहा।।

इसका विधान– मन्त्र का दश लाख जप करे। जप का दशांश घी, गुग्गुलयुक्त सेवन्ती के पुष्पों से हवन करने पर देवी प्रसन्न होती है। प्रतिदिन आठ भोग प्रदान करती है। एक कलश में चावल तथा उड़द भर कर रखे। साधक उसके आगे जप करे। जिस दिन कलश में भरा हुआ अन्न न दिखाई दे उसी दिन साधक को पद्मावती देवी सिद्धि प्रदान करती है।

मतान्तरे – ॐ नमो धरणीन्द्रे पद्मावति आगच्छागच्छ कार्यं कुरु कुरु (जहाँ भेजूँ वहाँ जावो जो मंगाऊँ सो आन देवो न आन देवो तो श्रीपार्श्वनाथ की आन) सत्यमेव कुरु कुरु स्वाहा।।

अस्य विधानम्–पूर्वाग्निकोणे मुखं वा कार्यम्। कार्तिककृष्ण-त्रयोदशीमारभ्य कार्तिकशुक्ला प्रतिपदा यावत् दिनत्रयं प्रतिदिनं सहस्त्रं जपेत् तदा सिद्धा भवति मनसेप्सितं पदार्थं समानीय साधकाय ददाति।।

इसका विधान – मन्त्र मूल में लिखा है, वहीं देखें। साधक अग्निकोण दिशा में मुख करके समस्त कार्य करे। कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी से कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा तक तीन दिन तक प्रतिदिन एक हजार मन्त्र जप करे। ऐसा करने पर पद्मावती देवी सिद्ध हो जाती है तथा साधक को मनोवाञ्छित पदार्थ लाकर देती है।

इन्द्रजाले – ॐ पद्मावति पद्मकोशे वज्रवज्रांकुशे प्रत्यक्षा भवति।

अस्य विधानम् – अर्द्धरात्रे मृत्तिकामालया अष्टोत्तरसहस्त्रं जपेत्। मृत्तिकापात्रे घृतदीपं प्रज्वाल्य यवोपरि संस्थाप्य तदग्रे जपेत्। एवं कृते एकविंशतितमे दर्शनं ददाति।।

इन्द्रजाल में पद्मावती का मन्त्र – ॐ पद्मावति पद्मकोशे वज्रवज्रांकुशे प्रत्यक्षा भवति।।

इसका विधान – अर्द्धरात्रि में मिट्टी की माला से एक हजार आठ मन्त्र का जप करें। मिट्टी के पात्र में घी का दीपक जलाकर यव के उपर रखकर उसके सम्मुख जप करने पर पद्मावती दर्शन देती है।

३५. अथ अनुरागिणी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं ह्रीं अनुरागिणी मैथुनप्रिये स्वाहा।। (कामरत्नम्)

ॐ अनुरागिणि मैथुनप्रिये यक्षकुलप्रसूते स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं आगच्छ अनुरागिणि स्वाहा।। (मन्त्रसिद्धभाण्डागार)

ॐ ह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा।।

महाविद्यां प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ।
कुङ्कुमेन समालिख्य भूर्जपत्रे स्त्रियं मुदा ।।१५३।।
ततोऽष्टदलमालिख्य कुर्यान्न्यासादिकं प्रिये! ।
जीवन्यासं ततः कृत्वा ध्यायेत्तत्र प्रसन्नधीः ।।१५४।।
शुद्धस्फटिकसङ्काशां नानारत्नविभूषिताम् ।
मञ्जीरहारकेयूररत्नकुण्डलमण्डिताम् ।।१५५।।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं सहस्रन्तु दिने दिने ।
प्रतिपत्तिथिमारभ्य पूजयेत् कुसुमादिभिः ।।१५६।।
धूपदीपविधानैश्च त्रिसन्ध्यं पूजयेन्मुदा ।
पूर्णिमां प्राप्य गन्धाद्यैः पूजयेत् साधकोत्तमः ।।१५७।।
घृतदीपं तथा धूपं नैवेद्यञ्च मनोहरम् ।
रात्रौ च दिवसे जापं कुर्याच्च सुसमाहितः ।।१५८।।
प्रभातसमये याति साधकस्यान्तिकं ध्रुवम् ।
प्रसन्नवदना भूत्वा तोषयेद्रतिभोजनैः ।।१५९।।
देवदानवगन्धर्वविद्याधृग्यक्षरक्षसाम् ।
कन्याभी रत्नभूषाभिः साधकेन्द्रं मुहुर्मुहः ।।१६०।।
चर्व्यचोष्यादिकं सर्वं ध्रुवं द्रव्यं ददाति सा ।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले यद्वस्तु विद्यते प्रिये! ।।१६१।।
आनीय दीयते सत्यं साधकाज्ञानुरूपतः ।
स्वर्णशतं सदा तस्मै सा ददाति दिने दिने ।।१६२।।
साधकाय वरं दत्त्वा याति सा निजमन्दिरम् ।
तस्या वरप्रदानेन चिरञ्जीवी निरामयः ।।१६३।।

सर्वज्ञः सुन्दरः श्रीमान्सर्वगो भवति ध्रुवम् ।
रेमे सार्द्धं तया देवि साधकेन्द्रो दिने दिने ।।१६४।।
तारं माया च गन्धानुरागिणि मैथुनप्रिये! ।
वह्निभार्या मनुः प्रोक्तः सर्वसिद्धिप्रदायकः ।।१६५।।
एषा मधुमती तुल्या सर्वसिद्धिप्रदा प्रिये! ।
गुह्याद्गुह्यतरा विद्या तव स्नेहात् प्रकाशिता ।।१६६।।

अब मैं अन्य यक्षिणी महाविद्या साधना कहता हूँ। भोजपत्र पर कुंकुम के द्वारा स्त्री का चित्र अंकित करके उसके बाहर अष्टदल कमल की रचना करे। न्यासादि कर्म करके चित्र में प्राणप्रतिष्ठा करके साधक प्रसन्न चित्त से यक्षिणी देवी का ध्यान करे। अनुरागिणी देवी की देह कान्ति शुद्ध स्फटिक के समान है, यह अनेक प्रकार के रत्नों व आभूषणों से विभूषित है। देवी नूपुर, हार, केयूर, रत्न, कुण्डलादि से शोभित हैं। इस प्रकार ध्यान करके प्रतिदिन एक हजार मन्त्र जपे। कृष्ण प्रतिपदा तिथि से प्रारम्भ करके पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यादि उपहारों के द्वारा तीनों सन्ध्याओं में यक्षिणी देवी का पूजन करे। इस प्रकार एक महीने तक पूजन एवं मन्त्रजप करे। पूर्णिमा के दिन साधक घी का दीपक जलाकर गन्धादि से पूजन करके धूप तथा श्रेष्ठ नैवेद्य अर्पित करे। इस प्रकार पूजन करके समस्त दिन तथा रात्रि को पुनः मूलमन्त्र का जप करे। प्रातःकाल अनुरागिणी यक्षिणी साधक के समीप आती है तथा सन्तुष्ट होकर साधक को सम्भोगसुख तथा भोज्य पदार्थ प्रदान कर सन्तुष्ट करती है। देवकन्या, दानवकन्या, गन्धर्वकन्या, विद्याधर कन्या, यक्ष कन्या, राक्षस कन्या तथा विविध प्रकार के द्रव्य लाकर साधक को प्रसन्न करती है। अनुरागिणी यक्षिणी साधक को विविध रत्न, भूषण, चर्व्य, चोष्य आदि विविध भक्ष्य द्रव्य प्रतिदिन प्रदान करती है। स्वर्ग, मर्त्य तथा पाताल में जो वस्तुएं विद्यमान हैं, देवी साधक की आज्ञानुसार वह सब लाकर अर्पण करती है। प्रतिदिन सौ सुवर्ण मुद्राएं प्रदान करती है तथा साधक को इच्छित वर प्रदान कर अपने स्थान को जाती है। साधक यक्षिणी की कृपा से चिरंजिवी एवं आरोग्यवान हो जाता है। साधक देवी के वरदान से सर्वज्ञ सुन्दर तथा श्रीमान् होता है। साधक सर्वत्र आने-जाने में समर्थ हो जाता है साधक अनुरागिणी के साथ सुखपूर्वक सम्भोग करता हुआ दिन व्यतीत करता है। 'ॐ ह्रीं गन्धानुरागिणी मैथुनप्रिये स्वाहा' यह अनुरागिणी यक्षिणी का मन्त्र है। यह मन्त्र सर्वसिद्धिप्रदायक है। यह सर्व सिद्धि प्रदान करने वाली मधुमती देवी अत्यन्त ही गुह्य हे देवि! तुम्हारे स्नेह के कारण ही इसे प्रकट किया है।।१५४-१६६।।

३६. अथ स्वर्णरेखा यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ वर्कशाल्मले स्वर्णरेखे स्वाहा।। (उड्डीशतन्त्रम्)

एकलिङ्गं समभ्यर्च्य खण्डकेनातिभाविता ।
पूर्वसंध्यां समारभ्य कृष्णादि सुमतिर्जपेत् ।।१६७।।
सहस्राष्टमितं मासं तदन्ते निशि भोजनम् ।
जपन्तं च पुनर्मन्त्रमर्द्धरात्रे प्रयच्छति ।।१६८।।
दिव्यालङ्करणं देवि निधानं निजमुत्तमम् ।
षण्मासं पूजिता दिव्यदेहं तस्य करोति सा ।।१६९।।

साधक जहाँ एकलिङ्ग महादेव का मन्दिर हो वहाँ जाकर एकाग्र चित्त से भगवान शिव का पूजन करे। कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से प्रातःकाल आठ हजार मन्त्र का नित्य जप करे। साधक रात्रि में भोजन करे तथा पुनः अर्द्धरात्रि में जप करे। एक महीने के पश्चात् पुनः अर्द्धरात्रि में जप करे तो यक्षिणी प्रसन्न होकर अर्द्धरात्रि में आती है और द्रव्य अलंकारादि प्रदान करती है। छः महीने तक पूजन करने पर दिव्यदेह कर देती है।।१६७-१६९।।

३७. अथ प्रमदा यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं प्रमदे स्वाहा।।

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीप्रमदामन्त्रस्य मनुर्ऋषिः गायत्री छन्दः प्रमदा देवता ह्रीं शक्तिः ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे मन्त्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः – ॐ मनुऋषये नमः शिरसि १।। गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे २।। प्रमदा देवतायै नमः हृदि ३।। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ४।। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ५।। इति ऋष्यादिन्यासः।।

करन्यासः – ॐ ह्राँ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १।। ॐ ह्रीं प्रँ तर्जनीभ्यां नमः २।। ॐ ह्रूँ मँ मध्यमाभ्यां नमः ३।। ॐ ह्रैं दँ अनामिकाभ्यां नमः ४।। ॐ ह्रौं स्वाँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५।। ॐ ह्रः ह्राँ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६।। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः – ॐ ह्रां ह्रीं नमः हृदयाय नमः १।। ॐ ह्रीं प्रँ नमः शिरसे स्वाहा २।। ॐ ह्रूँ मँ नमः शिखायै वषट ३।। ॐ ह्रैं दँ नमः कवचाय हुँ ४।। ॐ ह्रौं स्वाँ नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ५।। ॐ ह्रः ह्राँ नमः अस्त्राय फट् ६।। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।।

इस प्रकार न्यास कर ध्यान करे –

ॐ केयूरमुख्याभरणाभिरामां वराभये सन्दधतीं कराभ्याम् ।
संक्रन्दनाद्यामरसेव्यपादां सत्काञ्चनाभां प्रमदां भजामि ।।१७०।।

केयूर आदि समस्त प्रमुख आभूषणों से विभूषित अपने दोनों हाथों में वर तथा अभय मुद्रा धारण करने वाली, इन्द्रादि देवताओं से सेवित पादों वाली, उत्तम सुवर्ण के समान देदीप्यमान कान्ति वाली प्रमदा देवी का मैं ध्यान करता हूँ।।१७०।।

एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले आधारशक्त्यादि परतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति संपूज्य नवपीठशक्तिः पूजयेत्। पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः, ॐ विजयायै नमः, ॐ अजितायै नमः, ॐ अपराजितायै नमः, ॐ नित्यायै नमः, ॐ विलासिन्यै नमः, ॐ दोग्ध्र्यै नमः, ॐ अघोराय नमः, ॐ मंगलायै नमः।।इति पूजयेत्।।

इस प्रकार ध्यान कर सर्वतोभद्र मण्डल में आधारशक्त्यादि परतत्त्वान्त पीठ देवता स्थापित कर **ॐ आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः** इससे आधारशक्ति की पूजा करे तथा नौ पीठशक्तियों की पूर्वादि क्रम से पूजा करे–ॐ जयायै नमः १।। ॐ विजयायै नमः २।। ॐ अजितायै नमः ३।। ॐ अपराजितायै नमः ४।। ॐ नित्यायै नमः ५।। ॐ विलासिन्यै नमः ६।। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७।। ॐ अघोराय नमः ८।। ॐ मंगलायै नमः ९।। इस प्रकार पूजन करे।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च कृत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये प्रमदे एह्येहि नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहना-दिपुष्पान्तैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात्।।

इसके उपरान्त स्वर्णादि से निर्मितं यन्त्र अथवा मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर उसे घृत से लिप्त कर उसके ऊपर दुग्ध की धारा तथा जल की धारा डालकर उसे स्वच्छ वस्त्र से सुखाकर **ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये एह्येहि नमः** इस मंत्र के द्वारा पुष्प, पाद्य, आसन, प्रदान कर पीठ के मध्य में स्थापित कर प्राणप्रतिष्ठा करे। पुनः ध्यान कर मूल मन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पुष्पादि से पूजन कर आवरण पूजा करे।

तथाच षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च - ॐ ह्रां ह्रीं हृदयाय नमः।। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १।। इति सर्वत्र।। ॐ ह्रीं प्रं शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपा० २।। ॐ ह्रूं मँ शिखायै वषट्।। शिखाश्रीपा० ३।। ॐ ह्रैं दें कवचाय हुँ। कवचश्रीपा०४।। ॐ ह्रौं स्वाँ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ॐ ह्रः ह्राँ अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ६।। इति षडंगानि पूजयेत्।।

तथा षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में तथा मध्य दिशाओं इस प्रकार षडंगों की पूजा करे–ॐ ह्राँ ह्रीं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १।। ॐ ह्रीं प्रँ शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः २।। ॐ ह्रूं मँ शिखाय वषट्। शिखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ३।। ॐ ह्रैं दें कवचाय हुँ। कवचश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ४।। ॐ ह्रौं स्वाँ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयाय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ५।। ॐ ह्रः ह्राँ अस्त्राय फट्। अस्त्र- श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य –

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।

पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् –

इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्।। इति प्रथमावरणम्।।१।।

यह पढ़कर तथा पुष्पांजलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहें।। इति प्रथमावरणम्

ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च ॐ सुनन्दायै नमः सुनन्दा श्रीपा० १।। ॐ चन्द्रिकायै नमः, चन्द्रिका श्रीपा० २।। ॐ हासायै नमः। हासाश्रीपा० ३।। ॐ सुलापायै नमः। सुलापाश्रीपा० ४। ॐ मदविह्वलायै नमः। मदविह्वलाश्रीपा० ५। ॐ आमोदायै नमः। आमोदाश्रीपा० ६। ॐ प्रमोदायै नमः। प्रमोदाश्रीपा० ७।। ॐ वसुदैन्यकायै नमः। वसुदैन्यकाश्रीपा० ८।। इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इसके उपरान्त दश दलों में पूज्य तथा पूजक के अन्तराल में प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से वामावर्त से ॐ सुनन्दायै नमः। सुनन्दा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १।। ॐ चन्द्रिकायै नमः चन्द्रिका श्रीपा० २।। ॐ हासायै नभः हासा श्रीपा० ३।। ॐ सुलापायै नमः सुलापाश्रीपा० ४।। ॐ मदविह्वलायै नमः मदविह्वलाश्रीपा० ५।। ॐ आमोदायै नमः आमोदा श्रीपा० ६।। ॐ प्रमोदायै नमः प्रमोदा श्रीपा० ७।। ॐ वसुदैन्यकायै नमः वसुदैन्यकाश्रीपा० ८।।
इससे पूजन करके पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। इति द्वितीयावरण।।२।।

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

इसके पश्चात् भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा वज्रादि आयुधों का पूजन करके पुष्पांजलि प्रदान करे।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारान्तं संपूज्य जपं कुर्यात्।।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से नमस्कार पर्यन्त पूजन करके जप करे।।

अस्य पुरश्चरणं षट्लक्षजपः। जपदशांशतो घृतहोमः।। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति।। सिद्धे मंत्रे मंत्री पुनर्निर्जने कानने रात्रौ प्रतिदिनमयुतं जपेत्।। पायसेन प्रतिदिनं दशांशतो होमः। तदा त्रिसप्तदिवसे आगत्येष्टं ददाति।। तथाच– रसलक्षं जपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयाद्धृतैः। निर्जने कानने रात्रावयुतं नियतं जपेत्।। सहस्त्रं पायसान्नेन हुत्वा शयनमाचरेत्। त्रिसप्तदिवसं यावदेवमाचरतो निशि। देवी दृग्गोचरा भूयाद्दद्यादिष्टानि मंत्रिणे।।

इसका पुरश्चरणः छः लाख है। जप का दशांश घी से होम करे। इस प्रकार करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। मंत्र सिद्ध होने पर साधक पुनः निर्जन वन में रात्रि में मन्त्र का प्रतिदिन दश हजार जप करे। खीर से प्रतिदिन दशांश होम करे। इस प्रकार सैंतीसवें दिन यक्षिणी आकर साधक को इच्छित पदार्थ प्रदान करती है। मंत्र का छः लाख जप करे, जप का दशांश घी से हवन करे। निर्जन वन में रात्रि में दश हजार मंत्र का जप करे। खीर से एक हजार होम करे तथा वहीं पर शयन करे। सैंतीसवें दिन रात्रि में साधक को यक्षिणी दिखाई देती है तथा उसको मनोवाँछित वर प्रदान करती है।

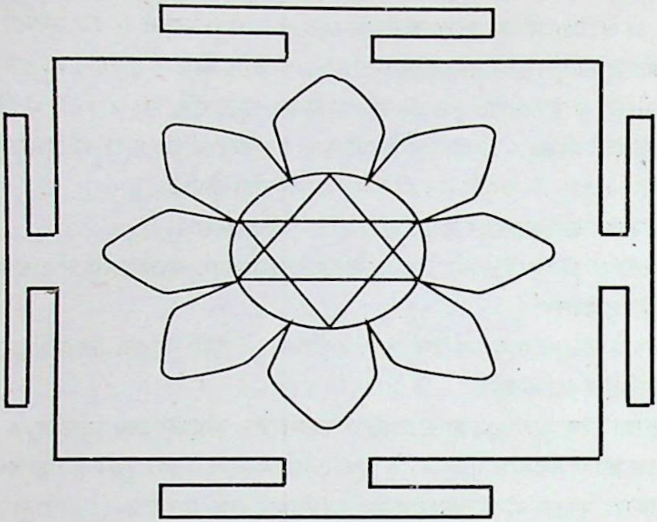

३८. अथ प्रमोदा यक्षिणी मन्त्र साधनम्

ॐ ह्रीं प्रमोदायै स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्, किंकिणीतन्त्रम्)

ह्रीं प्रमोदे स्वाहा।। (मंत्रमहोदधि)

अर्द्धरात्रे समुत्थाय सहस्त्रं प्रजपेन्मनुम् ।
मासमेकं ततो देवी निधिं दर्शयति ध्रुवम् ।।१७१।।

साधक प्रमोदा यक्षिणी का मन्त्र अर्द्धरात्रि में उठकर एक हजार बार जप करे। ऐसा एक महीने तक नियमित करने पर यक्षिणी देवी साधक को निधि का दर्शन कराती है।।१७१।।

३९. अथ नखकेशिका यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं नखकेशिके कनकावति स्वाहा।। (किंकिणीतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं नखकेशिके स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

गत्वा यक्षगृहे मन्त्री नक्ताशी प्रजपेन्मनुम् ।
एकविंशे दिने जाते कुर्यात्पूजां यथाविधि ।।१७२।।

आवर्तयेत्ततो मन्त्रमेकचित्तोऽतिसंयतः ।
निशार्द्धे वाञ्छितं कामं देवी प्रयच्छति ।।१७३।।

साधक यक्षगृह में जाकर नखकेशिका का मन्त्र जप करे! इक्कीस दिनों तक रात्रि में विधिवत् पूजा करके संयत तथा एकाग्रचित्त से नखकेशिका का पांच हजार मन्त्र जप करे। यक्षिणी अर्द्धरात्रि में साधक को वाञ्छित पदार्थ प्रदान करती है।।१७२-१७३।।

४०. अथ भामिनी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं यक्षिणि भामिनि रतिप्रिये स्वाहा।। (उड्डामरेश्वरतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं महायक्षिणि भामिनि प्रिये स्वाहा।। (प्राकृत ग्रन्थ)

दिनत्रयमनाहारी सोमसूर्यग्रहे सति ।
स्पर्शाद् विमुक्तिपर्यन्तं जपेत् तद्गतमानसः ।।१७४।।
ततः प्रसन्ना सा देवी यच्छत्यञ्जनमुत्तमम् ।
तेनाञ्जितो नरोऽदृश्यं निधिं पश्यति भूगतम् ।।१७५।।

साधक तीन दिन तक विना भोजन के रहकर चन्द्रमा एवं सूर्य के ग्रहण में स्पर्श से मुक्ति तक यक्षिणी का ध्यान करते हुए मन्त्र का जप करे। इससे प्रसन्न होकर यक्षिणी साधक को अञ्जन प्रदान करती है। उसको आँखों में लगाने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है तथा उसे पृथिवी में छिपी हुई निधि दिखाई देती है।।१७४-१७५।।

४१. अथ स्वर्णावती यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ स्वर्णावति स्वाहा।।

वटवृक्षतले कृत्वा चन्दनेन सुमण्डलम् ।
यक्षिणीं पूजयित्वा तु नैवेद्यमुपदर्शयेत् ।।१७६।।
शशमांसं घृतं क्षीरं मन्त्रमावर्तयेत्ततः ।
दिने दिने सहस्रैकं यावत्सप्तदिनं भवेत् ।।१७७।।
अथागत्य सदा तस्मै मन्त्रमञ्जनमुत्तमम् ।
यत्प्रभावान्तरे सर्वं पश्येन्निधिमशङ्कितः ।।१७८।।

साधक वट (बरगद) वृक्ष के नीचे जाकर रक्तचन्दन के द्वारा मण्डल का निर्माण करे तथा यक्षिणी की पूजा करके खरगोश का माँस, घी, खीर का नैवेद्य प्रदान करे और स्वर्णावती यक्षिणी का मन्त्र जप करे। साधक ऐसा सात दिन तक करे। स्वर्णावती सातवें

दिन आकर साधक को उत्तम अञ्जन प्रदान करती है, जिसके प्रभाव से साधक निःसन्देह रूप से पृथिवी की सम्पूर्ण निधि को देख लेता है।।१७६-१७८।।

४२. अथ महायक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं श्रीं महायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः।। (दत्तात्रेयतंत्रम्)

ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ओं श्रीं महायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः श्रीं क्लीं ऐं ओं स्वाहा।।

आषाढ़पूर्णिमायां तु कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः ।
सितेज्यवारेऽमौढ्ये तु साधयेद्यक्षिणीं नरः ।।१७९।।
प्रतिपद्दिनमारभ्य श्रावणेन्दुबलान्विते ।
मासमात्रप्रयोगस्य निर्विघ्नेन विधिं चरेत् ।।१८०।।
निर्जने बिल्ववृक्षस्य मूले कुर्याच्छिवार्चनम् ।
उपचारैः षोडशीभी रुद्रपाठसमन्वितम् ।।१८१।।
त्र्यम्बकेत्यस्य मन्त्रस्य जपं पञ्चसहस्त्रकम् ।
दिवसे दिवसे कृत्वा कुबेरस्य च पूजनम् ।।१८२।।
यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरप्रियबान्धव ।
एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीं कुरुते नमः ।।१८३।।
इति मन्त्रं कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम् ।
ब्रह्मचर्येण मौनेन हविष्याशी भवेद्दिवा ।।१८४।।
रात्रेस्तु मध्यमे यामे विनिद्रो मितभोजनः ।
बिल्ववृक्षं समारुह्य जपेन्मन्त्रमिमं सदा ।।१८५।।
मूलमन्त्रस्य च जपं सहस्त्रत्रयसंमितम् ।
कुर्याद्बिल्वसमारूढो मासमात्रमतन्द्रितः ।।१८६।।
मध्वामिषबलिं तत्र कल्पयेत्संस्कृतं पुरः ।
यक्षिणी बहुरूपा तु क्वचित्तत्रागमिष्यति ।।१८७।।
तां दृष्ट्वा न भयं कुर्य्याज्जपसंसक्तमानसः ।
यस्मिन्दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत् ।।१८८।।
तदौ वरान् वै वृणुयात्तांस्तान्वै मनसेप्सितान् ।
चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात्सर्वं दद्यान्न संशयः ।।१८९।।

धनमानयितुं ब्रूयादथवा कर्णवार्तिकाम् ।
भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा ।।१९०।।
भूतानानयितुं वाऽपि स्त्रियमानयितुं तथा ।
राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विद्यां यशोबलम् ।।१९१।।
एतदन्यद्यदीप्सेत साधकस्तत्तु याचयेत् ।
सिद्धे धनादिके चैव सदा सत्कर्म आचरेत् ।
कुकर्मणि व्ययश्चेत् स्यात् सिद्धिर्गच्छति चाऽन्यथा ।।१९२।।

साधक आषाढ़ पूर्णिमा के दिन क्षौरादि कर्म करके गुरु तथा शुक्र के उदय में यक्षिणी की साधना करे। चन्द्रमा के बलवान होने पर श्रावण कृष्ण प्रतिपदा से यक्षिणी की साधना करे तथा एक महीने में निर्विघ्न रूप से सम्पन्न करे, यह भी किसी-किसी विद्वान् का मत है। निर्जन वन में बेल के वृक्ष के मूल (जड़) में बैठकर शिवजी का षोडशोपचार से रुद्रपाठ के साथ पूजन करे। **ॐ त्रम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।** इस मन्त्र का पांच हजार जप कर प्रतिदिन कुबेर जी का पूजन करे। शिवजी के प्रिय बन्धु हे यक्षराज! आपको प्रणाम हो। कृपा करके एक यक्षिणी को मेरे अधीन कर दो। इस प्रकार इस मन्त्र का एक सौ आठ बार मौन धारण कर ब्रह्मचर्यपूर्वक दिन में हविष्याशी होकर जप करे। अर्द्धरात्रि में निद्रा को त्याग कर अल्पाहार करके बेलवृक्ष के मूल में आसन लगाकर मूल का जप करे। किसी एक मूल मन्त्र का साधक तीन हजार बार जप करे। ऐसा एक महीने तक करे। मदिरा माँस की बलि प्रदान करे। बलि को अपने पास पहले से ही लाकर रख लेना चाहिए। न जाने कब अनेक रूपों को धारण करनेवाली यक्षिणी वहाँ आ जाए। साधक यक्षिणी को देखकर भयभीत न हो, अपितु निर्भयता से मन्त्र जप करता रहे। जब महायक्षिणी वर देने को प्रस्तुत हो तो साधक इच्छानुसार वर मांग ले। यक्षिणी प्रसन्न होकर निःसन्देह सभी कुछ प्रदान कर देती है। साधक धन की इच्छा हो तो धन माँगे। भोग की इच्छा हो तो भोग माँगे, नृत्य की कला विद्या को माँगना हो तो वह भी उनसे मांग ले। भूतों को प्रत्यक्ष दिखा देना, अभीष्ट स्त्री को ला देना, राजा को वश में करने की शक्ति अथवा आयु, विद्या, यश, बल आदि जो भी इच्छा हो उस वर को साधक माँग ले। सिद्ध होने पर यक्षिणी सभी कुछ प्रदान करती है। यदि यक्षिणी सिद्ध होकर धनादि प्रदान करे तो उसे सत्कर्म में ही व्यय करे। कुकर्म में व्यय करने पर सिद्धि की हानि होती है।।१७९-१९२।।

४३. अथ चन्द्रद्रवा यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं नमश्चन्द्रद्रवे कर्णाकर्णकारणे स्वाहा।। (शिवार्चनचन्द्रिका)

ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रयोगिने स्वाहा।। (अस्य पुरश्चरणं लपजपः)

वटवृक्ष समारुह्य लक्षमेकं जपेन्मनुम् ।
मन्त्रिते सप्तभिर्मन्त्री कांजिके क्षालयेन्मुखम् ।।१९३।।
यामद्वयं जपेद्रात्रौ वरं यच्छति यक्षिणी ।
रसं रसायनं दिव्यं क्षुद्रकर्माण्यनेकधा ।।
सिद्धानि सर्वकार्याणि नान्यथा शङ्करोदितम् ।।१९४।।

साधक वटवृक्ष के ऊपर बैठकर एक लाख मन्त्र का जप करे। साधक मूलमन्त्र से कांजी को सात बार अभिमन्त्रित कर उससे मुख को धोए। साधक रात्रि दो प्रहर तक मन्त्र का जप करे। यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को दिव्य रस एवं रसायन प्रदान करती है। सिद्ध होने पर साधक के सभी कार्य करती है–ऐसा भगवान् शंकर ने कहा है।।१९३–१९४।।

४४. अथ धनदापिप्पलयक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ऐँ क्लीँ धनं कुरु कुरु स्वाहा।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धनं कुरु कुरु स्वाहा।।

अश्वत्थवृक्षमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
धनदां यक्षिणीं चैव धनं प्राप्नोति मानवः ।।१९५।।

अयुतं जपेत्सिद्धिः।

ॐ ह्राँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नमः ।।
अश्वत्थाधो द्वात्रिंशत्सहस्त्रं जपेत् ।
दधि दुग्धं च नैवेद्यं दत्त्वा सिद्धो भवति ।।१९६।।
ततो भूतप्रेतपिशाचादयो वश्या भवन्ति ।
सेवां कुर्वन्ति यक्षिण्यधिपतिर्भवति ।।१९७।।

साधक एकाग्र चित्त होकर पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर मन्त्र का जप करे। ऐसा करने पर धनदा पिप्पलयक्षिणी साधक को धन प्रदान करती है।।

साधक बत्तीस हजार मन्त्र का जप पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर करे। दूध, दही तथा नैवेद्य प्रदान करने पर यक्षिणी सिद्ध होती है। भूत, प्रेत, पिशाचादि साधक के वश में होकर उसकी सेवा करते हैं। साधक यक्षिणियों का अधिपति होता है।।१९५-१९७।।

४५. अथ पुत्रप्रदयक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्राँ ह्रीँ हूँ पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

ॐ ह्रीँ ह्रीँ हूँ रँ कुरु कुरु स्वाहा।। (उड्डीशतन्त्रम्)

चूतवृक्षं समारुह्य जपेदेकाग्रमानसः ।
अपुत्रो लभते पुत्रं नाऽन्यथा मम भाषितम् ।।१९८।।

पुत्र चाहने वाला साधक आम के वृक्ष पर चढ़कर एकाग्रचित्त होकर मन्त्र का जप करे तो निश्चित ही पुत्र की प्राप्ति होती है।।१९८।।

इस प्रयोग में मन्त्र का दश हजार जप करे।

४६. अथ अशुभक्षयकरी धात्रीयक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ऐँ क्लीँ नमः।। दत्तात्रेयतन्त्र

धात्रीमूलसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
अशुभक्षयकारिण्या यक्षिण्यामनुमुत्तमम् ।।१९९।।

अयुतं जपेत्।।

ॐ ऐँ क्लीँ नमः।। इस मन्त्र का साधक आंवला वृक्ष के मूल में बैठकर एकाग्र चित्त से अशुभक्षयकारिणी यक्षिणी का दश हजार मन्त्र जप करने पर सिद्धि प्राप्त होती है।।१९९।।

४७. अथ विद्यादात्र्युदुंबरयक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीँ श्रीँ शारदायै नमः।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

औदुंबरसमारुढो जपेदेकाग्रमानसः ।
लभेत्पुस्तकसंसिद्धिं सर्वविद्याश्चतुर्दश ।।२००।।

अयुतं जपेत्।।

साधक गूलर के वृक्ष पर चढ़कर एकाग्रचित्त से यक्षिणी का मन्त्र जप करे तो विद्या की सिद्धि होती है तथा सभी चौदह विद्याओं में सिद्धि प्राप्त होती है।।२००।।

४८. अथ विद्यादात्री निर्गुण्डी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ सरस्वत्यै नमः।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

निर्गुण्डीमूलमारूढ़ो जपेदेकाग्रमानसः ।
विद्याप्राप्तिर्भवेन्नित्यं नान्यथा शंकरोदितम् ।।२०१।।

अयुजं जपेत्।।

साधक निर्गुण्डी वृक्ष के मूल में बैठकर एकाग्र चित्त से यक्षिणी का मन्त्र जप करे। इससे साधक को विद्या की प्राप्ति होती है। ऐसा भगवान् शंकर ने कहा है।।२०१।।

४९. अथ जयायक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ऐं महायक्षिण्यै सर्वकार्यसाधनं कुरु कुरु स्वाहा।। (मन्त्रसिद्धभाण्डागार)

जयं कुरु कुरु स्वाहा।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

ॐ ऐं जयायक्षिण्यै सर्वकार्यसाधनं कुरु कुरु स्वाहा।। (उड्डीशतन्त्रम्)

अर्कमूले समारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
यक्षिणी च जया नाम सर्वकार्यकरी मता ।।२०२।।

साधक द्वारा आक वृक्ष की जड़ के ऊपर बैठकर मूलमन्त्र का जप करने पर जया नामक यक्षिणी सिद्ध होकर समस्त कार्य करती है।।२०२।।

५०. अथ संतोषा श्वेतगुंजा यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ जगन्मात्रे नमः।

श्वेतगुञ्जासमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
संतोषाख्या यक्षिणी तु ददाति वाञ्छितं फलम् ।।२०३।।

साधक द्वारा श्वेत गुञ्जा पर बैठकर एकाग्र चित्त से सन्तोषा यक्षिणी का दश हजार मन्त्र का जप करने पर यक्षिणी मनोवांछित फल प्रदान करती है।।२०३।।

५१. अथ राज्यदा तुलसी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ क्लीं क्लीं नमः।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

तुलसीमूलमारूढ़ो जपेदेकाग्रमानसः ।
अकस्माद्राज्यमाप्नोति नान्यथा शंकरोदितम् ।।२०४।।

साधक तुलसी वृक्ष के मूल में बैठकर एकाग्रचित्त से मन्त्र का दश हजार जप करे। ऐसा करने पर तुलसी यक्षिणी साधक को अकस्मात् राज्य प्रदान करती है, ऐसा भगवान् शिव ने कहा है।।२०४।।

५२. अथ राज्यदांकोलयक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रौं नमः।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

अंकोलवृक्षमारूढ़ो जपेदेकाग्रमानसः ।
राजाधिराजो भवति नान्यथा शंकरोदितम् ।।२०५।।

साधक अंकोल वृक्ष के ऊपर बैठकर एकाग्र चित्त से यक्षिणी का दश हजार मंत्र जप करे। ऐसा करने पर साधक राजाधिराज होता है, यह भगवान् शंकर ने कहा है।।२०५।।

५३. अथ कुशयक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ वाङ्मयायै नमः।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

कुशमूलसमारूढ़ो जपेदेकाग्रमानसः ।
सर्वकार्याणि सिद्ध्यन्ति नान्यथा शंकरोदितम् ।।२०६।।

साधक कुशमूल में बैठकर एकाग्र चित्त से कुश यक्षिणी का दश हजार मन्त्र जप करे। ऐसा करने पर सभी कार्य करने वाली यक्षिणी सिद्ध हो जाती है। यह भगवान् शिव ने कहा है।।२०६।।

५४. अथ अपामार्ग यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं भारत्यै नमः।। (दत्तात्रेयतन्त्रम्)

अपामार्गसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
वाचां सिद्धिर्भवेत्सत्यं नान्यथा शंकरोदितम् ।।२०७।।

साधक अपामार्ग के वृक्ष पर बैठकर एकाग्र चित्त से यक्षिणी मन्त्र का दश हजार जप करे। इस प्रकार करने पर साधक को वाक् सिद्धि प्राप्त हो जाती है, यह भगवान् शिव ने कहा है।।२०७।।

५५. अथ क्षीरार्णवा यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ नमो ज्वालामाणिक्यभूषणायै नमः।। (प्राकृत ग्रन्थ)

निजगृहे द्वारवेदिकायां स्थित्वा रात्रौ पञ्चदशशतं जपेत्। दशदिनांतरे प्रसन्ना भवति घृतक्षीरदधिकदलीफलानि ददाति ।।२०८।।

साधक अपने घर के द्वार की **वेदिका में बैठकर रात्रि में पन्द्रह सौ** मन्त्र का जप करे। दश दिन में यक्षिणी साधक के ऊपर प्रसन्न होकर घी, दूध, दही तथा केला प्रदान करती है।।२०८।।

५६. अथ उच्छिष्टयक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ जगत्त्रयमातृके पद्मनिभे स्वाहा।। (प्राकृत ग्रन्थ)

जगत्त्रयमातृके पद्मनिभे स्वाहा।। (मतान्तरे)

अनेन मन्त्रेण सर्वावस्थायां पञ्चविंशतिसहस्त्रं प्रतिदिनं जपेत्। प्रसन्ना भवति अन्नवस्त्रेण परिपूर्णं करोति।।२०९।।

साधक इस मन्त्र का शुद्ध-अशुद्ध सभी अवस्था में प्रतिदिन पचीस हजार जप करे। इससे यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को अन्न एवं वस्त्र से परिपूर्ण करती है।।२०९।।

५७. अथ चन्द्रामृत यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ गुलुगुलु चन्द्रामृतमयि अवजालितं हुलुहुलु चन्द्रनीरे स्वाहा।। (प्राकृत ग्रन्थ)

गृहे वारण्ये एकान्ते लक्षमेकं जपेन्मनुम् ।
पुष्पधूपादिभिः पूजां नित्यं कुर्य्यात्प्रयत्नतः ।।२१०।।
पञ्चामृतैर्दशांशेन हुते देवी प्रसीदति ।
दीनाराणां सहस्त्रैस्तु प्रत्यहं तोषयेत्सती ।।२११।।

साधक घर में, वन में या किसी एकान्त स्थान में मन्त्र का एक लाख जप करे। पुष्प, धूपादि से नित्य प्रयत्नपूर्वक पूजा करे तथा दशांश पञ्चामृत से हवन करे। ऐसा करने पर देवी प्रसन्न होकर साधक को प्रतिदिन एक हजार स्वर्ण मुद्राएं प्रदान कर सन्तुष्ट करती है।।२१०-२११।।

५८. अथ स्वामीश्वरी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं आगच्छ स्वामीश्वरि स्वाहा।। (प्राकृत ग्रंथ)

एकांते तु शुचौ देशे त्रिसंध्यं त्रिसहस्त्रकम् ।
मासमेकं जपेन्मंत्रं ततः पूजां समारभेत् ।।२१२।।
पुष्पधूपादिनैवेद्यैः प्रदीपैर्घृतपूरितैः ।
रात्रावभ्यर्चयेत्सम्यक्सुस्थिरः सुमनाः सुधीः ।।२१३।।
अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ।
रसं रसायनं दिव्यं वस्त्रालंकारभूषणम् ।।२१४।।

साधक एकान्त एवं पवित्र स्थान में स्वामीश्वरी यक्षिणी के मन्त्र का तीन संध्याओं में तीन हजार जप करे। एक महीने तक साधक मन्त्र का जप करे। महीने के अन्त में बुद्धिमान साधक पुष्प, धूप, नैवेद्य तथा घी के दीपक से रात्रि में शान्त एवं

एकाग्रचित्त से पूजन कर मन्त्र का जप करे। यक्षिणी देवी अर्द्धरात्रि में आकर साधक को रस, रसायन एवं दिव्य वस्त्र, आभूषण प्रदान करती है।।२१२-२१४।।

५९. अथ महामाया यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ नमो महामाया महाभोगदायिनी हुँ स्वाहा।। (प्राकृत ग्रन्थ)

पञ्चसहस्त्रं प्रतिदिनं जपेत्। मिष्टान्नं भुक्त्वा पंचमे वा घृतं च तेन दशांशतो होमः। ततो देवी प्रसन्ना भवति वरं ददाति सर्वस्त्रियः स्वस्त्री वा वश्या भवति राजमान्यो वश्यो भवति नृपतिश्च पंचमुद्राः प्रतिदिनं ददाति।।२१५।।

साधक प्रतिदिन मन्त्र का पांच हजार जप करें इससे देवी प्रसन्न होती है। पांचवे दिन साधक मिठाई या घी खाकर जप का दशांश का होम करें। देवी प्रसन्न होकर साधक को वर देती है। साधक सभी स्त्रियों, अपनी स्त्री, राजपुरुषों तथा नृपतियों को वश में करने में समर्थ हो जाता है। यक्षिणी साधक को प्रतिदिन पांच मुद्राएं प्रदान करती है।।२१५।।

६०. अथ त्यागी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

अहो त्यागि महात्यागि अर्थं देहि मे वित्तं वीरसेवितं ह्रीं स्वाहा।। (शिवार्चनचन्द्रिका)

ॐ अहो त्यागि मम त्यागार्थं देहि मे वित्तं वीरसेवितं स्वाहा।।

चतुर्लक्षमिमं मन्त्रं जपेत्त्यागी प्रसीदति ।
ददाति चिंतितानर्थांस्तस्मै भोगाश्च मंत्रिणे ।।२१६।।

साधक त्यागी यक्षिणी का मंत्र चार लाख बार जपे। इससे त्यागी यक्षिणी प्रसन्न होती है तथा साधक को उसके चिंतित भोग प्रदान करती है।।२१६।।

६१. अथ सर्वाङ्ग सुलोचना यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ कुवलये हिलि हिलि कुरु कुरु सिद्धिं सिद्धेश्वरि ह्रीं स्वाहा।। (शिवार्चनचन्द्रिका)

लक्षत्रयं जपेन्मन्त्रं दशांशं गुग्गुलं हुनेत् ।
लाक्षामुत्पलकं वाथ ध्यात्वा सर्वाङ्गलोचनाम् ।।२१७।।
पट्टीपट्टे वा संलिख्य होमांते चित्रिता सदा ।।२१८।।

साधक सर्वांग सुलोचना मन्त्र का तीन लाख जप करे। जप का दशांश गुग्गुल के द्वारा हवन करे। सर्वांगसुलोचना का पट्टी या पट्ट में चित्र लिखकर ध्यान करते हुए लाख या कमल के द्वारा हवन करे।।२१७-२१८।।

६२. अथ भूतलोचना यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ भूते सुलोचने ल्वम्।। (प्राकृत ग्रंथ)

लक्षमुत्पलशाकोत्थं हुत्वा मंत्रमिमं जपेत् ।
लक्षैकादशमावर्त्य हुत्वा मध्ये शशिग्रहे ।।२१९।।
अथवा मालतीपुष्पैर्हुत्वा भानुसहस्रकम् ।
भानुभुक्ते भवेद्यावत्पूर्णांते सिद्ध्यति ध्रुवम् ।
सहस्रं तु जपाद्यन्ते सहस्राणां तु भोजनम् ।।२२०।।

साधक एक लाख कमल का हवन करके चन्द्रग्रहण में मंत्र का १२ लाख जप करें अथवा मालती के फूलों से सूर्यग्रहण में १२ हजार होम करें जब ग्रहण से सूर्य का मोक्ष होता है तब मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद साधक एक हजार बार जप करें तो एक हजार मनुष्यों को भोजन प्राप्त होता है।।२१९-२२०।।

६३. अथ जलपाणिनी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं जलपाणिनि ज्वल ज्वल हुँ ल्बुं स्वाहा।। (प्राकृत ग्रंथ)

शाकपीयूषपयः सक्तुभक्षः श्वेततमासने ।
देवतां पूजयेन्नित्यं जपेल्लक्षत्रयोदशम् ।।२२१।।
पायसं होमयेत्पश्चात्सहस्रेणैव सिद्ध्यति ।
नित्यं लोकसहस्रस्य भोजनं सा प्रयच्छति ।
लक्षायुर्दिव्यवस्त्राणि दत्ते सा शङ्करोदितम् ।।२२२।।

शाक, पीयूष, दुग्ध तथा सत्तू का भक्षण करके साधक श्वेत आसन पर नित्य यक्षिणी का पूजन कर तेरह लाख मंत्र का जप करे। खीर से एक हजार होम करे। ऐसा करने पर यक्षिणी सिद्ध होती है तथा नित्य एक हजार मनुष्यों का भोजन प्रदान करती है। साधक को दिव्य वस्त्र प्रदान करती है। साधक एक लाख वर्ष तक जीवित रहता है, ऐसा भगवान् शिव ने कहा है।।२२१-२२२।।

६४. अथ मातंगेश्वरी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं ॐ क्लीं नमो मातंगेश्वरि नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मातंगेश्वर्यै नमो नमः।। (प्राकृत ग्रंथ)

घृतदीपसंमुखे लक्षं जपेत्। तद्दशांशतो होमः। प्रसन्ना भवति स्त्रीभावे स्त्रीराजलक्ष्मी-महिषीत्याद्यभीष्टजातं ददाति।।२२३।।

साधक घी के दीपक के समक्ष मन्त्र का एक लाख जप करे। जप का दशांश होम करे। मातंगेश्वरी स्त्रीभाव से प्रसन्न होती है तथा स्त्री, राजलक्ष्मी एवं राजमहिषी व अभीष्ट साधक को प्रदान करती है।।२२३।।

६५. अथ विद्या यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा।। (प्राकृत ग्रंथ)

पञ्चविंशतिसहस्त्रं जपेत्। पञ्चमे वा दशांशतो होमस्तदा विद्या प्राप्ता भवति।।२२४।।

साधक मन्त्र का पचीस हजार जप करे। पांचवें दिन जप का दशांश होम करे तो विद्या की प्राप्ति होती है।।२२४।।

६६. अथ हटेलेकुमारी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ नमो हटेलेकुमारि स्वाहा।। (प्राकृत ग्रन्थ)

द्विसहस्त्रं प्रतिदिनं जपेत्। ततः सप्तदिनांतरे बंधमुक्तो भवति। दुग्धाज्येन दशांशतो होमं कुमारीभोजनं च कुर्यात्। तदा प्रसन्ना भवति।।२२५।।

साधक प्रतिदिन मन्त्र का दो हजार जप करे। सात दिन के पश्चात् साधक बंधन से मुक्त होता है। दुग्ध तथा घी से जप का दशांश होम करे और कुमारी-भोजन कराए। इससे यक्षिणी प्रसन्न होती है।।२२५।।

६७. अथ बंदी यक्षिणी मन्त्रसाधनम्

ॐ हिलि हिलि बन्दी देव्यै स्वाहा।। (मन्त्रमहोदधि)

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीबंदीमंत्रस्य भैरव ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः बन्दी देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।।

ऋष्यादिन्यास- ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि १।। त्रिष्टुप् छंदसे नमः मुखे २।। बन्दी देवतायै नमः हृदि ३।। विनियोगाय नमः सर्वांगे ४।। इति ऋष्यादि न्यासः।

करन्यासः- ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १।। हिलि तर्जनीभ्यां नमः २।। हिलि मध्यमाभ्यां नमः ३।। बंदी अनामिकाभ्यां नमः ४।। देव्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५।। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६।। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः- ॐ हृदयाय नमः १।। ॐ हिलि शिरसे स्वाहा २।। ॐ हिलि शिखायै वषट् ३।। ॐ बन्दी कवचाय हुँ ४।। ॐ देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५।। ॐ नमः अस्त्राय फट् ६।। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।।

ध्यानम्

सतोयपाथोदसमानकांतिमंभोजपीयूषकरीरहस्ताम् ।
सुराङ्गनासेवितपादपद्मां भजामि बंदीं भवबन्धमुक्तये ।।२२६।।

जलधर मेघ के समान कान्ति वाली, हाथों में कमल एवं अमृतकलश धारण किए हुए तथा देवाङ्गनाओं के द्वारा सेवित चरणों वाली बन्दी देवी का बन्धन से मुक्ति पाने के लिए मैं ध्यान करता हूँ।।२२६।।

एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले आधारशक्त्यादिपरत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः संपूज्य जपादिनवशक्तीः पूजयेत्।

इस प्रकार ध्यान कर सर्वतोभद्र मण्डल में 'आधारशक्त्यादि परत्त्वांतपीठ देवताभ्यो नमः' मन्त्र से पीठ देवता की पूजा कर जपादि नौ शक्तियों की पूजा करे।

तत्र क्रम।। पूर्वादि क्रमेण - ॐ जयायै नमः १।। ॐ विजयायै नमः २।। ॐ अजितायै नमः ३।। ॐ अपराजितायै नमः ४।। ॐ नित्यायै नमः ५।। ॐ विलासिन्यै नमः ६।। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७।। ॐ अघोराय नमः ८।। ॐ मंगलायै नमः ९।।

इनका क्रम इस प्रकार है। सर्वप्रथम पूर्वादि क्रम से- ॐ जयायै नमः १।। ॐ विजयायै नमः २।। ॐ अजितायै नमः ३।। ॐ अपराजितायै नमः ४।। ॐ नित्यायै नमः ५।। ॐ विलासिन्यै नमः ६।। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७।। ॐ अघोराय नमः ८।। ॐ मंगलायै नमः९।।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये बंधे एह्येहि नमः' इति मंत्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यात्वा पाद्यादि

पुष्पान्तैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात्।।

इसका अनुवाद वटयक्षिणी प्रसंग में दिया जा चुका है, वहीं देखें।

तत्र क्रमः षट्कोणकेसरेषु अग्न्यादिक्रमेण मध्ये दिक्षु च।।

षट्कोण केसरों में तथा आग्नेयादि चारो दिशाओं एवं मध्य दिशाओं में -

ॐ हृदयाय नमः १।। हिलि शिरसे स्वाहा २।। हिलि शिखायै वषट् ३।। बन्दी कवचाय हुँ ४।। देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५।। स्वाहाऽस्त्राय फट् ६।। इति षडंगानि पूजयेत्।।

उपरोक्त प्रकार से षडंग पूजा करे।

ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च-

ॐ काल्यै नमः १।। ॐ तारायै नमः २।। ॐ भगवत्यै नमः ३।। ॐ कुब्जायै नमः ४।। ॐ शीतलायै नमः ५।। ॐ त्रिपुरायै नमः ६।। ॐ मातृकायै नमः ७।। ॐ लक्ष्म्यै नमः ८।। इत्यष्टौ मातृकाः पूजयेत्।

इसके पश्चात् अष्टदलों में पूज्य तथा पूजक के अन्तराल में प्राची तथा अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से वामावर्त आठ मातृकाओं का पूजन करे।

ॐ काल्यै नमः १।। ॐ तारायै नमः २।। ॐ भगवत्यै नमः ३।। ॐ कुब्जायै नमः ४।। ॐ शीतलायै नमः ५।। ॐ त्रिपुरायै नमः६।। ॐ मातृकायै नमः७।। ॐ लक्ष्म्यै नमः८।।

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात्। अस्य पुरश्चरण द्विलक्षजपः। पायसान्नेन दशांशतो होमं तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्यात्।। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च-

लक्षयुग्मं जपेन्मन्त्री पायसान्नैर्दशांशतः ।
एवमाराधिता बन्दी प्रयच्छेदीप्सितं वरम् ।।

इसके पश्चात् भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से नमस्कार पर्यन्त पूजन करके जप करे। इसका पुरश्चरण दो लाख जप है। खीर से दशांश होम, होम का दशांश तर्पण मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करे। इस प्रकार करने पर मंत्र सिद्ध होता है। मंत्र के सिद्ध

होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। दो लाख जप करके खीर से दशांश होम करे। इस प्रकार करने पर बन्दी यक्षिणी साधक को इच्छित वर प्रदान करती है।

एकविंशति घस्त्रान्तमयुत प्रत्यहं जपेत् ।
ब्रह्मचर्यरतो मन्त्री गणेशार्चनपूर्वकम् ।
कारागृहनिबद्धस्य मोक्ष एवं कृते भवेत् ।।२२७।।

साधक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए २१ दिन तक गणेशजी का पूजन करते हुए प्रतिदिन दश हजार मन्त्र का जप करे। ऐसा करने पर बन्दी व्यक्ति बन्धनमुक्त हो जाता है।।२२७।।

चतुरस्त्रे ठकारान्तरपूपोपरि संलिखेत् ।
साध्यनाम घृतेनैव मायाबीजं च दिक्ष्वपि ।
मनुनाष्टादशार्णेन चतुरस्त्रं प्रवेष्टयेत् ।।२२८।।

मालपुआ (अपूप) पर घी से चतुरस्त्र के भीतर ठकार लिखकर जिस व्यक्ति को छुड़ाना हो उसका नाम लिखकर, अमुकं (साध्य का नाम) मोचय, लिखे। फिर चतुरस्त्र के चारो दिशाओं में माया बीज-ह्रीँ-लिखकर उसे अष्टादशाक्षर मन्त्र से प्रतिलोम क्रम से वेष्टित करे।।२२८।।

वाग्बीजं भुवनेशानी रमा बन्दि च केशवः ।
मुष्यबन्धं ततो मोक्षं कुरु युग्मं च ठद्वयम् ।।२२९।।
वसुचन्द्रार्णमन्त्रोऽयं क्षिप्रं बन्धविमोक्षदम् ।
तस्मिन्नपूपे सम्पूज्य बन्दीमावरणान्विताम् ।।२३०।।
कारानिकेतनस्थाय मित्राय प्रददीत तम् ।
संशुद्धो वाग्यतो भूत्वा भक्षयेत्तमपूपकम् ।।२३१।।
तस्मिन्सम्भक्षिते बद्धो मुच्यते बन्धनादद्भुतम् ।
एवं सम्प्रोदिता बन्दीस्मरणाद् बन्धमुक्तिदा ।।२३२।।

बाग्बीज-ऐँ, भुवनेशानी-ह्रीँ, रमा-श्रीँ; तत्पश्चात् 'बन्दि' पद, उसके उपरान्त केशव-अ, फिर 'मुष्य बन्ध', तदनन्तर 'मोक्षं', इसके अनन्तर दो बार-'कुरु कुरु' इसके उपरान्त ठद्वय-स्वाहा लगाने से अष्टादशाक्षर मन्त्र निर्मित होता है, जो बन्दियों को अतिशीघ्र मोक्ष देने वाला होता है। '**ऐँ ह्रीँ श्रीँ बन्दि अमुष्य बन्ध मोक्षं कुरु कुरु स्वाहा**' यह अष्टादशाक्षर मन्त्र है। इस प्रकार अट्ठारह अक्षरों से युक्त साध्य नाम वाले

पुआ पर देवी की पूजा कर जिस अपने मित्र को कारागार से मुक्त कराना हो उसे खिला दे। बन्दी व्यक्ति शुद्ध एवं मौन होकर उस पुआ को खा जाए। पुआ के भक्षण करने से वह शीघ्र ही कारागार से मुक्त हो जाता है। यह बन्दी देवी स्मरणमात्र से बन्धनमुक्त कर देती है।।२२९-२३२।।

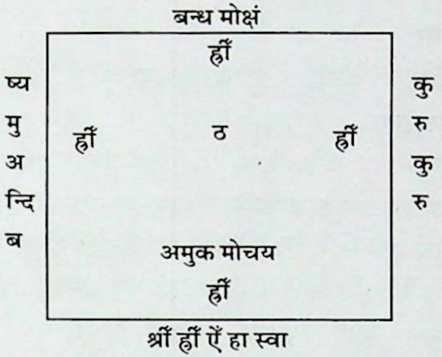

मुष्टिमन्योऽन्यमास्थाय कनिष्ठे वेष्टयेदुभे ।
प्रसार्याकुञ्च्य तर्जन्यौ कार्यौ तावङ्कुशाकृती ।
इयं क्रोधाङ्कुशी मुद्रा त्रैलोक्याकर्षणक्षमा ।।२३३।।

अब यक्षिणी मुद्रा का वर्णन किया जा रहा है। अपने दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँध कर दोनों कनिष्ठिका उंगलियों को एक दूसरे से लपेटे। तत्पश्चात् दोनों तर्जनी उंगलियों को फैलाकर अंकुश के आकार में बनाये। यही त्रिभुवन का आकर्षण करने वाली क्रोधांकुशी मुद्रा है।।२३३।।

पाणी समौ विधायाथ व्यत्ययान्मध्यमाद्वयम् ।
कृत्वा तिर्यगनामान्ते बाह्यतः स्थापयेद्बुधः ।।२३४।।
तर्जन्याभिनिविष्टेन कनिष्ठागर्भसंस्थिता ।
ज्येष्ठाङ्गुष्ठेनावाहयेद् मुद्रया यक्षिणीं शुभाम् ।।२३५।।

दोनों हथेलियों को समान करके दोनों मध्यमाओं को तिरछे रूप से अनामिका के बाहर स्थापित करे। तदुपरान्त दोनों तर्जनियों द्वारा कनिष्ठा उंगलियों को हाथ के भीतर रखकर ज्येष्ठा अंगुलि द्वारा यक्षिणी का आवाहन करे।।२३४-२३५।।

विषबीजं समुद्धृत्य बीजं प्राथमिकं ततः ।
आभाष्य तामसीं गच्छ संयुक्तां हि समुद्धरेत् ।।२३६।।
यक्षिणाग्निप्रियान्तोऽयं यक्षिण्याह्वानकृन्मनुः ।
आह्वानमुद्रया वामाङ्गुष्ठेनापि विसर्जयेत् ।।२३७।।
यक्षिणीमनुनानेन वक्ष्यमाणेन पूजिता ।
प्रालेयं रौद्रीयं बीजं गच्छद्वयसमन्वितम् ।।२३८।।
अमुकयक्षिण्युद्धृत्य पुनरागमनाय च ।
द्विठान्तमुद्धरेन्मन्त्रं यक्षिणीनां विसर्जयेत् ।।२३९।।

ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ अमुक यक्षिणि स्वाहा इस मन्त्र के द्वारा यक्षिणी का आवाहन करे। आवाहन मुद्रा द्वारा या बायें अँगूठे के द्वारा **ॐ ह्रीं गच्छ गच्छ अमुक यक्षिणि पुनरागमनाय स्वाहा** इस मन्त्र से यक्षिणियों का विसर्जन करे।।२३६-२३९।।

कृत्वान्योऽन्यमुभे मुष्टी प्रसार्य मध्यमाद्वयम् ।
सम्मुखीकरणी मुद्रा यक्षिणीनां प्रदर्शयेत् ।।२४०।।
विषं महायक्षिणीति ह्युद्धरेन्मैथुनप्रिये ।
वह्निजायां तथोक्तोऽयं सम्मुखीकरणो मनुः ।।२४१।।

दोनों हाथों के द्वारा मुट्ठी बाँधकर दोनों मध्यमा उँगलियों को फैलाये, यह सम्मुखीकरण मुद्रा है। यक्षिणी का आवाहन करके इस मुद्रा का प्रदर्शन करे। '**ॐ महायक्षिणि मैथुनप्रिये स्वाहा**' यह सम्मुखीकरण मुद्रा मन्त्र है।।२४०।।२४१।।

अन्योऽन्यमुष्टिमास्थाय प्रसार्याकुञ्चयेदुभे ।
कनिष्ठे चापि मुद्रेयं सान्निध्यकारिणी स्मृता ।
विषं कामपदाद् भोगेश्वरि स्वाहेति संयुता ।।२४२।।

दोनों हाथों की एक साथ मुट्ठी बन्द करके दोनों कनिष्ठिकाओं को फैलाकर पुनः सिकोड़े, यह सान्निध्यकारिणी मुद्रा है। इसमें सान्निध्यकरण के लिए '**ॐ कामभोगेश्वरि स्वाहा**' मन्त्र प्रयुक्त होता है।।२४२।।

कृत्वा मुष्टिं ततोऽन्योऽन्यं साधकानां हृदि न्यसेत् ।
वक्ष्यमाणेन मनुना मुद्रास्थापनकर्मणि ।।२४३।।

विषं समं समुद्धृत्य त्रैलोक्यग्रसनात्मकम् ।
संयुक्तं धूम्रभैरव्या नादबिन्दुसमन्वितम् ।
हृदयाय शिरोऽन्तोऽयं हृदि संस्थापयेन्मनुम् ।।२४४।।

एक साथ दोनों हाथों की मुट्ठी बांधकर **ॐ ह्रीं हृदयाय नमः** मन्त्र से दोनों मुट्ठियों को वक्षस्थल पर रखे। यह यक्षिणी मुद्रा है। यह मुद्रा त्रिभुवन का भी ग्रास कर सकती है।।२४३-२४४।।

कृत्वा मुष्टिं ततोऽन्योऽन्यं तर्जनीमपि मध्यमाम् ।
प्रसार्य प्रमुखी वेद्या मुद्रा मन्त्रसमन्विता ।।२४५।।
ॐ सर्वमनोहारिणि द्विठान्तञ्च समुद्धरेत् ।
पञ्चोपचारमुद्राया मनुरेष उदाहृतः ।।।२४६।।

एक साथ दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधकर तर्जनी तथा मध्यमा अँगुली को फैलाये। यह प्रमुखी मुद्रा है। इस मुद्रा से **ॐ सर्वमनोहारिणि स्वाहा** मन्त्र के द्वारा गन्ध, पुष्प, धूप, नैवेद्य आदि के द्वारा पंचोपचार से यक्षिणी का पूजन करे।।२४५-२४६।।

(६८) श्री धनदा रतिप्रियायक्षिणीपूजनयन्त्रम्

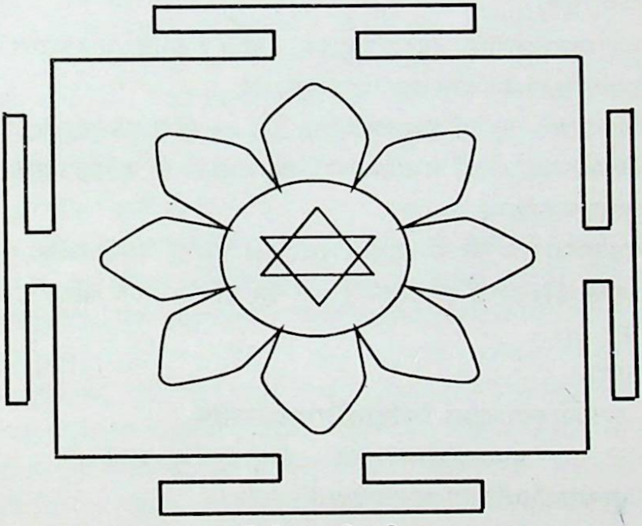

६८. धनदा रतिप्रियायक्षिणीपूजनयन्त्रम्

तु-तूर्यं विन्दुसंयुक्तं लज्जाबीजं समुद्धरेत् ।
लक्ष्मीबीजं ततो देवि! सम्बोध्या च रतिप्रिया ।
वह्निजायावधिः प्रोक्तो मन्त्रराजोत्तमोत्तमः ।।२४७।।

हे देवि! बिन्दु से युक्त 'त' वर्ग का चौथा वर्ण (धं) माया बीज (ह्रीं) श्री बीज (श्रीं) सम्बोधनान्त 'रतिप्रिया' तथा वह्निजाया (स्वाहा) कहने से **धं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये! स्वाहा** यह मन्त्र बनता है। यह मन्त्र समस्त मन्त्रों में श्रेष्ठ है।।२४७।।

विशेष - इसके अन्य मन्त्र इस प्रकार हैं - १ ॐ ह्रीं श्रीँ मां धनदे रतिप्रिये स्वाहा।। २ ॐ धं श्रीँ ह्रीँ रतिप्रिये स्वाहा।। ३ ॐ रं ह्रीँ श्रीँ रतिप्रिये स्वाहा।। ४ ॐ ह्रीँ ॐ मा मोचय मोचय स्वाहा।

अस्य पूजा-प्रातःकृत्यादि प्राणायामान्तं कृत्वा ऋष्यादिन्यासं कुर्यात्। शिरसि कुबेरऋषये नमः, मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः; हृदि धनदायै देवतायै नमः।।

इसकी पूजा इस प्रकार है - प्रातःकृत्य से प्राणायाम तक के कर्म कर ऋष्यादि न्यास करे - कुबेरऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। धनदायै देवतायै नमः हृदि।

ततः कराङ्गन्यासौ : ह्राँ अंगुष्ठाभ्यां स्वाहा इत्यादि। एवं हृदयादिषु।।

इसके पश्चात् करन्यास तथा षडङ्गन्यास करे-

करन्यास - ॐ ह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः १।। ॐ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः २।। ॐ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः ३।। ॐ ह्रैँ अनामिकाभ्यां नमः ४।। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ४।। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६।।

षडङ्गन्यास - ॐ ह्राँ हृदयाय नमः १।। ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा २।। ॐ ह्रूँ शिखायै वषट् ३।। ॐ ह्रैँ कवचाय हुँ ४।। ॐ ह्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट् ५।। ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६।।

ततो ध्यानम्-

कुंकमोदरगर्भाभां किञ्चिद्यौवनशालिनीम्
मृणालकोमलभुजां केयूराङ्गदभूषणाम् ।
तुल्यकोटिपरिभ्रान्तपादपद्मद्वयान्विताम्
माणिक्यहारमुकुटकुण्डलादिविभूषिताम् ।।२४८।।

नीलोत्पलदृशं किञ्चिदुद्यत्कुचविराजिताम्
करोभ्यां भ्राम्यत्कमलां रक्तवस्त्राङ्गरागिणीम् ।
हेमप्राकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनोपरि
ध्यायेत् कल्पतरोर्मूले देवतां धनदायिकाम् ।।२४९।।

साधक न्यास करके इस प्रकार ध्यान करे – धनदा रतिप्रिया देवी कुंकुमकोष के भीतरी भाग के समान रंग वाली नवयौवना हैं। उनकी दोनों भुजाएं कमलनाल के समान कोमल हैं तथा केयूर, अंगद आदि आभूषणों से सुसज्जित हैं। दोनों चरणकमलों में नूपुर गुञ्जायमान हैं। माणिक्य, हार, मुकुट और कुण्डलादि आभूषणों से वे सुशोभित हैं। उनकी दोनों आँखें नीलकमल के समान सुन्दर हैं। उनके दोनों स्तन कुछ ऊँचे उठे हुए हैं। दोनों हाथों में कमल हैं, जिन्हें वे घुमा रही हैं। उनकी देह में लाल रंग का लेप लगा हुआ है तथा लाल वस्त्र पहने हुए हैं। स्वर्ण वेदिका के मध्य में स्थित कल्पवृक्ष मूल पर विद्यमान रत्नजटित सिंहासन पर विराजमान हैं।।२४८-२४९।।

एवं ध्यात्वा मानसैः सम्पूज्य बहिः पूजामारभेत् ।

ध्यान करके मानसपूजा कर बाह्यपूजन करे ।

पूजायन्त्रम् : नवयोन्यात्मकं चक्रंविलिखेत्कर्णिकोपरि ।
दिग्दलं पद्ममालिख्य चतुरस्त्रन्तं लिखेद्बहिः ।
कोषेणु वज्रं संलिख्य मध्ये बीजं समुल्लिखेत्।।२५०।।

अब पूजा यन्त्र कहा जाता है-साधक सर्वप्रथम कर्णिका के मध्य में नवयोनिमय चक्र लिखे, उसके पश्चात् दशदल कमल अंकित कर उसके बाहर चतुरस्त्र बनाये। चतुरस्त्र के चारों कोनों में वज्र जैसा चिह्न बनाकर कर्णिका के मध्य में 'धं' बीज लिखे।।२५०।।

ततोऽर्घ्यस्थापनम् – फडिति पात्रं प्रक्षाल्य नमः इत्यनेन जलेनापूर्य तत्र प्रणवेन गन्धपुष्पे निक्षिप्य तीर्थमावाह्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य तदुपरि मूलं दशधा जप्त्वा तज्जलं किञ्चित् प्रोक्षणीपात्रे निक्षिप्य तेनोदकेनात्मानं पूजोपकरणञ्च मूलेन त्रिरभ्युक्ष्य, आधारशक्त्यादि ह्रीँ ज्ञानात्मने नमः इत्यन्तं पीठपूजां विधाय 'ॐ पद्मासनाय नमः' इति मध्ये सम्पूज्य पुनर्ध्यात्त्वावाह्य पञ्चोपचारैः पूजयेत्। ततो योनिमुद्रां प्रदर्श्य केशरेष्वग्न्यादिकोणेषु मध्ये दिक्षु च ह्राँ हृदयाय नमः इत्यादिना षडङ्गेन पूजयेत्। ततो दलेषु पूर्वादि ॐ लक्ष्म्यै नमः एवं पद्मायै पद्मालयायै श्रियै हरिप्रियायै तारायै कमलायै चञ्चलायै अजायै लोलायै मध्ये देवीञ्च पुनः पूजयेत्। ततो यथाशक्ति जप्त्वा जपं समर्प्य, क्षमस्वेति विसर्जयेत्।

इसके उपरान्त साधक 'अर्घ्यस्थापन' करे। 'फट्' मन्त्र से अर्घ्यपात्र को धोकर नमः के द्वारा उसे जल से भरे। तदुपरान्त् 'ॐ' से गन्धपुष्प डालकर 'ॐ गङ्गे च यमुने' इत्यादि मन्त्र के द्वारा उसमें समस्त तीर्थों का आवाहन करे। इसके उपरान्त धेनुमुद्रा[१] प्रदर्शित कर अर्घ्य पात्र पर हाथ रखकर मूल मन्त्र का दश बार जप करे। फिर अर्घ्यपात्र का कुछ जल प्रोक्षणी पात्र में डालकर, उस जल से मूलमन्त्र द्वारा पूजा सामग्री तथा अपने शरीर का तीन बार अभ्युक्षण करे। इसके उपरान्त 'ॐ आधारशक्तये नमः' से लेकर 'ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः' तक पीठ पूजा कर 'ॐ पद्मासनाय नमः' उच्चारण कर मध्य में पूजा करे तथा पुनः ध्यान और आवाहन कर पञ्चोपचारों से पूजन करे तथा योनि मुद्रा प्रदर्शित कर केशर में, अग्न्यादि कोणों में, मध्य में तथा चारो दिशाओं में "ह्राँ हृदयाय नमः, ह्रीँ शिरसे स्वाहा, ह्रूँ शिखायै वषट्, ह्रैं कवचाय हुँ, ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्रः[१] अस्त्राय फट्" इन मन्त्रों के द्वारा षडङ्गपूजा करे। इसके पश्चात् पूर्वदल से आरम्भ कर, दश दलों में इन मन्त्रों से पूजन करें-"ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ पद्मायै नमः, ॐ पद्मालयायै नमः, ॐ श्रियै नमः, ॐ हरिप्रियायै नमः ॐ तारायै नमः, ॐ कमलायै नमः, ॐ चञ्चलायै नमः, ॐ अब्जायै नमः, ॐ लोलायै नमः।

इस प्रकार पूजन कर मध्य में देवी का पुनः पूजन करे। तत्पश्चात् यथाशक्ति मूल मन्त्र का जप कर जपसमर्पणपूर्वक 'क्षमस्व' मन्त्र से विसर्जन करे।

अस्य पुरश्चरणं लक्ष जपः। तथा च-

प्रजपेदक्षसूत्रेण रत्नादिकृतकेन तु ।
लक्षे जप्ते मन्त्रसिद्धिं पुरश्चर्यां समाचरेत् ।।२५१।।
विनियोगान् यथा कुर्यात्साधकः सुमनोहरान् ।
रात्रौ चेज्जप्यते चाष्टसहस्त्रं सप्तवासरान् ।।२५२।।
एतेनैव सुसिद्धः स्यात् पुरश्चर्यादिको विधिः ।
किमिह दुर्लभं देवि साधयेद्यदि मानवः ।।२५३।।
भुक्त्वा वाप्यथवा भुक्त्वा पायसान्नं प्रदाय च ।
दशकृत्तोऽथवा शौचमकृत्वा वा कुचैलताम् ।।२५४।।

---

१. धेनु मुद्रा- अन्योन्याभिमुखी श्लिष्टौ कनिष्ठानामिका पुनः। तथा तु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता।।
दोनों हाथों की कनिष्ठा एवं अनामिका अंगुलियों को तथा उसी भांति तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों को आपस में मिला देने से धेनुमुद्रा बनती है।

यः स्मेरद्देवि विद्यां तां दारिद्र्यैर्नाभिभूयते ।
कामदेवं यजेत् पार्श्वे देव्याः प्रत्यहमादरात् ।।२५५।।
तेन देव्यां महाप्रीतिर्वाञ्छितार्थं ददाति च ।
पूजान्ते च समायाति रात्रौ देवी धनेश्वरी ।।२५६।।
सर्वालङ्कारमुत्सृज्य दत्त्वा याति निजालयम् ।
धनञ्च विपुलं दत्त्वा साधकस्य मनोरथान् ।।२५७।।

इस मंत्र का पुरश्चरण एक लाख जप है। रत्नादि के द्वारा एक लाख मन्त्र जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। साधक सुन्दरतापूर्वक विनियोग को पूरा करे। साधक एक सप्ताह तक प्रतिदिन रात्रि में एक हजार आठ बार मन्त्र का जप करे। इस प्रकार पुरश्चर्या से सिद्धि प्राप्त होती है। हे देवि! यदि मनुष्य साधना करे तो उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। भोजन के उपरान्त अथवा बिना भोजन किए 'पायसान्न की बलि' प्रदान करे। चाहे दश बार शुद्धि करे या मलिन वस्त्रों में रहे, हे देवि! इस विद्या को स्मरण करने पर वह दरिद्रता से पराभूत नहीं होता है। देवी के पार्श्वभाग में प्रतिदिन कामदेव की पूजा करने पर धनदा देवी को अत्यधिक प्रसन्नता होती है तथा साधक को उसका वाञ्छित प्रदान करती हैं। पूजा के अन्त में निशाकाल में देवी साधक के समीप आती हैं तथा अपने शरीर के आभूषण छोड़कर प्रातःकाल चली जाती हैं। यक्षिणी साधक को विपुल धन प्रदान कर उसकी प्रत्येक मनोकामना पूर्ण करती हैं तथा उसके वश में रहती हैं।।२५१-२५७।।

रुद्रयामले-

प्रणम्य शिरसा गौरी प्रोवाच शशिशेखरम् ।
येन कल्पेन दारिद्र्यं विनश्येत च तद्वद ।।२५८।।

रुद्रयामल में कहा गया है- सिर से प्रणाम कर भगवान् शिव से देवी पार्वती ने कहा - जिस कल्प के द्वारा दरिद्रता का विनाश हो, उसे आप बताइये।।२५८।।

श्रुत्वा गौरीवचः शम्भुः स्मितचारुशुभाननः ।
शृणु त्वं देवदेवेशि दारिद्र्यस्य विनाशकम् ।।२५९।।

भगवती गौरी के वचन सुनकर भगवान शिव मुस्कराते हुए बोले - हे देवेशि! तुम दारिद्र्यविनाशक कल्प का श्रवण करो।।२५९।।

पुरा विश्वसृजा प्रोक्ता कुबेराय महात्मने ।
विद्या दारिद्र्यसंहन्त्री यक्षिणी पापखण्डिनी ।।२६०।।
तेन सा तु समाख्याता यक्षिणी सुरसुन्दरी ।
ततो निधिवराणां तु नायको निश्चितं भवेत् ।।२६१।।

प्राचीन समय में विश्वस्रष्टा ब्रह्मा जी ने इसे यक्षराज कुबेर को बतलाया था। यह दरिद्रता का नाश करने वाली यक्षिणी पापखण्डिनी विद्या है। इसलिए यह यक्षिणी सुरसुन्दरी के नाम से विख्यात है। साधक इससे निश्चित रूप से सम्पूर्ण निधियों का स्वामी बन जाता है।।२६०-२६१।।

निर्धनो वा महीपो वा विद्यां तां ब्रह्मणो मुखात् ।
श्रुत्वा कुबेरवक्त्रेण स भवेत् परमो धनी ।।२६२।।

चाहे निर्धन हो या राजा, कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण के मुख से इस विद्या को सुनकर अथवा कुबेर के मुख से इसे ग्रहण कर परम धनवान हो जाता है।।२६२।।

तच्छ्रुत्वा गिरिजा देवी पुनः प्राह शिवं प्रति ।
कृपा ते विद्यते कान्त तदा त्वं मां प्रबोधय ।।२६३।।

भगवान् शिव के वचन सुनकर भगवती गिरिजा ने पुनः कहा - हे कान्त! यदि आपकी मुझ पर कृपा है तो आप इस विद्या को मुझसे कहिए।।२६३।।

श्रुत्वा पुनश्च पार्वत्या वाक्यमेवं प्रहस्य च ।
शम्भुः प्राह न जानासि पार्वत्या मूर्तिरिव सा ।।२६४।।

भगवती पार्वती के वचनों को पुनः सुनकर भगवान् शिव ने हँसकर कहा - क्या तुम नहीं जानती कि यह विद्या पार्वती की ही मूर्ति है।।२६४।।

यां श्रुत्वा याति रङ्कोऽपि भूपालत्वं न संशयः ।
विद्याधरत्वमाप्नोति किं पुनर्बहुभाषितैः ।।२६५।।
याति लक्षेश्वरत्वं च त्वद्भक्तो देवि सर्वदा ।
वर्षेणापि स्मरन्मन्त्रं भवेद् बहुधनो नरः ।।२६६।।

इस विद्या को सुनकर रंक (धनहीन) व्यक्ति भी राजा बन जाता है, इसमें संशय नहीं है। अधिक कहने से क्या लाभ, इससे साधक विद्याधर पद पा जाता है। हे देवि! तुम्हारा भक्त इस विद्या के प्रभाव से लखपति बन जाता है। साधक यदि इसका एक वर्ष तक जप करे तो वह अत्यन्त धनवान बन जाता है।।२६५-२६६।।

नो संस्पृशति दारिद्र्यं ताक्ष्यं भोगकुलं यथा ।
अस्य मन्त्रस्य चोद्धारं प्रवक्ष्ये शृणु पार्वती ।।२६७।।
नाङ्गन्यासः करन्यासो न छन्दो ऋषिदैवतम् ।
कुबेरस्य मतो नास्याः पूजापि क्रियते तथा ।।
विधिमस्याः प्रवक्ष्यामि शृणु त्वं शैलसम्भवे! ।।२६८।।

ॐ रँ श्रीँ ह्रीँ धँ धनदे रतिप्रिये स्वाहा। इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः।

इस विद्या के ज्ञाता को दरिद्रता उसी प्रकार स्पर्श नहीं करती जिस प्रकार सापों का कुल ताक्ष्य का स्पर्श नहीं करता। हे पार्वति! अब मैं इस विद्या का मन्त्रोद्धार कहता हूँ, उसे सुनो। इस विद्या का न तो अंगन्यास है, न ही करन्यास। न छन्द है, न ऋषि और न ही देवता है। कुबेर का इसमें मत भी न हो तो भी इसकी पूजा की जाती है। हे पार्वति! मैं इसकी विधि कहता हूँ-उसको सुनो। ॐ रँ श्रीँ ह्रीँ धँ धनदे रतिप्रिये स्वाहा यह चौदह अक्षरों का मन्त्र है।।२६७-२६८।।

यद्यपि इसमें लिखा गया है कि इस विद्या का न अंगन्यास है न करन्यास, न छन्द, न ऋषि और न ही देवता। लेकिन इसके विधान में यही सब कुछ वर्णित है।

अस्य विधानम्

विनियोगः-ॐ अस्य श्री धनदेश्वरीमन्त्रस्य कुबेरऋषिः पंक्तिच्छन्दः श्रीधनदेश्वरी देवता धं बीजं स्वाहा शक्तिः श्रीं कीलकं श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्धये समस्तदारिद्र्यनाशाय श्रीधनदेश्वरीमन्त्रजपे विनियोगः।।

ऋष्यादिन्यासः-ॐ कुबेरऋषये नमः शिरसि १।। पंक्तिच्छन्दसे नमो मुखे २।। धनदेश्वरीदेवतायै नमो हृदि ३।। धं बीजाय नमो गुह्ये ४।। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५।। श्रीँ कीलकाय नमो नाभौ ६।। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७।। इति ऋष्यादि न्यासः।

सर्वप्रथम हाथ में जल लेकर विनियोग करे। इसके उपरान्त उपरोक्त प्रकार से ऋष्यादिन्यास करे।

करन्यास :-ॐ श्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः १।। ॐ श्रीँ तर्जनीभ्यां नमः २।। ॐ श्रूँ मध्यमाभ्यां नमः ३।। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४।। ॐ श्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५।। ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६।। इति करन्यासः।।

उपरोक्त प्रकार से करन्यास करे।

हृदयादिषडङ्गन्यासः-ॐ श्राँ हृदयाय नमः १।। ॐ श्रीँ शिरसे स्वाहा २।। ॐ श्रूँ शिखायै वषट् ३।। ॐ श्रैं कवचाय हुँ ४।। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५।। ॐ श्रः अस्त्राय फट् ६।। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

उपरोक्त प्रकार से हृदयादिषडङ्गन्यास करे।

मन्त्रवर्णन्यासः-ॐ ॐ नमः शिरसि १।। ॐ रं नमः मुरजे २।। ॐ श्रीँ नमो दक्षिणनेत्रे ३।। ॐ ह्रीँ नमो वामनेत्रे ४।। ॐ धं नमो दक्षिणकर्णे ५।। ॐ धं नमो वामकर्णे ६।। ॐ नं नमो दक्षनासापुटे ७।। ॐ दं नमो वामनासापुटे ८।। ॐ रं नमो हृदये ९।। ॐ तिं नमो दक्षिणस्तने १०।। ॐ प्रिं नमो वामस्तने ११।। ॐ यें नमो नाभौ १२।। ॐ स्वां नमो गुह्ये १३।। ॐ हां नमः पादयोः।।इतिमन्त्रवर्णन्यासः।

उपरोक्त प्रकार से अपने शरीर में मन्त्रवर्णों का न्यास करे।

पदन्यासः-ॐ ॐ नमो मस्तके १।। ॐ रं नमो मुखे २।। ॐ श्रीँ नमो हृदये ३।। ॐ ह्रीँ नमः कट्याम् ४।। ॐ धं नमो हस्तयोः ५।। ॐ धनदे नमो गुदे ६।। ॐ रतिप्रिये नमो लिङ्गे ७।। ॐ स्वाहा नमः पादयोः ८।। इति पदन्यासः।

उपरोक्त प्रकार से पदन्यास करे।

कवचन्यासः-ॐ धनदायै नमः शिरसि १।। ॐ मङ्गलायै नमो ललाटे २।। ॐ दुर्गायै नमो भ्रुवोर्मध्ये ३।। ॐ त्रिनेत्राय नमो दक्षिणनेत्रे ४।। ॐ चञ्चलायै नमो वामनेत्रे ५।। ॐ त्वरितायै नमो दक्षिणकर्णे ६।। ॐ मञ्जुघोषायै नमो वामकर्णे ७।। ॐ सुगन्धायै नमो दक्षिणनासापुटे ८।। ॐ पद्मायै नमो वामनासापुटे ९।। ॐ वाराह्यै नमः ऊर्ध्वोष्ठे १०।। ॐ महामायै नमः अधरोष्ठे ११।। ॐ करालभैरव्यै नमो मुखे १२।। ॐ सुन्दर्यै नमो दन्तजाले १३।। ॐ सरस्वत्यै नमो जिह्वायाम् १४।। ॐ रुद्राण्यै नमश्चिबुके १५।। ॐ चामर्यै नमः कण्ठजाले १६।। ॐ वज्रायै नमः कण्ठपृष्ठे १७।। ॐ हरिप्रियायै नमो दक्षस्कन्धे १८।। ॐ कमलायै नमो वामस्कन्धे १९।। ॐ वरदायै नमो दक्षिणहस्ते २०।। ॐ अभयदायै नमो वामहस्ते २१।। ॐ सुपट्टिकायै नमो दक्षांगुलीषु २२।। ॐ उमायै नमो वामांगुलीषु २३। ॐ महालक्ष्म्यै नमो हृदये २४। ॐ कामदायै नमः स्तनयोः २५। ॐ क्षुधायै नमः उदरे २६।। ॐ महाबलायै नमः कट्याम् २७।। ॐ धनुर्धरायै नमः पृष्ठे २८।। ॐ कामप्रियायै नमो लिङ्गे २९।। ॐ गुह्येश्वर्यै नमो

गुदे ३०।। ॐ चपलायै नमः ऊर्वोः ३१।। ॐ लीलायै नमो जानुनोः ३२।। ॐ सर्वशक्त्यै नमो जङ्घयोः ३३।। ॐ भ्रामर्यै नमः पादयोः ३४।। ॐ सर्वेश्वर्यै नमः सर्वाङ्गे ३५।। इति कवचन्यासः।

उपरोक्त प्रकार से कवचन्यास करे।

दिग्न्यासः-ॐ ब्राह्म्यै नमः पूर्वे १।। ॐ माहेश्वर्यै नमो दक्षिणे २।। ॐ कौमार्यै नमः पश्चिमे ३।। ॐ वैष्णव्यै नमः उत्तरे ४।। ॐ वाराह्यै नमः ईशान्याम् ५।। ॐ चामुण्डायै नमः आग्नेय्याम् ६।। ॐ कौवेर्यै नमः नैर्ऋत्याम् ७।। ॐ वारण्यै नमः वायव्याम् ८।। ॐ ब्राह्म्यै नमः ऊर्ध्वम् ९।। ॐ अनन्तायै नमः अधः १०।। इति दिग्न्यासः।

उपरोक्त प्रकार से दिशाओं का न्यास करे।

अथ ध्यानम्

ॐ हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितटे रक्तपीठाधिरूढ़ां
ध्यायेत्तां यक्षिणीं वै परिमलकुसुमोद्भासिधम्मिल्लभाराम् ।
पीनोत्तुङ्गस्तनाढ्यां कुवलयनयनां रत्नकाञ्चीं कराभ्यां
भ्राम्यद्रक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषाङ्गरागाम् ।।२६९।।

अथ यक्षिणी का ध्यान कहते हैं – स्वर्णवेदिका के मध्य में स्थित कल्पवृक्ष के नीचे रक्तपीठ पर बैठी हुई, परिमल पुष्पों के भार से सुसज्जित मनोहर वेणी वाली, पुष्ट, मांसल, विशाल, ऊँचे एवं मनोहर स्तनों वाली, नीलकमल के समान नेत्रों वाली, रत्नों की करधनी (काञ्ची) धारण करने वाली, दोनों हाथों में लाल कमल धारण करने वाली जिनको वह हाथों में घुमा रही हैं, लाल वस्त्र एवं लाल अंगराग वाली यक्षिणी का मैं ध्यान करता हूँ।।२६९।।

इति ध्यायेत्।। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले 'ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः इत्याधारशक्तिं सम्पूज्य अर्घस्थापनं कृत्वा स्वर्णादिपात्रे चन्दनेन यंत्रं विलिख्य 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तथा च पुष्पाञ्जलिमादाय-

इस प्रकार ध्यान करने के उपरान्त पीठादि पर निर्मित सर्वतोभद्रमण्डल में 'ॐ आधारशक्त्यै नमः' इससे आधारशक्ति की पूजा करके अर्घ्य स्थापन करे और स्वर्णादि के पत्र पर चन्दन से यन्त्र बनाकर 'ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः' इस मन्त्र के

द्वारा पुष्प, पाद्य तथा आसन प्रदान कर पीठ के मध्य में स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करे। तदुपरान्त पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र के द्वारा मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजन तथा देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। पुष्पाञ्जलि लेकर –

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ।
अनुज्ञां देहि धनदे परिवारार्चनाय मे ।।

इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत।।

"ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि धनदे परिवारार्चनाय मे" यह पढ़कर तथा पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा प्रारम्भ करे।

ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ श्राँ हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र १।। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा। शिरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः २।। ॐ श्रूँ शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ३।। ॐ श्रैं कवचाय हुँ। कवचश्रीपा० ४।। ॐ श्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयाय श्रीपा० ५।। ॐ श्रः अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ६।। इति षडङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।१।।

तदुपरान्त षट्कोण केशरों में, आग्नेयादि चारो दिशाओं में और मध्य दिशाओं में– ॐ श्राँ हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १।। ॐ श्रीँ शिरसे स्वाहा, शिरः श्रीपा० २।। ॐ श्रूँ शिखायै वषट्, शिखा श्रीपा० ३।। ॐ श्रैं कवचाय हुं, कवच श्रीपा० ४।। ॐ श्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रय श्रीपा० ५।। ॐ श्रः अस्त्राय फट्। अस्त्र श्रीपा० ६।। इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करे। इसके उपरान्त पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके **ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।**

यह पढ़कर तथा पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरणम्।।१।।

ततो दशदले पूज्यपूजकयोरन्तराले प्राचीं। तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीश्रीपा० १।। ॐ पद्मायै नमः, पद्माश्रीपा० २।। ॐ श्रियै नमः, श्री श्रीपा० ३।। ॐ हरिप्रियायै नमः हरिप्रिया श्रीपा० ४।। ॐ हरायै नमः। हराश्रीपा० ५।। ॐ पद्मप्रियायै नमः। पद्मप्रियाश्रीपा० ६।। ॐ कमलायै नमः। कमलाश्रीपा० ७।। ॐ अब्जायै नमः। अब्जा श्रीपा० ८।। ॐ चञ्चलायै नमः। चञ्चला श्रीपा० ९।। ॐ लोलायै नमः। लोलाश्रीपा० १०।। इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इसके उपरान्त दश दलों में पूज्य तथा पूजक के अन्तराल में प्राची तथा उसके अनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से वामावर्त–ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मी श्रीपा० १।। ॐ पद्मायै नमः। पद्माश्रीपा० २।। ॐ श्रियै नमः श्रीश्रीपा० ३।। ॐ हरिप्रियायै नमः। हरिप्रिया श्रीपा० ४।। ॐ हरायै नमः, हराश्रीपा० ५।। ॐ पद्मप्रियायै नमः, पद्मप्रियाश्रीपा० ६।। ॐ कमलायै नमः, कमलाश्रीपा० ७।। ॐ अब्जायै नमः, अब्जाश्रीपा० ८।। ॐ चञ्चलायै नमः, चञ्चला श्रीपा० ९।। ॐ लोलायै नमः। लोला श्रीपा० १०।। इस प्रकार पूजन कर पुष्पाञ्जलि समर्पित करे। इति द्वितीयावरण।।२।।

ततो भूपुरे इन्द्रादि दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

इसके पश्चात् भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि प्रदान करे–

ॐ इन्द्राय नमः पूर्वे, ॐ अग्नये नमः आग्नेये, ॐ यमाय नमः दक्षिणे, ॐ निर्ऋतये नमः नैर्ऋत्ये, ॐ वरुणाय नमः पश्चिमे, ॐ वायवे नमः वायव्ये, ॐ सोमाय नमः उत्तरे, ॐ ईशानाय नमः ऐशान्ये, ॐ ब्रह्मणे नमः आकाशे, ॐ अनन्ताय नमः पाताले। इस प्रकार दश दिक्पालों का पूजन करे।

अब वज्रादि आयुधों का पूजन इस प्रकार करे– ॐ वज्राय नमः, ॐ शक्तये नमः, ॐ दण्डाय नमः, ॐ खड्गाय नमः, ॐ पाशाय नमः, ॐ अंकुशाय नमः, ॐ गदायै नमः, ॐ त्रिशूलाय नमः, ॐ चक्राय नमः, ॐ पद्माय नमः।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य प्रवालमालामादाय हृदये धारयन् एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थं स्मरन् जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च–

इति ध्यानं विधातव्यं चन्दनेनानुलेपितम् ।
ताम्रपात्रे विधातव्यं मण्डलं सुमनोहरम् ।।२७०।।
तत्र पूजा विधातव्या दिव्यैव हि मनीषिणा ।
भुक्ते वाप्यथवाभुक्ते पायसान्नं निवेदयेत् ।।२७१।।
रक्तप्रवालमाला तु कार्या साधकसत्तमैः ।
रक्तवस्त्रपरीधानो जपं कुर्यात्प्रयत्नतः ।।२७२।।
लक्षं जपेन्मन्त्रसिद्धिः पुरश्चर्यां समाचरेत् ।
घृताक्तेनेक्षुदण्डेन मधुना च दशांशतः ।।२७३।।
होमोऽपि च विधातव्यः क्षणाद्दारिद्र्यशान्तये ।
एवं सिद्धे मनौ मन्त्री प्रयोगान्कर्तुमर्हति ।।२७४।।

इति सिद्धाश्रमस्थ परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द तच्छिष्य अजय कुमार उत्तमविरचितायां यक्षिणी दिव्याङ्गना तन्त्रे यक्षिणी मन्त्र साधनम् नाम द्वितीयस्तरङ्गः।।२।।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से नमस्कार तक पूजन करके मूंगा की माला को लेकर हृदय में धारण करके मन्त्र के अर्थ को स्मरण करता हुआ मन्त्र का जप करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। जप का दशांश होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है और उस सिद्ध मन्त्र के द्वारा प्रयोगों को सिद्ध करे। चन्दन से अनुलेपित करके ध्यान करे। ताम्रपत्र पर उत्तम मण्डल बनाकर विद्वान साधक उसमें दिव्य पूजा करे। साधक ने भोजन किया हो या न किया हो, उसे खीर का भोग लगाना चाहिए। साधक लाल वस्त्र धारण कर, लाल मूंगे की माला से जप करे। एक लाख मन्त्रजप से पुरश्चरण होने पर मन्त्रसिद्धि होती है। साधक क्षणमात्र में दरिद्रता के नाश के लिए धी, मधु तथा शक्कर से दशांश होम करे। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को करने में समथ हो जाता है। शेष विधि पूर्व की भाँति ही करे। २७०।।-२७४।।

इस प्रकार सिद्धाश्रमस्थित परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य अजय कुमार उत्तम द्वारा रचित दिव्यांगना की यक्षिणी मन्त्र साधन नामक दूसरे तरंग की 'अनुपमा' हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई।।२।।

अथ तृतीयः तरङ्गः

अथ किन्नरीमन्त्रसाधनम्

१. अथ मञ्जुघोषा किन्नरी मन्त्रसाधनम्

ॐ श्रीं मञ्जुघोषे आगच्छागच्छ स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

प्रतिपदमारभ्य पूजां कृत्वा चंदनेन मण्डलं कृत्वा गुग्गुलधूपं दत्त्वाष्टसहस्रं जपेत् त्रिसंध्यम्।। ततः पौर्णमास्यां महतीं पूजां कृत्वा सकलां रात्रिं जपेत्।। प्रभाते शीघ्रमागच्छति कुसुमासनं दद्यात् स्वागतमिति वक्तव्यं भो भो साधक! किमाज्ञापयसि तदा साधकेन वक्तव्यं भार्या भवेति।। रसरसायनसिद्धद्रव्याणि ददाति। परस्त्र्यभिगमनं न कर्तव्यं पञ्चवर्षसहस्राणि जीवति।।

साधक मञ्जुघोषा किन्नरी की साधना प्रतिपदा तिथि से करे। प्रतिपदा तिथि से पूजा करके चन्दन से मण्डल बनाकर गुग्गुल का धूप देकर आठ हजार मंत्र का जप तीनों संध्याओं में करे। पूर्णिमा को वृहत् पूजा करके सम्पूर्ण रात्रि मन्त्रजप करे। प्रातः शीघ्र ही किन्नरी आती हैं, साधक उन्हें पुष्पासन प्रदान कर स्वागत करे। किन्नरी साधक से कहती है—हे साधक! मेरे लिए क्या आज्ञा है? तब साधक कहे कि तुम मेरी भार्या बन जाओ। किन्नरी साधक को रस, रसायन तथा सिद्ध द्रव्य प्रदान करती है। परस्त्री गमन न करें। साधक पाँच हजार वर्ष तक जीवित रहता है।।

२. अथ मनोहारिणी किन्नरी मन्त्रसाधनम्

ॐ मनोहारिणि ह्रौं ।। (भूतडामरतन्त्रम्)

ॐ मनोहार्यै स्वाहा।। भूतडामरतन्त्रम् (प्रकारान्तर)

शैलमूर्ध्नि समास्थाय जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते महतीं पूजां गोमांसेन प्रकल्पयेत् ।।१।।
धूपञ्च गुग्गुलं दत्त्वा यामिन्यां जपमाचरेत् ।
अर्धरात्रौ समायाति न भेतव्यं कदाचन ।।२।।
वदेत् किमाज्ञापयसि भव भार्येतिसाधकः ।
त्रिदिवं पृष्ठमारोप्य दर्शयत्यपि यच्छति ।
कामिकं भोजनं स्वर्गं सिद्धिद्रव्यं प्रयच्छति ।।३।।

साधक रात्रि में पर्वतशिखर पर बैठकर मनोहारिणी किन्नरी का आठ हजार मन्त्र-जप करे। जप की समाप्ति पर गोमांस के द्वारा वृहद् पूजा करे। उसके पश्चात् गुग्गुल के द्वारा धूप प्रदान कर रात्रि में जप करे। अर्द्धरात्रि को मनोहारिणी किन्नरी उपस्थित होती है। साधक उन्हें देखकर भयभीत न हो। साधक से जब किन्नरी पूछे कि मेरे लिए क्या आज्ञा है तब साधक उनसे कहे—तुम मेरी भार्या बन जाओ। किन्नरी भार्या बन जाने पर साधक को पीठ पर चढ़ाकर स्वर्ग दिखलाती है तथा अभिलाषित द्रव्य एवं भोज्य प्रदान करती है।।१-३।।

३. अथ सुभगा किन्नरी मन्त्रसाधनम्

ॐ सुभगे स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

पर्वते वा वने वापि विहारे वायुतं जपेत् ।
निराहारोऽपि जपान्ते दिव्यनीरजपाणिना ।।४।।
उपचारेण सा तुष्टा भार्या भवति कामिता ।
दीनाराणि ददात्यष्टौ प्रत्यहं परितोषिता ।।५।।

साधक निराहार रह कर पर्वत, वन या विहार (देवमन्दिर) में **ॐ सुभगे स्वाहा** मन्त्र का दश हजार जप करे। जप के अन्त में कोमलांगी सुभगा किन्नरी आती है तथा सन्तुष्ट होकर साधक की भार्या बन जाती है और अपने कमल जैसे सुन्दर एवं कोमल हाथों से साधक की सेवा करती है। किन्नरी साधक को सभी प्रकार के सुख प्रदान करती है और आठ स्वर्ण मुद्राएं प्रतिदिन प्रदान करती है।।४-५।।

४. अथ विशालनेत्रा किन्नरी मन्त्रसाधनम्

नीचगातटमासाद्य जपेदयुतसङ्ख्यकम् ।
प्रपूज्य सकलां रात्रिं प्रजपेद्रजनीक्षये ।।६।।
किन्नरी शीघ्रमायाति भार्या भवति कामिता ।
दीनाराणि ददात्यष्टौ प्रत्यहं परितोषिता ।।७।।

''ॐ विशालनेत्रे स्वाहा'' इति मन्त्रः।।

साधक रात्रि में नदी संगम तट पर जाकर **'ॐ विशालनेत्रे स्वाहा'** मन्त्र का दश हजार जप करे। विशालनेत्रा किन्नरी का पूजन करके रात्रि भर जप करे। प्रातःकाल किन्नरी शीघ्रता से आती है तथा साधक की भार्या बन जाती है। साधक से सन्तुष्ट होकर उसे नित्य आठ स्वर्णमुद्राएं प्रदान करती है।।६-७।।

५. अथ सुरतप्रिया किन्नरी मन्त्रसाधनम्

ॐ सुरतप्रिये स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

नीचगासङ्गमे रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते शीघ्रमायाति चात्मानं दर्शयत्यपि ।।८।।
स्थित्वा पुरो द्वितीयेऽह्नि वचनं भाषते पुनः ।
तृतीये दिवसे प्राप्ते भार्या भवति कामिता ।
दीनाराणि ददात्यष्टौ प्रत्यहं दिव्यवाससी ।।९।।

साधक रात्रि में नदी संगमस्थल में जाकर सुरतप्रिया किन्नरी का मन्त्र आठ हजार बार जप करे। प्रथम दिन सुरतप्रिया किन्नरी शीघ्र उपस्थित होकर अपनी दिव्य मूर्ति का दर्शन देती है। दूसरे दिन जप के अन्त में किन्नरी साधक के सम्मुख आकर वार्तालाप करती है। तीसरे दिन जप के अन्त में आकर किन्नरी साधक की भार्या बन जाती है। भार्या होने पर प्रतिदिन साधक को वस्त्र एवं आठ स्वर्णमुद्राएं प्रदान करती है।।८-९।।

६. अथ अश्वमुखी किन्नरी मन्त्रसाधनम्

ॐ अश्वमुखी स्वाहा।। (भूतडामरतंत्रम्)

पर्वतमूर्ध्नि गत्वायुतं जपेत्।। तदा शीघ्रमागच्छति रसरूपेण पुरस्तिष्ठति आलिंग्य चुम्बेत् तूष्णींभावेन कामयितव्या भार्या भवति।। अष्टौ दीनारान् प्रयच्छति दिव्यकामिकभोजनं ददाति।।

साधक पर्वतशिखर पर जाकर मन्त्र का दश हजार जप करे। किन्नरी शीघ्र ही अपने रसमय एवं मनोहर स्वरूप में साधक के समक्ष उपस्थित होती है। साधक का चुम्बन-आलिंगन करती है तथा सन्तुष्ट होकर साधक की भार्या होती है। प्रतिदिन साधक को आठ स्वर्णमुद्राएं तथा दो वस्त्र प्रदान करती है।।

७. अथ सुमुखी किन्नरी मन्त्रसाधनम्

ॐ सुमुखी स्वाहा।। (भूतडामरतन्त्रम्)

शैलमूर्द्धण्यन्वह मांसाहारेणायुतकं जपेत् ।
जपान्ते पुरतः स्थित्वा चुम्बत्यालिङ्गयत्यपि ।।१०।।
तूष्णीम्भावेन सन्तुष्टा भार्या भवति कामिता ।
दीनाराणि ददात्यष्टौ दिव्यं कामिकभोजनम् ।।११।।

साधक पर्वतशिखर पर जाकर मांस की बलि प्रदान कर **'ॐ सुमुखी स्वाहा'**

मन्त्र का दश हजार जप करे। जप के अन्त में किन्नरी साधक के समक्ष आकर मौन रूप से चुम्बन, आलिंगन करती है तथा सन्तुष्ट होकर पत्नी बन जाती है तथा उसे नित्य भोज्य सामग्री एवं आठ स्वर्णमुद्राएं प्रदान करती है॥१०-११॥

८. अथ दिवाकरमुखी किन्नरी मन्त्रसाधनम्

शैलमूर्ध्नि समास्थाय जपेदयुतसङ्ख्यकम् ।
रात्रावभ्यर्च्य प्रजपेन्मन्त्रमष्टसहस्रकम् ।।१२।।
किन्नर्यन्तिकमायाति वाञ्छितार्थं प्रयच्छति ।
दीनाराणि ददात्यष्टौ भार्या भवति कामिता ।
रसं रसायनं सिद्धिद्रव्यं भोज्यं प्रयच्छति ।।१३।।

भूतडामरतन्त्रे- **ॐ दिवाकरमुखी स्वाहा।।**

साधक रात्रि में पर्वतशिखर पर बैठकर **'ॐ दिवाकरमुखी स्वाहा'** मन्त्र का दश हजार जप करे तथा श्रेष्ठ रूप से पूजन करके रात्रि में पुनः आठ हजार मन्त्र का जप करे। जप के अन्त में किन्नरी साधक के समीप आकर उसकी भार्या बन जाती है तथा वांछित पदार्थ प्रदान करती है। तदुपरान्त प्रतिदिन रस, रसायन, सिद्धिद्रव्य, भोज्य पदार्थ एवं आठ स्वर्णमुद्राएं प्रदान करती है॥१२-१३॥

यद्यष्ट किन्नर्यो न सिद्ध्यंति तदा क्रोधसहितः क्रोधमंत्रं जपेत्। ॐ ह्रीं आकट्टः कट्टः हूँ वः फट्। अस्य जपमात्रेण शिरः स्फुटति शतखण्डं विशीर्यति तदागच्छंति।।१४।।

इति सिद्धाश्रमस्थ परमहंस स्वामी श्री निखिलेश्वरानन्दस्य शिष्य अजय कुमार उत्तम विरचितायां दिव्याङ्गना तन्त्रे अष्ट किन्नरी मन्त्र साधनम् नाम तृतीयस्तरङ्गः।।३।।

यदि अष्ट किन्नरियाँ साधक को सिद्धि न प्रदान करें तो साधक क्रोधसहित क्रोध मंत्र का जप करे। **ॐ ह्रीं आकट्टः कट्ट हूँ वः फट्** यह क्रोधमन्त्र है। इसके जपमात्र से किन्नरियों के सिर फूट कर सौ टुकड़ों में विभाजित हो जाते हैं। ऐसा करने पर किन्नरियाँ साधक के समीप आकर सिद्धि प्रदान करती हैं॥१४॥

इस प्रकार सिद्धाश्रम स्थित परमहंस स्वामी श्रीनिखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य अजय कुमार उत्तम द्वारा रचित दिव्यांगना तन्त्र के अष्ट किन्नरी मन्त्र साधन नामक तीसरे तरंग की 'अनुपमा' हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई॥३॥

अथ चतुर्थः तरङ्गः

अथ अष्टनागिनी साधनम्

उन्मत्तभैरव्युवाच

सुरासुरजगत्त्राणदायक! प्रमथाधिप! ।
कालवज्र! वद त्वं मे नागिनीसिद्धिसाधनम् ।।१।।

उन्मत्तभैरवी ने पूछा—हे प्रमथेश्वर! हे कालवज्र! आप सुर-असुर तथा जगत् की रक्षा करते हैं। आप कृपा करके नागिनी सिद्धि का उपाय कहें।।१।।

उन्मत्तभैरव उवाच

अथाष्टनागराजानां सिद्धिसाधनमुच्यते ।
परिषन्मण्डलं नत्वा क्रोधराजं सुरेश्वरम् ।
मनुमासां प्रवक्ष्यामि यथा क्रोधेन भाषितम् ।।२।।

अनन्तमुखी - ॐ पूः अनन्तमुखी स्वाहा ।।
कर्कोटमुखी - ॐ पूः कर्कोटमुखी स्वाहा ।।
पद्मिनीमुखी - ॐ पूः पद्मिनीमुखी स्वाहा ।।
तक्षकमुखी - ॐ कालजिह्वा पूः स्वाहा ।।
महापद्ममुखी - ॐ महापद्मिनी स्वाहा ।।
वासुकीमुखी - ॐ वासुकीमुखी स्वाहा ।।
कुलीरमुखी - ॐ हुं हुं पूर्वभूपमुखी स्वाहा ।।
शंखिनी - ॐ शङ्खिनी वायुमुखी हुं हुं ।।

उन्मत्त भैरव ने कहा - मैं सुरेश्वर क्रोधराज को प्रणाम करके नागिनी-साधन एवं क्रोधराज द्वारा कहा गया नागिनी मन्त्र कहता हूँ।। (इनके मन्त्र मूल में लिखे हैं, पाठक वहीं देखें)।।२।।

गत्वा तु नागभुवनं लक्षमेकं जपेन्मनुम् ।
तुष्टा भवन्ति नागिन्यो ह्यनया पूर्वसेवया ।।३।।

साधक द्वारा नागस्थान में जाकर नागिनी मन्त्रों का एक लाख जप करने पर अष्टनागिनी सन्तुष्ट होकर सिद्धि प्रदान करती हैं।।३।।

विशेष-नागिनियों की साधना माता, बहन या भार्या के रूप में ही की जा सकती है।

गत्वा नागभुवं शुक्लपञ्चम्यां दापयेद्बलिम् ।
यथोक्तगन्धपुष्पाद्यैः पूजयित्वा जपञ्चरेत् ।।४।।
क्षीरेणार्घ्यं निवेद्याथ वक्तव्यं स्वागतं पुनः ।
कामिता सा भवेद्भार्या चाष्टौ मुद्राः प्रयच्छति ।।५।।

साधक शुक्ल पक्ष की पञ्चमी तिथि को नागस्थान में जाकर बलि प्रदान करे। गन्ध पुष्प से पूजन कर मन्त्र का जप करे। जप करने पर शीघ्र ही सहस्त्र नाग कन्याएं साधक के समीप आती हैं। साधक उन्हें दूध का अर्घ्य प्रदान करे तथा स्वागत वचन कहे। ऐसा करने पर नागिनी साधक की भार्या होकर उसकी समस्त अभिलाषाएं पूर्ण करती है और प्रतिदिन आठ स्वर्णमुद्राएं प्रदान करती है।।४-५।।

नीचगासङ्गमं गत्वा क्षीराहारी जपञ्चरेत् ।
सहस्त्रमन्वहं दिव्या नागिन्यायाति सन्निधिम् ।।६।।
चन्दनेन निवेद्यार्घ्यं भार्या भवति कामिता ।
दीनारमन्वहं पञ्च भोज्यं यच्छति कामिकम् ।।७।।

नदी संगम तट पर जाकर साधक क्षीराहार करके नागिनी मन्त्र का एक लाख जप करे। इस प्रकार करने पर सहस्त्र नागकन्याएं प्रतिदिन साधक के समीप आती हैं, तब साधक उन्हें चन्दन का अर्घ्य प्रदान करे। इस प्रकार करने पर नागकन्या साधक की भार्या बनकर उसे पाँच स्वर्ण मुद्राएं तथा विभिन्न प्रकार के भोज्य पदार्थ प्रतिदिन प्रदान करती है।।६-७।।

रात्रौ सरोवरं गत्वा जपेदष्टसहस्त्रकम् ।
नागिन्यायाति जपान्ते भार्या भवति कामिता ।।८।।
यद्यद्ददाति द्रव्याणि व्ययं कुर्यादशेषतः ।
व्ययाभावेन सा क्रुद्धा न ददाति प्रकुप्यति ।।९।।

साधक रात्रि में सरोवर के समीप जाकर आठ हजार नागिनी मन्त्र का जप करे। जप के अन्त में नागिनी आकर साधक की भार्या बन जाती है तथा मनोवाञ्छित द्रव्य प्रदान करती है। साधक को प्रतिदिन उस द्रव्य को व्यय कर देना चाहिए। अन्यथा नागिनी कुपित होकर साधक को धन नहीं देती है।।८-९।।

नीचगासङ्गमं गत्वा जपेदष्टसहस्त्रकम् ।
नागकन्या समायाति जपान्ते साधकान्तिकम् ।।१०।।

सूर्यवर्णासनं दत्त्वा वक्तव्यं स्वागतं पुनः ।
भार्या भूत्वाऽन्वहं स्वर्णं ददाति च शतं पलम् ।।११।।

साधक नदी संगमतट पर बैठकर मन्त्र का आठ हजार जप करे। जप के अन्त में नागकन्या साधक के समीप आती है। साधक तत्क्षण उन्हें सूर्यवर्ण के समान आसन प्रदान करे और कुशलक्षेम पूछे। इससे नागकन्या साधक की भार्या होकर प्रतिदिन सौ पल (एक पल=४० ग्राम) स्वर्ण प्रदान करती है।।१०-११।।

रात्रौ सरोवरं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्तेऽन्तिकमायाति नागकन्या मनोहरा ।।१२।।
अन्वहं भगिनी भूत्वा दीनारं वाससी पुनः ।
तुष्टा यच्छति यामिन्या साधकायोरगात्मजा ।।१३।।

साधक रात्रि में सरोवर के समीप बैठकर नागिनी मन्त्र का आठ हजार जप करे। जप के अन्त में मनोहर नागकन्या साधक के समीप आकर उसकी बहन बन जाती है तथा प्रतिदिन स्वर्णमुद्रा एवं वस्त्रद्वय प्रदान करती है। साधक से सन्तुष्ट होकर नागकन्या रात्रि में आकर साधक की अभिलाषाएं पूर्ण करती है।।१२-१३।।

गत्वा नागभुवं नाभिजलादुत्तीर्य साधकः ।
जपेदष्टसहस्रन्तु जपान्ते नागकन्यका ।।१४।।
स्वयमन्तिकमायाति सपुष्पं मूर्ध्नि दापयेत् ।
दीनाराणि ददात्यष्टौ भार्या भवति कामिता ।
कामिकं भोजनं द्रव्यमन्वहं सा प्रयच्छति ।।१५।।

साधक नागस्थान में स्थित सरोवर में जाकर नाभि तक जल में खड़ा रहे तथा नागिनी मन्त्र का आठ हजार की संख्या में जप करे। जप के अन्त में नागकन्या साधक के समीप आती है, तब साधक उनके माथे पर पुष्प चढ़ाये। इस प्रकार करने पर नागकन्या साधक की पत्नी बनकर वांछित भोजन तथा आठ स्वर्ण मुद्राएं प्रदान करती है।।१४-१५।।

रात्रौ नागभुवं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
भूयश्च सकलां रात्रिं जपेत् प्रयतमानसः ।।१६।।
साधकान्तिकमायाति सर्वालङ्कारभूषिता ।
पुष्पचन्दनतोयार्घ्यं दत्त्वा स्वागतमाचरेत् ।।१७।।
कामिता सा भवेद् भार्या सिद्धिद्रव्यं प्रयच्छति ।
रसं रसायनं राज्यं भोज्यं यच्छति नित्यशः ।।१८।।

साधक रात्रि के समय नागस्थान में जाकर नागिनी मन्त्र का आठ हजार जप करे। रात्रि में पुन: एकाग्र चित्त से मन्त्र का जप करे। जप के अन्त में नागकन्या समस्त अलंकारों से भूषित होकर साधक के समीप आती है। नागकन्या साधक की भार्या बन कर अभिलषित पदार्थ, रस, रसायन, राज्य, भोज्य पदार्थ तथा धन प्रदान करती है॥१६-१८॥

गत्वा नागभुवं रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते नागकन्या च याति साधकसन्निधिम् ।।१९।।
कामिता सा भवेद् भार्या सर्वाशाः पूरयत्यपि ।
दीनारं कामिकं भोज्यं नित्यं यच्छति वाससी ।।२०।।

साधक रात्रि में नागस्थान में जाकर नागिनी मन्त्र का आठ हजार जप करे। जप की समाप्ति पर नागकन्या साधक के समीप आती है तथा साधक की भार्या बनकर उसकी सभी आशाएं पूर्ण करती है। साधक को नित्य दिव्य वस्त्र, भोजनयोग्य पदार्थ तथा स्वर्णमुद्राएं प्रदान करती हैं॥१९-२०॥

गत्वा नागान्तिकं रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते नागकन्यासौ झटित्यायाति सन्निधिम् ।।२१।।
दद्याच्छिरसि पुष्पाणि भार्या भवति कामिता ।
दिव्यवस्त्राण्यलङ्कारं भोजनादीनि यच्छति ।।२२।।

साधक रात्रि में नागस्थान में जाकर नागिनी मन्त्र का आठ हजार जप करे। जप के अन्त में नागकन्या तत्क्षण आती है। साधक उनके मस्तक पर पुष्प चढ़ाये। नागकन्या साधक की पत्नी होकर दिव्य वस्त्र, आभूषण तथा भोजन प्रदान करती है॥२१॥२२॥

आवाहनमन्त्रः - ॐ द्राँ हुँ हुँ नागिनी प्रीँ द्राँ।।
पुष्पगन्धदानमन्त्रः - ॐ पूः तरणीमुखी स्वाहा ।।
अर्घ्यमन्त्रः - ॐ पूः शारदामुखी स्वाहा।।
ॐ पूः कालीमुखी स्वाहा ।।
ॐ पूः भैरवीमुखी स्वाहा ।।
सर्वनागकन्यासाधनमन्त्रः- ॐ पूः तामसीमुखी स्वाहा ।।
ॐ पूः कूजनीमुखी स्वाहा ।।
ॐ पूः हुँ नागिनी स्वाहा ।।

विसर्जनमन्त्रः- द्राँ हुँ द्राँ शीघ्रं गच्छ पुनरागमनाय हौं।।इति मन्त्रः।।

उपरोक्त मन्त्रों के द्वारा जो-जो कर्म लिखा गया है, उसे करे।

उच्छ्रायाऽधोऽञ्जलीशृङ्गं तर्जनीमुखसङ्गताः ।
अङ्गुष्ठमुद्रिता मुद्रा नागिनीवशकारिणी ।।२३।।
वामदक्षकरौ मुष्टी कनिष्ठानखमाक्रमेत् ।
अङ्गुष्ठेन प्रसार्यान्या नागिनीवशकारिणी ।।२४।।

अब नागकन्या मुद्राविधि कही जा रही है। साधक दोनों हाथों की अंजलि बनाकर सभी अँगुलियों के अग्रभाग को ऊर्ध्वमुख करे तथा दोनों तर्जनी के अग्रभाग से अँगूठों के अग्रभाग को स्पर्श करे। इससे नागकन्या वशीभूत हो जाती है। अब दूसरी मुद्रा का वर्णन किया जा रहा है - साधक दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बांधकर अँगूठों के द्वारा दोनों कनिष्ठा अँगुलियों के नख को छूते हुए अन्य सभी अँगुलियों को फैलाये। इस मुद्रा से भी नागकन्या वशीभूत होती है।।२३-२४।।

तथापि समयं तिष्ठेन्नागत्य कुरुते वचः ।
अनेन क्रोधयोगेन जपेदष्टसहस्रकम् ।।२५।।
प्रालेयं भीषणपदं वज्रप्राथमिकान्वितम् ।
उच्चार्यामुकनागिनीमाकर्षय समन्वितम् ।।२६।।
क्रोधबीजद्वयञ्चास्त्रं नागिनीमारणात्मकम् ।
अस्मिन् भाषितमात्रे तु क्रोधवज्रेण मूर्धनि ।।२७।।
शीर्यन्ते वा म्रियन्ते वा शिरोरोगेण मूर्च्छिता ।
अष्टौ पतन्ति नरके शुचौ वज्रानलाकुले ।।२८।।

इति सिद्धाश्रमस्थपरमहंसस्वामीश्रीनिखिलेश्वरानन्दस्य शिष्य अजय कुमार उत्तमविरचितायां दिव्याङ्गनातन्त्रे अष्ट नागिनीसाधनम् नाम चतुर्थस्तरङ्गः।।४।।

यदि मुद्रा विधि से भी नागकन्याएं वश में न हों, तब **ॐ ह्रीं वज्रभीषणाम् अमुक नागिनीम् आकर्षय हुँ हुँ फट्** मन्त्र का आठ हजार जप करे। इससे नागिनी के माथे पर क्रोधभूपति का वज्र गिरता है। वह शिरोरोग से मूर्च्छित होकर शीर्ण हो जाती है अथवा तत्क्षण उसकी मृत्यु हो जाती है और वज्राग्नियुक्त नरक में अष्टनागिनी सहित जा गिरती है।।२५-२८।।

इस प्रकार सिद्धाश्रमस्थित परमहंस स्वामी श्रीनिखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य अजय कुमार उत्तम द्वारा रचित दिव्याङ्गना तन्त्र के अष्ट नागिनी साधन नामक तीसरे तरंग की "अनुपमा" हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई।।४।।

अथ पञ्चमः तरङ्गः

अथाष्टसुन्दरीमन्त्रसाधनम्

उन्मत्तभैरव्युवाच

भगवन्! सुन्दरीमन्त्रसाधनं वद मे प्रभो! ।
मन्त्रोद्धारं तथा मुद्रामर्चनं जपपद्धतिम् ।।१।।

उन्मत्तभैरवी ने कहा-हे भगवन्! हे प्रभो! सुन्दरी मन्त्र की साधना, मन्त्रोद्धार, मुद्रा तथा अर्चन एवं जपपद्धति का वर्णन कीजिए।।२।।

उन्मत्तभैरव उवाच

एकवृक्षे देवगृहे वने वज्रधरालये ।
निम्नगासङ्गमे वापि पितृभूमावथापि वा ।
सिध्यन्ति भूतभूतिन्यो नृणामिष्टफलप्रदाः ।।२।।

उन्मत्तभैरव ने कहा-किसी वृक्ष के नीचे, देवालय में, वन में, वज्रघर के स्थान में, नदी संगम में तथा श्मशान में बैठकर साधना करने से भूत-भूतिनियाँ सिद्ध होकर मनुष्य को इच्छित फल प्रदान करती हैं।।२।।

अथ मुद्राविधिं वक्ष्ये भूतिनीमन्त्रसाधनम् ।
वाममुष्टिं दृढं बद्ध्वा मध्यमान्तु प्रसारयेत् ।
आवाह्य पूजनीमुद्राम् उत्तमाङ्गुलिसाधिनीम् ।।३।।

सर्वप्रथम भूतिनी मुद्रा विधि कहता हूँ, जो भूतिनी मन्त्र साधना के लिए अति आवश्यक है। बायें हाथ की मुट्ठी को दृढ़तापूर्वक बांध कर मध्यमा उंगली को फैलाए। यह पूजनी मुद्रा कहलाती है। इस मुद्रा में अंगुलियों की श्रेष्ठता होती है।।३।।

अन्योऽन्यमुष्टिसंयुक्ता तर्जनीन्तु प्रसारयेत् ।
सिद्ध्यते तत्क्षणादेव भूतिनी सत्यपालिनी ।।४।।

दोनों हाथों की मुट्ठियों को आपस में मिलाकर तर्जनी अँगुली को फैलाये। इससे निश्चित रूप से तत्काल ही भूतिनी सिद्ध हो जाती है।।४।।

वामहस्ते दृढ़ां मुष्टिं कनिष्ठान्तु प्रसारयेत् ।
भूतिन्याकर्षिणीमुद्रा सान्निध्याकर्षिणी स्मृता ।।५।।

बायें हाथ की मुट्ठी को दृढ़ता से बांधकर कनिष्ठा अँगुली को फैलाये। यह भूतिनी आकर्षण मुद्रा है। यह सान्निध्याकर्षिणी मुद्रा भी कही जाती है।।५।।

प्रसार्य वामहस्तन्तु तर्जनीं कुटिलाकृतिम् ।
ज्येष्ठयाङ्गुलिना बद्धा भूतिनी वशकारिणी ।।६।।

साधक सर्वप्रथम बायें हाथ की सभी अंगुलियों को फैलाये और केवल कनिष्ठा अंगुली को कुण्डलाकृति करके ज्येष्ठा अंगुली के द्वारा बद्ध करके रखे। इस मुद्रा के द्वारा भूतिनी वशीभूत हो जाती है।।६।।

वाममुष्टिं दृढ़ा कृत्वाऽनामिकान्तु प्रसारयेत् ।
भूतिन्याकर्षिणी मुद्रा सर्वविघ्नविघातिनी ।।७।।

बाएं हाथ की दृढ़ मुट्ठी बाँधकर अनामिका अंगुली को फैलाये। यह भूतिनी आकर्षणी मुद्रा सभी विघ्नों का निवारण करती है।।७।।

वामहस्ते दृढ़ां मुष्टिं ज्येष्ठाङ्गुलीं प्रसारयेत् ।
सम्मुखीकरणी मुद्रा सर्वदुष्टभयङ्करी ।।८।।

बायें हाथ की दृढ़ता से मुट्ठी बाँधकर ज्येष्ठा अंगुली को फैलाये। यह सम्मुखीकरण मुद्रा सभी दुष्ट भयों का विनाश करती है।।८।।

वामहस्ते दृढ़ां मुष्टिं कनिष्ठान्तु प्रसारयेत् ।
भूतिनी नामिका मुद्रा शीघ्रानयनकारिणी ।।९।।

बायें हाथ की मुट्ठी को दृढ़ता से बाँधकर कनिष्ठा अँगुली को फैलाये। यह भूतिनी मुद्रा है। इससे भूतिनी शीघ्र ही आती है।।९।।

यदि शीघ्रं न चायाति म्रियते शुष्यति ध्रुवम् ।
चक्षुः स्फुटति भूतिन्याः शिरः स्फुटति निश्चितम् ।।१०।।
तथापि यदि नायाति भूतिनीकालमाक्रमेत् ।
क्रोधेनानेन चाकृष्य जपेदष्टसहस्त्रकम् ।।११।।

यदि उपरोक्त मुद्राओं के द्वारा भी भूतिनी शीघ्र न आये तो उसका नेत्र तथा सिर फटने लगता है। फिर भी यदि वह न आये तो व्यर्थ में समय व्यतीत न करके क्रोधमन्त्र से आकर्षण करके १००८ बार भूतिनी मन्त्र का जप करे।।१०-११।।

आदिबीजं द्विधा चास्त्रं कूर्च्चं लज्जामतः परम्।
अमुकभूतिनीकूर्च्चास्त्रद्विठसम्पुटितो मनुः ।।१२।।
अक्ष्णि मूर्ध्नि स्फुटत्येव यादि नायाति सत्वरम्।
शुष्यते म्रियते वापि नरके पतति ध्रुवम्।।१३।।

'ॐ फट् फट् हुँ ह्रीं अमुक भूतिनी हुँ फट् स्वाहा' यह क्रोधमन्त्र है। इस मन्त्र का जप करने पर भी भूतिनी न आये तब उस भूतिनी के आँख तथा मस्तक फट जाते हैं, शरीर सूख जाता है तथा प्राणनाश के पश्चात् उसे नरक मिलता है, यह ध्रुव सत्य है।।१२-१३।।

१. अथ कुलसुन्दरीसुन्दरीमन्त्रसाधनम्

ॐ महाभूतकुलसुन्दरी हुँ आगच्छागच्छ स्वाहा।।

नदीसङ्गममासाद्य मण्डलं चन्दनात्मकम् ।
कृत्वा पुष्पैः समभ्यर्च्य गुग्गुलुना प्रधूपयेत् ।
जपेदष्टसहस्रन्तु सिद्धा स्यात् कुलसुन्दरी ।।१४।।
ततः क्रोधमनुं स्मृत्वा सहस्रं प्रजपेन्निशि ।
आयाति निश्चितं दद्यादर्घ्यं जम्बूदकेन च ।।१५।।
ततः कामयितव्या सा भार्या भवति निश्चितम् ।
त्यक्त्वा स्वर्णपलं याति प्रभाते च दिने दिने ।
मासाभ्यन्तर एवन्तु सिध्यते कुलसुन्दरी ।।१६।।

अब कुलसुन्दरी सुन्दरी के मन्त्र की साधना कही जा रही है। साधक किसी नदी के संगमस्थल पर जाकर रक्त चन्दन के द्वारा भूमि पर मण्डल बनाकर उस पर गन्ध पुष्पादि के द्वारा पूजन करके गुग्गुल के द्वारा धूप दे। तत्पश्चात् आठ हजार मन्त्र का जप करने पर कुलसुन्दरी सुन्दरी सिद्ध होगी (मन्त्र मूल में लिखा है)। तत्पश्चात् रात्रि में क्रोधमन्त्र का एक हजार जप करे। ऐसा करने पर कुलसुन्दरी निश्चित रूप से आती है। कुलसुन्दरी के आने पर जामुन के रस से अर्घ्य प्रदान करे। इससे प्रसन्न होकर कुलसुन्दरी साधक की भार्या बन जाती है। सम्पूर्ण रात्रि साधक के समीप पत्नी रूप में व्यतीत करके प्रातः साधक को एक पल (४० ग्राम) स्वर्ण प्रदान करके चली जाती है। इस साधना को एक महीने तक करने पर कुलसुन्दरी सुन्दरी सिद्ध होती है।।१४-१६।।

२. अथ विजयसुन्दरीमन्त्रसाधनम्

ॐ विजयसुन्दरी ह्रीँ अँ आगच्छागच्छ स्वाहा।।

नीचगासङ्गमं गत्वा चन्दनेन च मण्डपम् ।
दधिभक्तं निवेद्याथ जपेदष्टसहस्रकम् ।।१७।।
यावत् सप्तदिनान्येव आयाति दिवसेऽष्टमे ।
चन्दनेन निवेद्यार्घं वदेत्तुष्टा वरं वृणु ।।१८।।
साधकेन तु वक्तव्यं राज्यं मे देहि सुन्दरि! ।
राज्यं ददाति सा नित्यं वस्त्रालङ्कारभोजनम् ।
स्वयं यच्छति देवीयं तुष्टा विजयसुन्दरी ।।१९।।

साधक नदी संगमस्थल पर जाकर लाल चन्दन के द्वारा भूमि पर मण्डल बनाए। उस पर दही तथा अन्न के द्वारा पूजन करके आठ हजार मन्त्र का जप करे। इस प्रकार सात दिन तक पूजन एवं जप करने पर आठवें दिन विजयसुन्दरी आती है। साधक चन्दन को घिस कर उसका अर्घ्य उन्हें प्रदान करे। विजयसुन्दरी प्रसन्न होकर साधक से वर माँगने को कहती है। साधक उस समय कहे-हे देवि! मुझे राज्य प्रदान कीजिए। सुन्दरी साधक को राज्य प्रदान करती है तथा प्रतिदिन वस्त्र, अलंकार एवं भोजन प्रदान करती है।।१७-१९।।

३. अथ विमलसुन्दरीमन्त्रसाधनम्

ॐ विमलसुन्दरी आः आगच्छागच्छ स्वाहा।।

वज्रपाणिगृहं प्राप्य शुभ्रचन्दनमण्डले ।
हयमारप्रसूनैश्च सम्पूज्य धूपयेत् ततः ।।२०।।
गुग्गुलुना जपेदष्टसहस्रं सिद्धिमाप्नुयात् ।
सहस्रं हि जपेद्रात्रौ पुनरागच्छति ध्रुवम् ।।२१।।
दत्त्वा पुष्पाणि वक्तव्यं स्वागतं हृष्टमानसः ।
तुष्टा भवति सा भार्या दिव्याम्बररसायनम् ।।२२।।
धनं ददाति शत्रूणां करोति निधनं ध्रुवम् ।
त्रिदिवं पृष्ठमारोप्य नयतीष्टं प्रयच्छति ।।
दशवर्षसहस्राणि सुन्दरी प्रीतिसाधकम् ।।२३।।

साधक वज्रपाणि (एक बौद्ध देवता, इन्द्र) के मन्दिर में जाकर श्वेतचन्दन के द्वारा मण्डल बनाकर कनेर के पुष्पों से पूजा करके गुग्गुल के द्वारा धूप दे तथा एक

हजार आठ बार विमलसुन्दरी का मन्त्र जप करे। (मन्त्र मूल में लिखा है)। पुनः रात्रि में एक हजार मन्त्र का जप करे। ऐसा करने से सुन्दरी आती है। साधक उन्हें पुष्पाञ्जलि प्रदान करे तथा प्रसन्न मन से उनका स्वागत करे। सुन्दरी प्रसन्न होकर साधक की पत्नी बन जाती है तथा उसे दिव्य वस्त्र, रस तथा रसायन एवं धन प्रदान करती है, शत्रु का नाश करती है, साधक को अपनी पीठ पर चढ़ाकर स्वर्ग में ले जाकर मनोवांछित वस्तु भी देती है। सुन्दरी साधक से दश हजार वर्ष तक प्रसन्न रहती है॥२०-२३॥

४. अथ सुन्दरीमन्त्रसाधनम्

ॐ सुन्दरी हुँ हुँ आगच्छागच्छ स्वाहा।।

गत्वा नदीतटे कृत्वा मण्डलं गन्धवारिणा ।
गन्धेन सितपुष्पेण अर्घ्यं गुग्गुलुना पुनः ।।२४।।
धूपयित्वा जपेदष्टसहस्रं सिद्धिमाप्नुयात् ।
सहस्रं हि पुना रात्रौ जपेदागच्छति ध्रुवम् ।।२५।।
दत्त्वा पुष्पोदकेनार्घ्यं वक्तव्या भगिनी भव ।
भूत्वा तु भगिनी नित्यमिष्टद्रव्याणि यच्छति ।
रसं रसायनं काम्यं स्वयं यच्छति सुन्दरी ।।२६।।

साधक नदीतट पर जाकर सुगन्धित जल के द्वारा मण्डल बनाकर उस पर श्वेत पुष्प तथा गन्ध के द्वारा अर्घ्य प्रदान करे एवं गुग्गुल से धूपित करे। आठ हजार मन्त्र का जप करने से सुन्दरी देवी सिद्ध हो जाती है। पुनः रात्रि में एक हजार मन्त्र का जप करे। इससे सुन्दरी साधक के समीप आती है। साधक उन्हें पुष्पमिश्रित जल द्वारा अर्घ्य प्रदान करके कहे-हे देवि! तुम मेरी बहन बन जाओ। देवी उसी समय साधक की बहन बनकर साधक को विभिन्न प्रकार के द्रव्य, रस, रसायन एवं इच्छित पदार्थ प्रदान करती है॥२४-२६॥

५. अथ मनोहरीसुन्दरीमन्त्रसाधनम्

ॐ मनोहरी सुन्दरी धीः आगच्छागच्छ स्वाहा।।

शून्यं देवालयं गत्वा बलिं दत्त्वा यथोचितम् ।
जपेदष्टसहस्रन्तु सिद्धा यच्छति सन्निधिम् ।।२७।।
कामिता सा भवेद्भार्या राज्यं यच्छति वाञ्छितम् ।
स्वर्गं नयति सा तुष्टा पृष्ठमारोप्य दुर्लभम् ।

राजकन्याः समादाय प्रयच्छति दिने दिने ।
दीनाराणां सहस्रन्तु प्रददाति मनोहरा ।।२९।।
पञ्चवर्षसहस्राणि भुक्त्वा भोगं महीतले ।
मृते राजकुले जन्म भवतीति न संशयः ।।३०।।

साधक किसी निर्जन देवालय में जाकर यथोचित विधि से बलि प्रदान करे तथा पूजन करे। साधक आठ हजार मन्त्र का जप करे। ऐसा करने पर मनोहरी सुन्दरी साधक के समीप आती है तथा साधक की पत्नी होकर राज्य एवं वाञ्छित पदार्थ प्रदान करती है। सुन्दरी अपनी पीठ पर बैठाकर साधक को स्वर्ग में ले जाती है तथा प्रतिदिन अनेक दुर्लभ राजकन्याएं लाकर देती है। साधक को मनोहरा सुन्दरी प्रतिदिन एक हजार स्वर्ण मुद्राएं प्रदान करती है। इस प्रकार साधक पृथ्वी पर अनेक भोगों का भोग करने के बाद मरने के पश्चात् राजकुल में जन्म लेता है।।२७-३०।।

६. अथ भूषणसुन्दरीमन्त्रसाधनम्

ॐ क्लीं भूषणसुन्दरी आगच्छागच्छ स्वाहा।।

नीचगासङ्गमं प्राप्य मण्डलं परिकल्पयेत् ।
दत्त्वामिषोपहारञ्च करवीरप्रसूनकम् ।।३१।।
धूपञ्च गुग्गुलं दत्त्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
सिद्धा भवति कामिन्याः पुनः पूजां समाचरेत् ।।३२।।
प्रज्वाल्य घृतदीपञ्च सहस्रं प्रजपेन्मनुम् ।
नूपुरस्य तु शब्देन देवी भुवनसुन्दरी ।।३३।।
सहस्रार्द्धपरीवारैर्युक्ता गच्छति सन्निधिम् ।
कामिता तुष्टिभावेन भार्या भवति नान्यथा ।।३४।।
भार्यात्वे च परीहारे भवेद् ध्रुवम् ।
प्रत्यहं पृष्ठमारोप्य सूर्यलोकं नयत्यपि ।।३५।।
पञ्चवर्षसहस्राणि भुक्त्वा भोगमनुत्तमम् ।
मृते राजकुले जन्म भवतीति न संशयः ।।३६।।

साधक नदीसंगमस्थल पर जाकर भूमि पर मण्डल का निर्माण करे तथा मांस के उपहार एवं कनेर पुष्पों से देवी का पूजन करे, गुग्गुल के द्वारा धूप प्रदान करे और मूल मन्त्र का आठ हजार जप करे। इस प्रकार करने पर सुन्दरी भूषणसुन्दरी सिद्ध होती

है। सिद्ध होने पर साधक पुन: रात्रि में विविध उपहारों के द्वारा पूजन करे, घी का दीप जलाकर एक हजार मन्त्र का जप करे। ऐसा करने पर त्रिभुवनसुन्दरी भूषणसुन्दरी अपने पाँच सौ परिवारों के साथ साधक के समीप नूपुर ध्वनि करती हुई आती है। वह साधक की भार्या बनकर रहती है तथा साधक को अपनी पीठ पर बैठाकर सूर्यलोक में ले जाती है। साधक विविध प्रकार के भोगों का भोग करता हुआ पाँच हजार वर्ष तक जीवित रहता है और मृत्यु के उपरान्त निश्चित रूप से राजकुल में जन्म लेता है॥३१-३६॥

७. अथ धवलसुन्दरीमन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं धवलसुन्दरी आगच्छागच्छ स्वाहा॥

कुङ्कुमेन विधायाथ मण्डलं नीचगातटे ।
धूपश्चात्राऽगुरुं दत्त्वा बलिं दद्याद् यथोचितम् ॥३७॥
जपेदष्टसहस्रन्तु पुना रात्रावतन्द्रितः ।
प्राग्वत् पूजां विधायाथ सहस्रं प्रजपेन्मनुम् ॥३८॥
आगता चेत्ततो दद्यादर्घं चन्दनवारिणा ।
हृष्टा ब्रूते वरं ब्रूहि स्वयं धवलसुन्दरी ॥३९॥
साधकेन तु वक्तव्यं मातृवत् परिपालय ।
सहस्रार्धपरीवारं वस्त्रालङ्कारभोजनैः ॥४०॥
नित्यं तोषयते देवी वाञ्छितार्थं प्रयच्छति ।
दशवर्षसहस्राणि भोगान् भुक्त्वा मृतो भवेत् ।
पुनर्विप्रकुले जन्म भवतीति न संशयः ॥४१॥

साधक किसी नदी के किनारे जाकर कुंकुम के द्वारा मण्डल बनाये, अगुरु द्वारा धूप प्रदान करे तथा बलि देकर आठ हजार मन्त्र का जप करे। पुन: रात्रि में साधक विधिवत् पूजन एवं बलि प्रदान कर एक हजार मन्त्र का जप करे। सुन्दरी के आने पर साधक उन्हें चन्दन के द्वारा अर्घ्य प्रदान करे। धवलसुन्दरी प्रसन्न हो जाने पर साधक से वर माँगने को कहती है। साधक उनसे कहे-हे देवि! माता के समान मेरा पालन करो। इस प्रकार सिद्ध होने पर सुन्दरी पाँच सौ परिवारों के साथ साधक को प्रतिदिन वस्त्र, आभूषण, भोज्य पदार्थ, द्रव्य तथा वांछित धन प्रदान करके सन्तुष्ट करती है। साधक दस हजार वर्ष तक भोग भोगने के बाद मृत्यु के पश्चात् ब्राह्मणकुल में जन्म लेता है॥३७-४१॥

30669

८. अथ मधुमत्तसुन्दरीमन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं मधुमत्तसुन्दरी आगच्छागच्छ स्वाहा।।

नीचगासङ्गमं गत्वा कृत्वा पूजामनुत्तमाम् ।
प्रज्वाल्य घृतदीपञ्च बलिं दत्त्वा प्रयत्नतः ।।४२।।
पूजयेत् सकलां रात्रिमेकचित्तो भयोज्झितः ।
ततोऽर्धरात्रिसमये समागच्छति सन्निधिम् ।।४३।।
कर्त्तव्यं किं मया धीर वद त्वं निजवाञ्छितम् ।
साधकेन च वक्तव्यं राज्यं मे देहि सुन्दरि! ।।४४।।
राज्यं यच्छति सा तुष्टा दीनाराणां सहस्रकम् ।
दिने दिनेऽपि वा लक्षं ददाति म्रियते यदि ।
सार्वभौमकुले जन्म वज्रपाणिप्रसादतः ।।४५।।

इति सिद्धाश्रमस्थपरमहंसस्वामीश्रीनिखिलेश्वरानन्दस्य शिष्य अजय कुमार उत्तम कुमारविरचितायां दिव्याङ्गनातन्त्रे अष्टसुन्दरीमन्त्रसाधनम् नाम पञ्चमस्तरङ्गः।।५।।

साधक नदी संगमतट पर बैठकर उत्तम रूप से पूजन करे। घी का दीपक जलाकर प्रयत्नपूर्वक रात्रि भर निर्भय होकर जप करे। रात्रि की समाप्ति पर सुन्दरी आकर साधक से पूछती है कि - तुम्हारा कौन सा कार्य मुझे करना है? साधक सुन्दरी से कहे- हे सुन्दरि! मुझे राज्य प्रदान करो। सुन्दरी प्रसन्न होकर साधक को राज्य एवं एक हजार स्वर्ण मुद्राएं तत्काल प्रदान करती है। इस प्रकार सुन्दरी एक लाख स्वर्ण मुद्राएं प्रतिदिन प्रदान करती रहती है। मरने के उपरान्त साधक वज्रपाणि की कृपा से राजकुल में जन्म लेता है।।४२-४५।।

इस प्रकार सिद्धाश्रम परमहंस स्वामी श्रीनिखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य अजय कुमार उत्तम द्वारा रचित दिव्यांगना तन्त्र के अष्ट सुन्दरी मन्त्र साधन नामक पांचवें तरंग की ''अनुपमा'' हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई।।५।।

अथ षष्ठः तरङ्गः

अथ भूतिनीमन्त्रसाधनम्

१. अथ विभूषिणी भूतिनी मन्त्रसाधनम्

हूँ हूँ फट् फट् विभूषिणी भूतिन्यै हूँ हूँ हूँ हूँ ॐ ह्रीं ह्रीं फट् फट्। । (फेत्कारिणीतन्त्रम्)

ॐ ह्रीं ह्रीं फट् फट् विभूषिणी हूँ हूँ। (फेत्कारिणीतन्त्रम्, क्रियोड्डीशतन्त्रम्)

दक्षे कर्त्तरिकां परेऽसिलतिकां हस्ताब्जे विभ्रती
ह्युत्तुंगस्तनशोभिवक्षसि चलैर्हारादिभिः शोभिता ।
दन्तान्तर्गतमांसशोणितवसासिक्तास्ति यस्यास्तनूः
कालश्यामलवर्णिकाम्रेगभुजंगैर्वेष्टिता रक्षतु ।।१।।
चम्पावृक्षतले रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
दिनानि त्रीणि जपान्त उदारार्चनमाचरेत् ।।२।।
धूपञ्च गुग्गुलं दत्त्वा पुना रात्रौ जपेन्मनुम् ।
अर्धरात्रिगते देवि समागच्छति भूतिनी ।।३।।
दद्याद्गन्धोदकेनार्घ्यं तुष्टा मात्रादिका भवेत् ।
मातेत्यष्टशतानाञ्च वस्त्रालङ्कारभोजनम् ।।४।।
भगिनी चेत्तदा नारीं दूरादाकृष्य सुन्दरीम् ।
रसं रसाञ्जनं दिव्यं विधानञ्च प्रयच्छति ।।५।।
भार्या चेत् पृष्ठमारोप्य स्वर्गं नयति यच्छति ।
दीनाराणां सहस्रं तु रसं चैव रसायनम् ।।६।।
सर्वाशाः पूरयत्येव सदा देवी विभूषिणी ।।७।।

एक हाथ में कैंची तथा दूसरे हाथ में तलवार धारण करने वाली, कुम्भ के समान ऊंचे एवं विशाल स्तनों वाली, वक्षस्थल में हारादि आभूषण धारण करने वाली, दांतों के अग्रभाग से शत्रुओं के मांस, रक्त एवं वसा को चबाकर पीने से जिनकी देह भीग गयी है, काल के समान श्याम रंग वाली, आम्र के वृक्ष से आश्रित व्यालवर्ग से सुशोभित पृष्ठ देशवाली देवी मेरी रक्षा करें।

इस प्रकार ध्यान कर साधक रात्रि में चम्पा वृक्ष के नीचे विभूषिणी मन्त्र का आठ हजार जप करे। तीन दिन जप करके साधक महापूजा करे, तत्पश्चात् गुग्गुल का धूप

देकर पुनः मन्त्र का जप करे। विभूषिणी रात्रि में साधक के समीप आती है, साधक उन्हें चन्दन का अर्घ्य प्रदान करे। विभूषिणी प्रसन्न होकर साधक की इच्छानुसार माता, भगिनी अथवा भार्या बन जाती है। माता होने पर आठ सौ वस्त्र, आभूषण तथा भोजन प्रदान करती है। भगिनी की स्थिति में सुन्दर स्त्रियाँ दूर से लाकर साधक को प्रदान करती है तथा विविध रसायन एवं भोज्य पदार्थ प्रदान करती है। भार्या होने पर अपनी पीठ पर चढ़ाकर स्वर्ग ले जाती है तथा एक हजार स्वर्णमुद्राएं, विविध रस-रसायन प्रदान करती है। विभूषिणी भार्या रूप में साधक की समस्त इच्छाएं पूर्ण करती है।।१-।।७।।

२. अथ कुण्डल धारिणी भूतिनी मन्त्रसाधनम्

ॐ ॐ ह्रौं ह्रौं फ़ट् फट् कुण्डलधारिणी हूँ हूँ हूँ फट्।। (फेत्कारिणीतन्त्रम्)

कर्णे कुण्डलधारिणी शशिमुखी लीलावती सस्मिता
शैलश्रोणिविलम्बिकाञ्चिविततव्यामुग्धलोकत्रया ।
मुक्ताहारमरीचिकान्तिविलसत्प्रोत्तुङ्गकुम्भस्तनी
पायात्कुण्डलधारिणी त्रिजगतामानन्दसन्दोहभूः ।।८।।
रात्रौ गत्वा श्मशाने च जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते कुण्डलवती समागच्छति सन्निधिम् ।।९।।
रुधिरार्घ्येण सन्तुष्टा मातृवत् पालयत्यपि ।
पञ्चविंशतिदीनारं ददाति म्रियतेऽन्यथा ।।१०।।

'ॐ ॐ ह्रौं ह्रौं फट् फट् कुण्डलधारिणी हूँ हूँ हूँ फट्' यह कुण्डलधारिणी भूतिनी का मन्त्र है। अब इसका ध्यान कहते हैं-कानों में कुण्डल धारण करने वाली, चन्द्रमा के समान मुखवाली, लीला करने वाली, मन्द-मन्द मुस्कान वाली, पर्वत के समान विशाल नितम्बों में करधनी धारण करने वाली, तीनों लोकों को मुग्ध करने वाली, मोतियों के हार की कान्ति से विभूषित उन्नत कुम्भ के समान स्तनवाली, तीनों लोकों को आनन्द प्रदान करने वाली, पृथिवीस्वरूपा कुण्डलधारिणी देवी मेरी रक्षा करें।

साधक रात्रि में श्मशान में जाकर कुण्डलधारिणी का मन्त्र आठ हजार जप करे। जप के अन्त में कुण्डलधारिणी साधक के पास आती है, उन्हें रक्त का अर्घ्य प्रदान करे। भूतिनी प्रसन्न होकर साधक का माता के समान पालन करती है तथा २५ स्वर्णमुद्राएं प्रदान करती है। ऐसा न करने पर भूतिनी की मृत्यु हो जाती है।।८-१०।।

३. अथ सिन्दूरहारिणीभूतिनीमन्त्रसाधनम्

हूँ हूँ फट् फट् सिन्दूरहारिणी हूँ हूँ हूँ फट्।। (फेत्कारिणीतन्त्रम्)

स्वर्णालङ्कृतहारिणी चलदलव्यालोलशाखाम्बरा
सोत्कण्ठीकृतगात्रयष्टिशुभगा शुभ्रांशुचन्द्रस्मिता ।
अन्तःसन्ततकान्तिकान्तमलिना त्रैलोक्यशोभागता
पायादुन्नतबाहुयुग्मलतिका सिन्दूरहारिण्यसौ ।।११।।
शून्यदेवालयं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
शीघ्रमायात्यागता सा भार्या भवति कामिता ।।१२।।
पञ्चविंशतिदीनारान् वस्त्रालङ्कारभूषणा ।
रक्षति द्वादशदिनं देवी सिन्दूरहारिणी ।।१३।।

स्वर्णाभूषणों से अलंकृत, पीपल के पत्ते के समान कम्पित स्वर वाली, उत्कण्ठायुक्त शरीर से सुशोभित, उज्ज्वल चन्द्रमा के समान हास्य वाली, मलिन दन्तकान्तियुक्त, तीनों लोकों की शोभा करने वाली, उन्नत भुजाओं वाली, सिन्दूरहारिणी हमारी रक्षा करे।

इस प्रकार ध्यान करके साधक निर्जन देवस्थान में जाकर सिन्दूरहारिणी मन्त्र का आठ हजार जप करे। जप के अन्त में सिन्दूरहारिणी शीघ्रता से आकर साधक की भार्या बन जाती है और साधक को पच्चीस स्वर्णमुद्राएं, वस्त्र, अलंकार व आभूषण प्रदान करती है। साधक की बारह दिन तक रक्षा करती है।।११-१३।।

४. अथ सिंहिनीभूतिनीमन्त्रसाधनम्

ह्रीं ह्रीं फट् फट् फट् सिंहिनी हूँ हूँ हूँ फट्।। (फेत्कारिणीतन्त्रम्)

शैलाग्रद्रुमदुर्गदन्तवदरीदुर्गान्तिदैत्यस्थिता
केशायास्थिसमस्तविष्णुचरणप्रभ्रष्टसंत्रासिनी ।
या दन्ताबलदन्तधारणरणत्प्रक्षुब्धसिद्धाङ्गना
सेयं पातु समस्तमस्तककुलव्याकल्पिमालाकुला ।।१४।।
गत्वैकलिङ्गं यामिन्यां जपेदष्टायुतं मनुम् ।
ततो हृष्टाऽतिवरदा सिंहिन्यायाति पूजिता ।।१५।।
किं करोमि वदत्येवं भार्या भवति कामिता ।

दिनावसाने यामिन्यां सिंहिन्यायाति राति च ।
वस्त्रयुग्मं रसमयं साधकाय दिने दिने ।।१६।।

साधक भूतिनी का ध्यान करके शिवमन्दिर में जाकर मन्त्र का अस्सी हजार जप करे। मन्त्रजप तथा पूजन से वरप्रदायक सिंहिनी देवी प्रसन्न होकर साधक से पूछती है कि मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ? साधक सिंहिनी भूतिनी से कहे कि तुम मेरी भार्या बन कर सन्तुष्ट करो। सिंहिनी सायंकाल आकर प्रतिदिन दो वस्त्र एवं रसमय पदार्थ प्रदान करती है।।१४-१६।।

५. अथ हंसिनीभूतिनीमन्त्रसाधनम्

ॐ हूँ हूँ हूँ हंसिनी भूतिनी हूँ हूँ हूँ फट्।। (फेत्कारिणीतन्त्रम्)

शुभ्राशुभ्रसरोजतुल्यनयना सायुग्मबाणान्विता
शुश्रूषाकुलमुग्धसाध्यवनिता संसेविता सादरम् ।
किंचित्तिर्यगपांगलोलवलितव्यामुग्धस्मेरानना
दिव्या काञ्चनरत्नहारललिता श्री हंसिनी पातु नः ।।१७।।
वज्रपाणिर्गृहं गत्वा प्रतिमां शोभनां लिखेत् ।
हयमारेण संपूज्य जपेदयुतसंख्यकम् ।।१८।।
यावदर्धनिशां देवी हंसिन्यायाति निश्चितम् ।
चन्दनार्घ्यप्रदानेन हृष्टा वदति साधकम् ।।१९।।
किं ते मयाद्य कर्तव्यं किङ्करी भव साधकः ।
वस्त्रालङ्कारभोज्याद्यं व्ययार्थं संप्रयच्छति ।
तदशेषव्ययाभावान्न ददाति प्रकुप्यति ।।२०।।

ॐ हूँ हूँ हूँ हंसिनी भूतिनी हूँ हूँ हूँ फट् यह हंसिनी भूतिनी का मन्त्र है। इसका ध्यान इस प्रकार है- श्वेतवर्णा, श्वेत कमल के समान नेत्र वाली, दो शेरों से युक्त, सेवा में तत्पर मुग्ध साध्य वधूगण से आदरपूर्वक सेवित, होठों को कुछ तिरछा कर मधुर हास्य करने वाली, दिव्य रूप वाली, अति मनोहर स्वर्णरत्न से निर्मित हार धारण करने वाली हंसिनी हमारी रक्षा करे।

इस प्रकार ध्यान करके साधक वज्रपाणि देवता के मंदिर में जाकर सुन्दर प्रतिमा (चित्र) लिखे तथा कनेर के पुष्पों से पूजा कर मन्त्र का दश हजार जप करे। अर्द्धरात्रि को हंसिनी देवी निश्चित रूप से आती है। साधक उन्हें चन्दन का अर्घ्य

प्रदान करे। देवी सन्तुष्ट होकर साधक से पूछती है कि—हे साधक! मैं तुम्हारे लिए क्या करूं? साधक उनसे कहे कि हे देवि! आप मेरी दासी हो जाएं। देवी दासी बनकर साधक को वस्त्र, आभूषण एवं भोज्य पदार्थ प्रदान करती है। साधक वह सब व्यय कर दे, अपने पास बचाकर कुछ भी न रखे। बचा कर रखने पर देवी क्रुद्ध हो जाती है और साधक को कुछ भी नहीं देती है।।१७-२०।।

६. अथ नटीभूतिनीमन्त्रसाधनम्

श्रीशिव उवाच

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि चेटिकासाधनोत्तमम् ।
यत्प्रसादं नरो लब्ध्वा सर्ववाञ्छितमाप्नुयात् ।।२१।।
तारक्रोधास्त्रयुगतो नटीति पदमुच्चरेत् ।
कूर्चत्रयान्ते मन्त्रोऽयं कथितो नर्तकीमनुः ।।२२।।

ॐ हुँ हुँ फट् फट् नटी हूँ हूँ हूँ।।

फुल्लेन्दीवरसुन्दरोदरमुखीमुत्तुङ्गकुम्भस्तनीं
खेलत्खञ्जनयुग्ममञ्जुनयनामानन्ददायिस्मिताम् ।
क्षीराम्भोनिधिसम्भवा विलसिता भक्तारिसंनाशिनी
वीणागीतविशालिनी भगवती व्याहार वाक्चातुरी ।।२३।।
नीचगासङ्गमं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
सप्तदिनावसानेषु पूजां कुर्यादनुत्तमाम् ।।२४।।
तिरोभावं गते सूर्ये धूपयेच्चन्दनेन च ।
जपेद् यावदर्द्धरात्रं समायाति महानटी ।।२५।।
आगता सा भवेद् भार्या नित्यं स्वर्णपलं शतम् ।
प्रभाते याति सन्त्यज्य सर्वशेषं व्ययेद् बुधः ।
तद्व्ययाभावतो भूयो न ददाति प्रकुप्यति ।।२६।।

भगवान् शिव ने कहा—हे देवि! अब मैं श्रेष्ठ चेटिका साधन कह रहा हूँ। ध्यान देकर सुनो। इस चेटिका साधन के द्वारा साधक अपनी समस्त इच्छाएं पूर्ण कर लेता है। **ॐ हुँ हुँ फट् फट् नटी हूँ हूँ हूँ'** यह नर्तकीस्वरूपा नटी का मन्त्र है। इसका ध्यान इस प्रकार है—खिले हुए कमल के समान सुन्दर मुख एवं उदर वाली, कलश के समान सुडौल, ऊँचे एवं विशाल स्तन वाली, खञ्जन के समान

चञ्चल एवं मनोहर नेत्रों वाली, आनन्दपूर्वक मंद-मंद मधुर हास्य करने वाली, क्षीरसागर से उत्पन्न हुई, विलासिनी, अपने भक्तों के शत्रुओं का नाश करने वाली, मनोहर एवं प्रेममयी वाणी बोलने वाली भगवती नटी का मैं ध्यान करता हूँ।

साधक नदी के संगमस्थल पर जाकर मूल मंत्र का आठ हजार जप करे। ऐसा सात दिन तक करे तथा जप के अन्त में विविध उपचारों के द्वारा नटी का पूजन करे। सूर्य के अस्त होने पर चन्दन का धूप जलाये तथा अर्द्धरात्रि तक महानटी के मन्त्र का जप करे। जप करने पर महानटी आती है तथा साधक की भार्या होकर प्रतिदिन उसे सौ पल (१ पल=४०ग्राम) स्वर्ण प्रदान करती है। सम्पूर्ण रात्रि साधक के साथ बिताकर प्रातः नटी लौट जाती है। साधक को नटी द्वारा दिया गया स्वर्ण प्रतिदिन व्यय कर देना चाहिए, अन्यथा महानटी कुपित होकर साधक को स्वर्ण नहीं देती है।।२१-२६।।

७. अथ चेटीभूतिनीमन्त्रसाधनम्

ॐ हूँ हूँ फट् फट् चेट्यै हुँ हुँ।। (फेत्कारिणीतन्त्रम्)

देव्येषाऽमृतभाषिणी शशिमुखी भ्रष्टोत्तरीयाधरा
विभ्राणा कलशं सरोजममलं स्वर्णं च सीमंतके।
श्रीखण्डादिविलेपनामलवपुः सौरभ्यसंभाविता
किञ्चिद्धर्मसमाहिता पिकरवा पायात्प्रभाचेटिका ।।२७।।
यामिन्यां स्वगृहद्वारे जपेदष्टसहस्रकम् ।
त्र्यहं यावज्जपान्तेऽसौ समायात्यन्तिके पुनः ।।२८।।
चेटीकर्म करोत्येवं गृहसंस्कारकर्म च ।
करोति क्षेत्रजं कर्म वज्रपाणिप्रसादतः ।।२९।।

ॐ हूँ हूँ फट् फट् चेट्यै हुँ हुँ यह चेटी का मन्त्र है। इनका ध्यान इस प्रकार है- अमृत के समान मधुर बोलने वाली, चन्द्रमा के समान सुन्दर एवं गोल मुख वाली, केवल उत्तरीय को धारण करने वाली, सुन्दर एवं मनोहर अधरों वाली, कमलदल के समान सुन्दर कलश धारण करने वाली, सीमन्त (मांग)प्रदेश में स्वर्णाभूषण धारण करने वाली, चन्दनादि के लेप से सुगंधित शरीर वाली, कोकिल के समान मनोहर कण्ठवाली चेटी मेरी रक्षा करे।।

साधक रात्रि में अपने घर के द्वार पर बैठकर चेटी मन्त्र का आठ हजार जप करे। साधक ३ दिन तक ऐसा करे। ऐसा करने पर चेटी साधक के घर में आकर घर की सफाई आदि कर्म करती है। सभी कार्य दासी की भाँति करती है।।२७-२९।।

८. अथ कामेश्वरीभूतिनीमन्त्रसाधनम्

ॐ हूँ फट् फट् कामेश्वरी भूतिन्यै हुँ हुँ हुँ।। (फेत्कारिणीतन्त्रम्)

ॐ तालस्कन्धसमागता मधुरता कामन्तु पुष्पान्विता
गायन्ती मधुरस्वरा स्मितमुखी वीणावती चञ्चला ।
रक्ताम्भोजविलोचना मधुमदैर्युक्ता समन्तादियं
पायात् पुष्पधनुर्धरा मधुमुखी कामेश्वरी भूतिनी ।।३०।।
गत्वा मातृगृहं रात्रौ मत्स्यमांसं प्रदापयेत् ।
सहस्रन्तु जपेत् कामेश्वरीं सप्तदिनावधि ।।३१।।
आगता यदि चेद्भक्त्याऽर्घ्येण सन्तोषिता सती ।
वदेत् किमाज्ञापयसि भव भार्या प्रियामम।
आशाश्च पूरयत्येवं राज्यं यच्छति कामिता ।।३२।।

'ॐ हूँ फट् फट् कामेश्वरी भूतिन्यै हुँ हुँ हुँ' यह कामेश्वरी भूतिनी का मन्त्र है। इसका ध्यान इस प्रकार है - ताल वृक्ष पर निवास करने वाली, मधुपान में आसक्ति रखने वाली, अत्यधिक पुष्पों से युक्त, मधुर स्वर में गाने वाली, हास्यमुखी, वीणा से युक्त, चञ्चल स्वभाव वाली, लाल कमल के समान नेत्र वाली, मधुपान से मदमस्त, पुष्प का धनुष धारण करने वाली, मधु के समान मधुर मुख वाली कामेश्वरी भूतिनी का मैं ध्यान करता हूँ।

साधक रात्रि में देवी के मन्दिर में जाकर मछली का मांस प्रदान कर सात दिनों तक प्रतिदिन एक हजार मंत्र का जप करे। इससे कामेश्वरी साधक के समीप आती है, उस समय साधक उन्हें भक्तिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करे। साधक से कामेश्वरी पूछती है कि मेरे लिए क्या आज्ञा है? साधक उनसे कहे कि मेरी प्रिया भार्या बनकर मुझे सन्तुष्ट करे। भार्या होने पर कामेश्वरी साधक की सभी इच्छाएं पूरी करती है तथा राज्य प्रदान करती है।।३०-३२।।

९. अथ रतिप्रियामन्त्रसाधनम्

ॐ ह्रीं हूँ हूँ रतिप्रिये हुँ हुँ फट्।। (फेत्कारिणीतन्त्रम्)

हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितले हेमपीठाधिरूढ़ा
यक्षीबाला विसर्पत्परिमलकुसुमोद्भासि धम्मिलधारा ।
पीनोत्तुङ्गस्तनाढ्या कुवलयनयना रक्तवर्णा कराभ्यां
भ्राम्यद् रक्तोत्पलाभा सकलसुरनता दिव्यभूषाङ्गहारा ।।३३।।

रतिप्रिया की साधना कामेश्वरी की भाँति ही करे। मन्त्र एवं ध्यान ऊपर दिये गये हैं।।३३।।*

---

* ध्यान का अर्थ द्वितीय तरंग में देखें।

१०. अथ कुमारीमन्त्रसाधनम्

हुँ हुँ फट् फट् देवी हुँ हुँ।। (फेत्कारिणीतन्त्रम्)

हुँ हुँ फट् फट् देव्यै हुँ हुँ हुँ।। (प्रकारान्तर-फेत्कारिणीतन्त्रम्)

दिव्यकामुकहेमाभा कुमारी दिव्यरूपिणी ।
सर्वालङ्कारसंयुक्ता भार्या भवति कामिता ।।३४।।
रात्रौ देवगृहं गत्वा शुभं शय्यां प्रकल्पयेत् ।
जातीपुष्पेण वस्त्रेण सितगन्धेन पूजयेत् ।।३५।।
धूपञ्च गुग्गुलं दत्त्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते शीघ्रमायाति चुम्बत्यालिङ्गयत्यपि ।।३६।।
सर्वालङ्कारसंयुक्ता सम्भोगादिसमन्विता ।
यच्छत्यष्टौ दीनाराणि भार्या भवति कामिता ।।३७।।
वाससी भोजनं दिव्यं कामिकञ्च रसायनम् ।
कुबेरस्य गृहादेव द्रव्यमाकृष्य यच्छति ।।३८।।

इति सिद्धाश्रमस्थपरमहंसस्वामीश्रीनिखिलेश्वरानन्दस्य शिष्य अजय कुमार उत्तम विरचितायां दिव्याङ्गनातन्त्रे भूतिनीमन्त्रसाधनम् नाम षष्ठस्तरङ्गः।।६।।

हुँ हुँ फट् फट देवी हुँ हुँ तथा **हुँ हुँ फट् फट् देव्यै हुँ हुँ हुँ** यह दो मन्त्र फेत्कारिणीतन्त्र के हैं। साधक इनमें से किसी एक मन्त्र का उपयोग करे। इसका ध्यान इस प्रकार है-दिव्य धनुष को धारण किये हुए, स्वर्ण के समान काँति वाली, दिव्य रूपवाली, सभी प्रकार के आभूषणों से शोभित, कुमारी देवी जप कर्म से भार्या होती है।

साधक किसी देवालय में जाकर रात्रि के समय वहाँ एक उत्तम शय्या बनाकर चमेली के पुष्प, वस्त्र तथा श्वेत चन्दन से पूजन करे। तत्पश्चात् गुग्गुल से धूप प्रदान कर मन्त्र का आठ हजार जप करे। जप के अन्त में देवी आकर साधक का चुम्बन, आलिंगन करती है। विभिन्न आभूषणों से सुशोभित होकर भार्या रूप में सम्भोगादि कर्म करने के पश्चात् साधक को आठ स्वर्णमुद्राएं, वस्त्र, मनोहर भोजन तथा कुबेर के घर से धन लाकर देती है।।३४-३८।।

इस प्रकार सिद्धाश्रम स्थित परमहंस स्वामी श्रीनिखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य अजय कुमार उत्तम द्वारा रचित दिव्यांगना तन्त्र के भूतिनी मन्त्र साधन नामक छठवें तरंग की "अनुपमा" हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई।।६।।

अथ सप्तमः तरङ्गः

अथ कात्यायनीमन्त्रसाधनम्

सुरकात्यायनीमन्त्रः- ॐ भ्रूँ हूँ फट्।।

महाकात्यायनीमन्त्रः- ॐ हुँ ज्वाला हूँ फट्।।

रुद्रकात्यायनीमन्त्रः- ॐ ह्रौं ह्रौं हूँ हूँ हे हे फट् स्वाहा।।

चण्डकात्यायनी मन्त्रः- ॐ रुद्रभयङ्करि अट्टहासिनि साधकप्रिये महाविचित्ररूपकरि सुवर्णहस्ते यमनिकृन्तनि सर्वदुःखप्रशमनि ॐ ॐ ॐ हुँ हुँ हुँ हुँ शीघ्रं सिद्धिं मे प्रयच्छ हौं अः स्वाहा।।

प्रकारान्तरे- ॐ ऐ क्रं रुद्रभयंकरि अट्टाट्टहासिनि साधकप्रिये महाविचित्ररूपे रत्नाकरि सुवर्णहस्ते यमनिकृंतनि सर्वदुःखप्रशमनि उँ उँ उँ उँ हूँ हूँ हूँ शीघ्रं सिद्धिं प्रयच्छ ह्रौं जः स्वाहा।।

वज्रकात्यायनीमन्त्रः- ॐ यमनिकृन्तनि अकालमृत्युनाशिनि खड्गत्रिशूलहस्ते शीघ्रं सिद्धिं मे देहि भोः साधकं समाज्ञापय ह्रौं स्वाहा।।

कुण्डलकात्यायनीमन्त्रः-ॐ हेयकुण्डलिनि धीर धीर ज्वल ज्वल दिव्य-महाकुण्डलविभूषिते वारणमथिनि भगवन्नाज्ञापयसि स्वाहा।।

जयकात्यायनीमन्त्रः- ॐ कुटी कुटी स्वाहा कुटु कुटु धीर धीर ज्वल ज्वल स्वाहा कुलमुखी गच्छ वेताल उपरि अनिशं कुण्डल कुण्डल आं आं भगवन् आज्ञापय अः स्वाहा।।

सुभगकात्यायनीमन्त्रः- ॐ सुरतप्रिये दिव्यलोचने कामेश्वरि जगन्मोहने सुभगे काञ्चनमालाविभूषणनूपुरशब्देनाविशाविश पूरय साधकप्रियं स्वाहा।।

इयं कात्यायनी विद्या स्मृता सिद्धि प्रदायिनी ।
अस्या मुद्राविधिं वक्ष्ये भूतिनीसिद्धिदायकम् ।।१।।

ऊपर कात्यायनी विद्या के मन्त्र कहे गये हैं। यह मन्त्र साधकों के समस्त कार्यों में सिद्धि प्रदान करते हैं। मन्त्र के उपरान्त अब इस विद्या की मुद्रा विधि कही जा रही है। इस मुद्रा विधि से कात्यायनी सिद्धि प्रदान करती है। इस विद्या की साधना माँ, बहन या प्रिया रूप में ही की जाती है।।१।।

मुष्टिमन्योन्यमास्थायाङ्गुलीनावेष्ट्य तत्परम् ।
प्रसार्याकुञ्चयेत्तत्र तर्जनीं सिद्धिमाप्नुयात् ।।२।।
देहे मन्त्रे च सिद्धे च मनावाकर्षकर्मणि ।
भूतिनीमाकर्षयेत् क्रोधमन्त्रयोगसहस्रकम् ।।३।।
जुहुयाद्वश्यतां याति भूतिनी नात्र संशयः ।
श्रद्धाभक्तियुतोऽनेन मन्त्रेणावाहयेदमुम् ।
सुरकात्यायनीमुद्रा ह्यसाध्यार्थप्रदायिनी ।।४।।

दोनों हाथों की मुट्ठियों को आपस में मिलाकर एक मुट्ठी की अँगुलियों से दूसरी मुट्ठी की अँगुलियों को लपेट कर दोनों तर्जनी अँगुलियों को थोड़ा फैला करके पुनः सिकोड़े। इस मुद्रा के द्वारा सिद्धि प्राप्त होती है। देहशुद्धि, मन्त्रसिद्धि तथा आकर्षण कर्म में यह मुद्रा प्रयोग की जाती है। क्रोधमन्त्र का एक हजार जप करके इस मुद्रा का प्रदर्शन करे, इससे भूतिनी (कात्यायनी) आकर्षित होती है। इसके पश्चात् होम आदि के द्वारा वह वशीभूत हो जाती है। साधक भक्तिपूर्वक क्रोधभैरवमन्त्र के द्वारा भूतिनी का आकर्षण करे। इस सुरकात्यायनी मुद्रा के द्वारा असाध्य कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं।।२-४।।

मुष्टिं विधाय चान्योन्यं कुञ्चयेत्तर्जनीद्वयम् ।
इयं कात्यायनी मुद्रा भूतिनी सर्वसिद्धिदा ।।५।।

दोनों हाथों की परस्पर मुट्ठी बांधकर दोनों तर्जनी अँगुलियों को सिकोड़े। यह कात्यायनी मुद्रा है। इससे भूतिनी समस्त सिद्धि प्रदान करती है।।५।।

अस्या एव तु मुद्राया मध्यमे मुखसङ्गते ।
कनिष्ठे द्वे निवेश्याथ निर्दिष्टा साधकप्रिया ।।६।।
कुलभूतेश्वरी मुद्रा भूतिनी कुलवासिनी ।
अनया बद्धया शीघ्रं सिद्धिं यच्छति भूतिनी ।।७।।

उपरोक्त कात्यायनी मुद्रा में दोनों मध्यमा अँगुलियों के मुखों को परस्पर मिलाकर दोनों कनिष्ठा अँगुलियों के साथ जोड़े। यह साधक का प्रिय कार्य करने वाली कुलभूतेश्वरी मुद्रा है। इस मुद्रा के बन्धन से कुलवासिनी भूतिनी शीघ्र ही सिद्धि प्रदान करती है।।६-७।।

मुष्टिद्वयं पृथक् कृत्वा तर्जनीञ्च प्रसारयेत् ।
भद्रकात्यायनी मुद्रा वाञ्छितार्थप्रदायिनी ।।८।।

साधक दोनों हाथों की अलग-अलग मुट्ठी बाँधकर दोनों तर्जनी अँगुलियों को फैलाये। यह भद्रकात्यायनी मुद्रा साधक को वाञ्छित सिद्धि प्रदान करती है।।८।।

उभे मुष्टी विधायाथ वेष्टयेत्तर्जनीद्वयम् ।
कुलकात्यायनी मुद्रा भूतिनीरक्षणक्षमा ।।९।।
ख्यातेयं चण्डपूर्वाया जयमुख्यार्थसाधिनी ।
द्राविणी कुलगोत्राणां सर्वभूतभयङ्करी ।।१०।।

साधक एक साथ दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधकर दोनों तर्जनी अँगुलियों को परस्पर एक-दूसरे में लपेटे। यह शत्रुओं से रक्षा करने वाली कुलकात्यायनी मुद्रा है। इसका प्रयोग चण्डकात्यायनी साधना में किया जाता है। यह सभी शत्रुओं के कुल-गोत्रादि का विनाश तथा समस्त भूतों में भय उत्पन्न करती है।।९-१०।।

बद्ध्वा मुष्टिं ततोऽन्योऽन्यं कनिष्ठे वेष्टयेदुभे ।
प्रसार्योभे च तर्जन्यौ प्रकुर्यात् कुण्डलाकृती ।।११।।
त्रैलोक्याकर्षिणी मुद्राऽजविष्णुरुद्रसाधिनी ।
किं पुनः सर्वभूतिन्याः सिद्धिरस्याः प्रसादतः ।।१२।।
शुभकात्यायनी मुद्रा प्रोक्तेयं वज्रपाणिना ।
पूजिता गन्धपुष्पाद्यैर्मत्स्यमांसादिभिस्तथा ।
सिद्धिं यास्यन्ति भूतिन्यो दास्यतां यान्ति तत्क्षणात् ।।१३।।

साधक दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधकर दोनों कनिष्ठा अँगुलियों को एक-दूसरे में लपेटे। तत्पश्चात् दोनों तर्जनी अँगुलियों को फैलाकर कुण्डलाकृति बनाये। इस मुद्रा से तीनों लोक आकर्षित हो जाते हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव तक सिद्ध हो जाते हैं। वज्रपाणि द्वारा कही गयी शुभ कात्यायनी मुद्रा से सभी भूतिनियाँ सिद्ध हो जाती हैं। इस मुद्रा के द्वारा गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, मत्स्य एवं मांसादि उपहारों से पूजन करने पर तत्क्षण भूतिनी सिद्ध होकर दासता स्वीकार कर लेती है।।११-१३।।

अथ वक्ष्ये दरिद्राणां हिताय क्रोधभूपतिम् ।
भूतकात्यायनीसिद्धिसाधनं परमाद्भुतम् ।।१४।।
पितृभूमौ त्र्यहं स्थित्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
भूतकात्यायनी देवी शीघ्रमायाति सन्निधिम् ।।१५।।

रक्तपूर्णकपालेन भक्तितोऽर्घ्यं प्रदापयेत् ।
किङ्करोमि वदेत्तुष्टा भव मातेति साधकः ।।१६।।
राज्यं ददाति भोग्यञ्च सर्वाशाः पूरयत्यपि ।
पालयेन्मातृवत् पञ्चसहस्राब्दानि जीवति ।
मृते राजकुले जन्म नान्यथा क्रोधभाषितम् ।।१७।।

अब दरिद्रों के हित हेतु भूतकात्यायनी (प्रकारान्तर से रुद्रकात्यायनी) का परम अद्भुत सिद्धिसाधन कहा जा रहा है। साधक श्मशान में रहकर तीन दिनों में आठ हजार मन्त्र का जप करे। ऐसा करने पर भूत कात्यायनी देवी शीघ्र ही साधक के पास आती है। साधक नरकपाल में रक्त भरकर उसे भक्तिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करे। ऐसा करने पर देवी साधक से उसका कार्य पूछती है। साधक कहे-हे देवि! मुझे राज्य एवं भोग पदार्थ प्रदान करो तथा मेरी इच्छाएं पूर्ण करो। देवी साधक का पालन माता के समान करती है! साधक पाँच हजार वर्ष तक जीवित रहता है। मरने के उपरान्त साधक राजकुल में जन्म लेता है; ऐसा क्रोधभैरव ने कहा है।।१४-१७।।

वज्रपाणिगृहं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
क्रोधराजं नमस्कृत्य दिवा कुर्यात् पुरस्क्रियाम् ।।१८।।
ततो रात्रावेकलिङ्गं गत्वा सम्पूज्य भक्तितः ।
जपेदष्टसहस्रन्तु दिव्यपुष्पप्रदानतः ।
यच्छति प्रार्थितं देवी क्रोधभूपप्रसादतः ।।१९।।

साधक वज्रपाणि के मन्दिर में जाकर मन्त्र का आठ हजार जप करे। दिन में प्रातःकालीन कर्म करके रात्रि में शिवलिङ्ग के समीप जाकर भक्तिपूर्वक पूजन करे और मन्त्र का आठ हजार जप करे। दिव्य पुष्प चढ़ाकर देवी से प्रार्थना करे। देवी क्रोधभैरव की कृपा से साधक को इच्छित वर प्रदान करती है।।१८-१९।।

गत्वैकलिङ्गं यामिन्यां जपेदष्टसहस्रकम् ।
मञ्जीरशब्दितं तत्र श्रूयते प्रथमे दिने ।।२०।।
दृश्यते च द्वितीयेऽह्नि द्रष्टव्या न च भाषते ।
वक्ति तृतीये सा वाचं किमिच्छसि वद स्फुटम् ।।२१।।
भवोपस्थिका यावज्जीवमित्याह साधकः ।
धनान्यानीय दिव्यां स्त्रीं कन्यां राजाङ्गनामपि ।।२२।।

सुमेरुशृङ्गं नयति पृष्ठमारोप्य जीवति ।
सहस्रार्द्धञ्च वर्षाणां जन्म राजकुले पुनः ।।२३।।

साधक रात्रि में एकलिङ्ग के निकट बैठकर मूल मन्त्र का आठ हजार जप करे। सा जप करने पर प्रथम दिन साधक को नूपुर का शब्द सुनाई देता है। दूसरे दिन जप रने पर देवी का दर्शन होता है, किन्तु देवी साधक से कोई बात नहीं करती। तीसरे न जप करने पर देवी साधक से पूछती है- हे साधक! तुम्हारी क्या इच्छा है? तब धक कहे- तुम मेरी आजीवन परिचारिका बनकर रहो। देवी साधक के वश में होकर से धन, रत्न एवं दिव्य स्त्री लाकर प्रदान करती है। साधक को अपनी पीठ पर बैठाकर मेरु पर्वत के शिखर पर ले जाती है। सिद्धि प्राप्त होने पर साधक पाँच सौ वर्ष तक वित रहता है तथा मरने के उपरान्त राजकुल में जन्म लेता है।।२०-२३।।

नीचगासङ्गमं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
परिवारान्विता दिव्यं भूतिन्यायाति सन्निधिम् ।।२४।।
आगता मन्त्रिता तु स्त्री भावेनापि च कामिता ।
उपस्थायी भवेन्नित्यं दीनारद्वयदायिनी ।।२५।।

साधक किसी नदी-संगमतट पर जाकर मन्त्र का आठ हजार जप करे। जप करने पर परिवारगणों से घिरी हुई भूतिनी साधक के समीप आती है तथा स्त्रीभाव से साधक की परिचारिका होकर प्रतिदिन दो स्वर्णमुद्रा प्रदान करती है।।२४-२५।।

गत्वोद्यानञ्च यामिन्यां जपेदष्टसहस्रकम् ।
दिनानि त्रीणि मञ्जीरशब्दस्य श्रवणं भवेत् ।।२६।।
चतुर्थे दृश्यते देवी पञ्चमे दृश्यते पुनः ।
षष्ठसङ्ख्यादिने पञ्च दीनाराणि प्रयच्छति ।।२७।।
सप्तमेऽह्नि शिवस्थाने विधाय मण्डलं शुभम् ।
धूपञ्च गुग्गुलं दत्त्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।।२८।।
भूतिनी कन्यकागत्य गृहं स्वागतमाचरेत् ।
कामिता सा भवेद्भार्या प्रत्यहं रतिमाचरेत् ।।२९।।
मुक्ताहारं परित्यज्य शयने याति नित्यशः ।
गृहीतव्यं न तद्धारं ग्रहणाभावतोऽपि ।।३०।।

पञ्चविंशति दीनारं वस्त्रद्वयमनुत्तमम् ।
शत्रुं नाशयते शीघ्रं सहस्रायुः करोति च ।
मृते राजकुले जन्म साधकस्य न संशयः ।।३१।।

साधक किसी उद्यान में जाकर रात्रि में मन्त्र का आठ हजार जप करे। तीन रात्रि तक जप करने पर नूपुर का शब्द सुनाई देता है। चौथे एवं पांचवें दिन देवी दर्शन देती है। छठें दिन साधक को पाँच स्वर्ण मुद्राएं प्रदान करती है। सातवें दिन साधक शिवलिङ्ग के ऊपर दिव्य आभूषणादि तथा धूप दीप स्थापन करके पुनः मन्त्र का आठ हजार जप करे। इससे भूतिनी युवती के वेश में आकर साधक का मङ्गलाचरण करके भार्या बन जाती है। वह साधक के साथ आनन्दपूर्वक सम्भोग करते हुए समय व्यतीत करती है। प्रतिदिन प्रातःकाल शय्या पर मुक्ताहार छोड़कर चली जाती है। साधक उस हार को स्वीकार न करे। ऐसा करने पर वह साधक को प्रतिदिन पच्चीस स्वर्णमुद्राएं एवं दो वस्त्र प्रदान करती है। साधक के सभी शत्रु नष्ट हो जाते हैं। साधक की एक हजार वर्ष की आयु हो जाती है तथा मरणोपरान्त राजकुल में जन्म लेता है।।२६-३१।।

वज्रपाणिगृहं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
अन्यं देवालयं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।।३२।।
पुना रात्रौ जपेदष्टसहस्रं त्र्यहमेव च ।
शताष्टपरिवाराढ्या शीघ्रमायाति भूतिनी ।।३३।।
सतोयचन्दनार्घ्येण तुष्टा यच्छति कामिकम् ।
परिवारशतान्यष्टवस्त्रालङ्कारभूषणैः ।।३४।।
रसं रसायनं पञ्चसहस्राब्दानि जीवति ।
मृते राजकुले जन्म भवेत् क्रोधप्रसादतः ।।३५।।

साधक वज्रपाणि के मन्दिर में जाकर मूलमन्त्र का आठ हजार जप करे तथा अन्य देवालय में भी आठ हजार मन्त्र का जप करे। ऐसा करने के बाद रात्रि में भी आठ हजार मन्त्र का जप करे। ऐसा तीन दिन तक करने पर भूतिनी एक सौ आठ परिवार के साथ आती है। साधक देवी को जल एवं चन्दनादि से अर्घ्य प्रदान करे। देवी प्रसन्न होकर वस्त्र एवं आभूषण से साधक की कामना पूर्ण करती है। साधक पाँच हजार वर्ष तक विभिन्न प्रकार की रसकेलि में सुखभोग कर मृत्यु के पश्चात् राजकुल में जन्म लेता है।।३२-३५।।

(१) वज्रपाणिगृहं गत्वा जपेदष्टसहस्त्रकम् ।
पूर्वसेवा भवेदस्याः पुरश्चरणपूर्विका ।।३६।।
द्वितीयायां समारभ्य चतुर्थ्यान्तु समापयेत् ।
रात्रियोगे च पञ्चम्यां हुनेदष्टसहस्त्रकम् ।।३७।।
करवीरभवैर्वह्नौ दधिक्षौद्रघृतान्वितैः ।
मालतीकुसुमैरष्टसहस्त्रैकं शतद्वयम् ।।३८।।
सहस्त्रार्द्धसहायाढ्या महाभूतेश्वरी द्रुतम् ।
एति नूपुरशब्देन देयोऽर्घ्यः पुष्पवारिणा ।।३९।।
जननी भगिनी भार्या स्वेच्छया कामिता भवेत् ।
माता स्वर्णाद्यलङ्कारं भोजनञ्च प्रयच्छति ।।४०।।
भगिनी स्त्रियमानीय राज्यं यच्छति कामिकम् ।
दिव्यरूपा भवेद्भार्या सर्वाशाः पूरयत्यपि ।।४१।।
ददाति भोजनञ्चायुर्दशवर्षसहस्त्रकम् ।
मृते राजकुले जन्म वज्रपाणिप्रसादतः ।।४२।।
(२) अयुतं हि जपेन्मन्त्रं पौर्णमास्यां पुरश्क्रिया ।
रात्रौ देवालयं गत्वा द्वारपूजां विधायच ।।४३।।
सकलां प्रजपेद्रात्रिं प्रातरागच्छति ध्रुवम् ।
दत्त्वार्घ्यं रुधिरेणैव तुष्टा भवति किङ्करी ।।४४।।
प्रत्यहं भोजनं पञ्च दीनाराणि प्रयच्छति ।
शतमेकं पञ्चवर्षं जीवतीति न संशयः ।।४५।।

१. साधक वज्रपाणि के मन्दिर में जाकर रात्रि को मूलमन्त्र का आठ हजार जप करे। विधानपूर्वक पुरश्चरण करके द्वितीया तिथि से प्रारम्भ करके चतुर्थी तिथि को जप समाप्त करे। तत्पश्चात् पंचमी की रात्रि में दही, मधु तथा घी मिश्रित करके कनेर के फूलों से एक हजार आठ एवं मालतीपुष्पों को घी में मिश्रित करके बारह सौ होम करे। इस प्रकार करने से आठ हजार परिवार से घिरी हुई देवी नूपुर ध्वनि करती हुई आती है, आते ही उन्हें पुष्प तथा जल से अर्घ्य दे। साधक उन्हें माता, भगिनी या भार्या में से किसी एक सम्बन्ध द्वारा सम्बोधित करे। माता होने पर अलंकार तथा विविध भोज्य पदार्थ प्रदान करती हैं। बहन होने पर उत्तमा स्त्री तथा राज्य प्रदान करती हैं। भार्या होने

पर साधक की सभी इच्छाएं पूर्ण करती हैं तथा श्रेष्ठ भोज्य पदार्थ प्रदान करती है। साधक दश हजार वर्ष तक जीवित रहता है तथा वज्रपाणि की कृपा से वह मरने पर राजकुल में जन्म लेता है।

२. पूर्णिमा को दश हजार मन्त्र का जप करे। रात्रि में देवालय में जाकर द्वार की पूजा करे तथा समस्त रात्रिपर्यन्त मन्त्र का जप करे। देवी प्रातः निश्चित रूप से आती है। साधक उन्हें अर्घ्य प्रदान करे। प्रसन्न होकर वह साधक की किंकरी बनती है तथा प्रतिदिन विविध भोजन तथा पाँच स्वर्णमुद्राएं प्रदान करती है। साधक १०५ वर्ष तक जीवित रहता है।।३६-४५।।

विशेष- यहाँ पर दो साधना विधान वर्णित है।

ॐ तोयघ्नं मांसं मे प्रयच्छ स्वाहा ।।

रात्रौ पितृभुवं गत्वा जपेदष्टसहस्त्रकम् ।
पिशिताकर्षिणी देवी सिद्धा भवति निश्चितम् ।।४६।।
नीत्वा मांसपलान्यष्टौ विलोक्य च चतुर्दिशम् ।
योषिद्ब्रह्मस्वरूपेण पुरस्तिष्ठति भूतिनी ।।४७।।
ततो मांसं प्रदातव्यं भुक्त्वा मांसं प्रयच्छति ।
मांसादानेन म्रियते अक्षि कुक्षिः स्फुटत्यपि ।।४८।।

इति सिद्धाश्रमस्थपरमहंसस्वामीश्रीनिखिलेश्वरानन्दस्य शिष्य अजय कुमार उत्तम विरचितायां दिव्याङ्गनातन्त्रे कात्यायनीमन्त्रसाधनम् नाम सप्तमस्तरङ्गः।।७।।

साधक रात्रि में श्मशान में जाकर **ॐ तोयघ्नं मासं मे प्रयच्छ स्वाहा** मन्त्र का आठ हजार जप करे। इस प्रकार मांसाकर्षिणी भूतिनी सिद्ध हो जाती है। इसके उपरान्त साधक आठ पल (१ पल = ४० ग्राम) मांस हाथ में लेकर चारो ओर देखे तो भूतिनी दिखाई देने लगती है। साधक उसी समय उन्हें मांस प्रदान करे। समस्त मांस न देने पर साधक की मृत्यु हो जाती है या आँख अथवा पेट फूट जाता है।।४६-४८।।

इस प्रकार सिद्धाश्रमस्थित परमहंस स्वामी श्रीनिखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य अजय कुमार उत्तम द्वारा रचित दिव्यांगनातन्त्र के कात्यायनी मन्त्र साधन नामक सातवें तरंग की ''अनुपमा'' हिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई।।७।।

अथाष्टमः तरङ्गः

विविधमन्त्रसाधनम्

१. भूतकात्यायनीमन्त्रसाधनम्

श्रीशिव उवाच

इदानीं परमेशानि ! भूतकात्यायनीं शृणु ।
वेदाद्यं शब्दबीजञ्च महामायां ततः परम् ।।१।।
अस्त्रयुग्मं वह्निजाया मनुः सप्ताक्षरः परः ।
श्रीशिवोऽस्य ऋषिः प्रोक्तो विराट् छन्द उदाहृतम् ।।२।।
भूतकात्यायनी देवी धर्मार्थकामदा सदा ।
प्रणवेन षडङ्गञ्च प्राणायामञ्च सुन्दरि ! ।।३।।

हे परमेशानि! अब भूतकात्यायनी का साधन सुनो। वेदाद्य (ॐ) 'शब्दबीज (यं)' महामाया (ह्रीं); इसके पश्चात् अस्त्रयुग्म (फट् फट्) तथा वह्निजाया (स्वाहा)। इस प्रकार **ॐ यं ह्रीं फट् फट् स्वाहा** मन्त्र का उद्धार होता है। इस मन्त्र के श्रीशिव ऋषि कहे गये हैं तथा विराट छन्द है। भूतकात्यायनी देवी इसकी देवता हैं तथा धर्म, अर्थ एवं काम की प्राप्ति के लिए इसका विनियोग है। हे सुन्दरि! प्रणव (ॐ) के द्वारा षडङ्गन्यास तथा प्राणायाम करना चाहिये।।१-३।।

ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि शृणु सुन्दरि ! सादरम् ।
गौरवर्णां मुक्तकेशीं सर्वाभरणभूषिताम् ।।४।।
पट्टवस्त्रपरीधानां सदा घूर्णितलोचनाम् ।
वामकर्णौ रक्तपूर्णखर्परं दक्षिणे करे ।।५।।
मद्यपूर्णस्वर्णपात्रां ग्रीवायां हारभूषिताम् ।
शरच्चन्द्रसमाभासां पादाङ्गुलिविराजिताम् ।।६।।

हे सुन्दरि ! अब मैं भूतकात्यायनी का ध्यान कहता हूँ, इसे आदरपूर्वक सुनो— गोरे रंग वाली, खुले हुए केशों वाली, सभी प्रकार के आभूषणों से सुशोभित, सदैव रेशमी वस्त्र धारण करने वाली, चञ्चल नेत्रों वाली, बायें हाथ में रक्तपूर्ण खप्पर तथा दाहिने हाथ में मद्य से भरा हुआ स्वर्णपात्र धारण करने वाली, गले में हार पहनने वाली देवी हैं। उनके पैरों की अंगुलियाँ शरत्कालीन चन्द्रमा के प्रकाश के समान आभावाली हैं।।४-६।।

एवं तां वरदां नित्यां भावयेत् सिद्धिहेतवे ।
सामान्यार्घ्यं ततो देवि ! स्ववामे विन्यसेत्ततः ।।७।।
जीवन्यासादिकं कृत्वा पूजयेत् परमेश्वरीम् ।
षोडशेनोपचारेण पञ्चतत्त्वेन सुन्दरि ! ।।८।।
यजेत्तां बहुयत्नेन गृहमध्ये दिनत्रयम् ।
ततो जपेन्महामन्त्रं गजान्तकसहस्रकम् ।।९।।
ततश्च पूजयेद् देवीं शून्यागारे दिनत्रयम् ।
प्रत्यहं प्रजपेन्मन्त्रं गजान्तकसहस्रकम् ।।१०।।
एवं कृते महेशानि ! यदि सिद्धिर्न जायते ।
ततश्च प्रजपेन्मन्त्रं पितृभूमौ दिनत्रयम् ।।११।।
ततः सिद्धिर्भवेद् देवि ! सत्यं सत्यं हि सुप्रिये ! ।
तद्वाक्यं प्रार्थनावाक्यं डामराख्ये मयोदितम् ।।१२।।

इसलिए सिद्धि के लिए उन वरदा देवी का ध्यान करे। हे देवि ! अपने बायीं ओर उनको सामान्यार्घ्य प्रदान करे। हे देवि ! जीवन्यासादि करके उनका सोलह उपचारों एवं पञ्चतत्त्वों से पूजन करे। अपने घर के मध्य में अनेक प्रकार से पूजन-अर्चन करके दिन तक उपरोक्त महामन्त्र का आठ हजार प्रतिदिन जप करे। इसके पश्चात् निर्जन स्थान में देवी का पूजन अर्चन करके मन्त्र का जप करे। प्रतिदिन मन्त्र का आठ हजार जप करे। ऐसा तीन दिन तक करे। इस प्रकार करने पर भी यदि सिद्धि न मिले तो तीन दिन तक श्मशान में मन्त्र का प्रतिदिन आठ हजार जप करे। हे देवि ! हे सुप्रिये ! ऐसा करने पर निश्चित रूप से सिद्धि प्राप्त होती है। इन देवीस्तोत्र एवं कवचादि का वर्णन मैंने डामरतन्त्र में किया है।।७-१२।।

२. चित्रलेखासाधनम्

ॐ ह्रीं चित्रलेखे आगच्छ आगच्छ तुरु तुरु ह्रीं स्वाहा ।।

लक्षत्रयं जपेन्मन्त्री ध्यात्वा तां रक्तवर्णकाम् ।
कदम्बवनमध्ये तु मधुघूर्णितलोचनाम् ।।१३।।
कुण्डलैर्मणिभिर्दिव्यैर्वस्त्रालङ्कारभूषिताम् ।
अमृतं कलशं वामे दक्षिणे मणिहारकम् ।।१४।।

दधतीं चिन्तयेद्दीप्तां रक्तपद्मोपरिस्थिताम् ।
प्रहसन्तीं चित्रलेखां प्रसन्नां नवयौवनाम् ।।१५।।
ईदृशीं पूजयेन्नित्यं जपान्ते होमयेत्ततः ।
शर्करा छागमांसं च गोक्षीरं मधु -(घृत)- संयुतम् ।।१६।।
दशांशेन ततस्तुष्टा खेचरत्वं प्रयच्छति ।
विमानं खेचरत्वं च ददात्यमृतभोजनम् ।।१७।।
आयुर्लक्ष्मीं जयं चैव हारकेयूरकुण्डलम् ।
नानालोकगतिं चैव यतो मन्त्री सुखी भवेत् ।।१८।।

साधक **ॐ ह्रीं चित्रलेखे आगच्छ आगच्छ तुरु तुरु ह्रीं स्वाहा** मन्त्र का तीन लाख जप करे। कदम्ब वन में स्थित रक्तवर्णा, मद से उन्मत्त चञ्चल नेत्रों वाली, दिव्य कुण्डल, मणियों तथा वस्त्रों एवं विभिन्न प्रकार के आभूषणों से विभूषित, बायें हाथ में अमृत कलश एवं दाहिने हाथ में मणियों के हार को धारण करने वाली, लाल कमल के ऊपर स्थित, हास्ययुक्त मुखवाली, नवीन यौवन वाली प्रसन्ना देवी चित्रलेखा का ध्यान करना चाहिए। इस प्रकार के रूप वाली चित्रलेखा देवी का नित्य पूजन करना चाहिए। जप के अन्त में शक्कर, बकरे का मांस, गाय का दूध तथा मधु (अथवा घी) से दशांश हवन करे। इससे चित्रलेखा देवी प्रसन्न होकर खेचरत्व (आकाश में उड़ने की सिद्धि) प्रदान करती है। देवी साधक को विमान, खेचरी सिद्धि, अमृत भोजन, आयु, लक्ष्मी, सर्वत्र विजय, हार, केयूर, कुण्डल, अनेक लोकों में जाने की सिद्धि प्रदान करती है और इससे साधक सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है।।१३-१८।।

३. कनकपरी साधनम्

कनक परी अत्यन्त ही सुन्दर एवं साधक के वश में होने वाली परी है। पुष्ट सुडौल एवं मांसल उरोजों, क्षीण कटि, मांसल गोल तथा सुडौल जांघों, गहरी नाभि तथा विस्तृत चक्राकार मनमोहक नितम्बों वाली यह सुन्दरी जिस किसी को भी प्रेमिका रूप में प्राप्त हो जाती है उसे धन-सम्पत्ति तो प्रदान करती ही है; नित्य सम्भोगसुख भी देती है।

मन्त्रः

ॐ ह्रीं कनकपरी स्वाहा

इसकी साधना करने का विधान इस प्रकार है—साधक शनिवार की रात्रि में शुद्ध स्वच्छ वस्त्र धारण कर सुगन्धित चमेली का इत्र लगाये। चमेली के पुष्प एवं सुगन्धित सामग्री रखे। चमेली के तेल का दीपक जलाकर मन्त्र का दश हजार की संख्या में जप रुद्राक्ष या स्फटिक की माला से करें। जप के अन्त में मद्य से १०८ आहुतियाँ मन्त्र द्वारा प्रदान करे। ऐसा आठ दिन तक करें। ऐसा करने पर कनकपरी साधक को सिद्ध हो जाती है।

साधना काल में साधक ब्रह्मचर्य का पालन करे तथा एक समय भोजन करे। साधक के लिये दुग्धपान सर्वोत्तम है।

इति सिद्धाश्रमस्थपरमहंसस्वामीश्रीनिखिलेश्वरानन्दतच्छिष्य अजय कुमार उत्तम सङ्कलिते दिव्याङ्गनातन्त्रे विविधमन्त्रसाधनं नामा-ष्टमस्तः तरङ्गः।।८।।

परिशिष्ट - प्रथम

आर्यमञ्जुश्रीमूलकल्पोक्तं यक्षिणीमन्त्रसाधनम्

अथ यक्षिणीं साधयितुकाम:

नटी नट तथा भट्ट रेवती चापि विश्रुता ।
तमसुरी य लोका मेखला चापिसुमेखला ।
इत्येता अष्ट यक्षिण्यः सर्वकामप्रसाधिकाः ।।१।।

नटिकाया मन्त्र:- **ॐ नटि महानटि आगच्छागच्छ दिव्यरूपिणी स्वाहा।।**

अस्योपचार:- फलके पट्टके वा अभिलिख्य मांसाहारेण वा क्षीराहारेण वा विद्या अष्टसहस्रं जप्तव्या। आलेख्या च सर्वालङ्कारभूषणी श्यामावदाता वृक्षा शृता एकवस्त्रा मुक्तकेशा संरक्तनयना ईषत्स्मितमुखा साधकं तर्जायमाना दक्षिणहस्तेन वामेन पाणिना वृक्षशाखामवलग्ना सर्वाङ्गशोभना विचित्रपट्टनिवस्ता तस्येत क्रोधराजस्य पटस्याग्रत: उन्मना उत्तरामुखं स्थित्वा पलाशकाष्ठैरग्निं प्रज्वाल्य गुग्गुलुगुटिकानां दधिमधुघृताक्तानां अष्टसहस्रं जुहुयात् त्रिसन्ध्यं यावत् सप्त दिवसानि। तत: सप्तमे दिवसे उदारां बलिं कृत्वा घृतदीपांश्च प्रज्वाल्य मन्त्रं जपता तावत् तिष्ठेत् यावदर्धरात्रम्। तत: सा यक्षिणी स्वयमेव महावभासं कृत्वा स्वरूपेणागच्छति। आगता च ब्रवीति—किं मया कर्तव्यम् इति। तत: साधकेन वक्तव्यम्—भार्या मे भवस्व इति। एवमस्त्विति कृत्वान्तर्धीयते। तत: प्रभृति भार्या भवति। सर्वकामदा स्वभवनं नयति। रसायनं प्रयच्छते। यत् पीत्वा दिव्यरूपी भवति महायक्षप्रतिस्पर्धी। यदि नागच्छति द्वितीये वारे क्रोधराजसहितं जपेन्नियतमागच्छति न चेदुच्छुष्यं म्रियते।।

नट्टाया मन्त्र:-**ॐ नट्टे शुक्लाम्बरमाल्यधारिणि मैथुनप्रिये स्वाहा।।**

अस्योपचार:- एतस्यैष एव विधि:।

भट्टाया मन्त्र:- **ॐ भट्टे भट्टे आलोकिनि किं चिरायसि एह्येहि आगच्छागच्छ मम कार्यं कुरु स्वाहा।।**

अस्योपचार:-एषा विनापि पटेन सिद्ध्यते। शिर:स्थाने मण्डलकं कृत्वा गुग्गुलधूपं दहता विद्यामष्टसहस्रं जपेत्। मौनिना एकाकिनी शुचिना द्वारं पिधाय मासेन रात्रौ नियतामगच्छति। आगता च कामयितव्या भार्या भवति सर्वकामदा। यद्यसौ भवनं प्रविशते पञ्चवर्षसहस्राणि जीवति। न चेदत्रैव जम्बूद्वीपे विचरति।

मासेन रात्रौ नियतामगच्छति। आगता च कामयितव्या भार्या भवति सर्वकामदा। यद्यसौ भवनं प्रविशते पञ्चवर्षसहस्राणि जीवति। न चेदत्रैव जम्बूद्वीपे विचरति। पञ्चवर्षशतानि जीवति। तया सार्धं क्रीडति। सर्वाज्ञां सम्पादयति। तेन सह यत्रेष्टं तत्र गच्छति। रसायनमनुप्रयच्छते। इष्टभार्येवावहिताध्याशयं करोति।

रेवत्या मन्त्रः- **नमः सर्वयक्षीणाम्। ॐ रक्ते रक्तावभासे रक्तानुलेपने स्वाहा।।**

रेवत्या यक्षिणी श्रेष्ठा ललन्त्या मैथुनप्रिया ।
ईषद् रक्तेन वस्त्रेण नीलकुञ्चितमूर्धजा ।।२।।
सर्वांगशोभना यक्षी कामभोगरता सदा ।
कामदा भोगदा नित्यं वरदां ता मभिनिर्दिशेत् ।।३।।

पूर्ववत् पट्टमभिलिख्य एतस्या अयं विशेषः-रक्तपट्टनिवस्ता रक्तपट्टांशुकोत्तरीया रक्तावभासा च वर्णतः।

मेखलायाः मन्त्रः-**ॐ मेखले महायक्षिणि मम कार्यं सम्पादय स्वाहा।।**

सुमेखलाया मन्त्रः-**ॐ मेखले सुमेखले महायक्षिणि सर्वार्थसाधनि ॐ समयमनुस्मर स्वाहा।**

आलोकिन्या मन्त्रः-**ॐ लोकिनि लोकवति स्वाहा।**

एतेषामेत एव विधिः।।

तमसुन्दर्याया मन्त्रः-**ॐ घुणु गुह्यके घुणु घुणु गुह्ये एह्येहि गुह्यके स्वाहा।।**

अस्योपचारः न। एताया पटविधानोऽस्ति। आदौ तावत् शुचिना शुचिवस्त्रप्रावृतेन पूर्णमास्यां विविक्ते स्थाने द्वारं पिधायित्वा अन्धकारे आलोकवर्जिते विद्यां दशसहस्राणि जपेत्। पूर्वसेवा कृता भवति। ततः साधनामारमेत्। पौर्णमास्यादारभ्य यावदपरा पूर्णमासी अत्रान्तरे कर्म भवति। रात्रौ शयनकाले शय्यामारूढः प्रच्छन्ने गुप्तप्रदेशे एकाकिना द्वारं पिधायित्वा सङ्कुचितकर्णिकां वानपुष्पं च कटुतैलेन मिश्रयित्वा हस्तौ पादौ प्रक्षालयित्वा दक्षिणं बाहुमष्टशताभिमन्तृतं कृत्वा स्वपेत् मौनी। एवं प्रत्यहं यावत् पौर्णमास्यात्। ततोऽर्धरात्रे नियतमागच्छति। आगता च न मन्त्रापयितव्या। तूष्णीभावेन कामयितव्या षड्भिः मासैः। यदा मन्त्रापयति तदा मन्त्रयितव्यम्। ततः प्रभृति सिद्धा भवति। भार्या भवति सर्वकामदा। दिव्यं चास्य सुखसंस्पर्शम् अदर्शनेनैव सर्वकार्याणि सम्पादयति। रस-रसायनानि सम्प्रयच्छति। पृष्ठमारोप्य सुमेरुमपि नयति। रात्रौ जम्बूद्वीपं भ्रामयति।

योजनशतस्थितमपि शत्रुं घातयते। यथाज्ञप्ता तत् सर्वं सम्पादयति। वर्जयित्वा परस्त्रियाभिगमनम्। सर्वेषामयं विधानं परस्त्रीं नाभिगच्छेत्। तेनैव सह संवसेत्। यदि गच्छेन्मरणोन्मत्तिं वा प्रयच्छन्ते। एषा अन्धारसुन्दरी नाम यक्षिणी। अनेकयक्षीशतसहस्रपरिवृता। दिने दिने एकैकां यक्षिणीं क्षटितिं प्रेषयति। सिद्धा सती सर्वसाधकानां अनेकमन्त्रपरिवारां च सर्वयक्षीणां च महर्द्धिका तमावृता। सर्वेषामेव एष विधिः। किं तर्हि तेषां दर्शनं भवति। एतस्या दर्शनं न भवति।।

अन्धारवासिनी नाम यक्षीणां महर्द्धिका ।
गुहावासिनी नरवीरा कुमारी लोकविश्रुता ।।४।।
वधुयक्षी मनोज्ञा च सप्तमा सुरसुन्दरी ।
इत्येताः सप्त यक्षिण्यः सत्त्वानुग्रहकारिकाः ।।५।।
पर्यटन्ति इमं लोकं कृत्स्नां चैव मेदिनीम् ।
ईषत् क्षणमात्रेण उत्पतन्ति सुरालयम् ।।६।।
सङ्ग्रामं देवदैत्यानां युद्ध्यन्ते च महर्द्धिकाः ।
धर्मिष्ठा करुणाविष्टाः सत्त्वकामाः सुवत्सलाः ।।७।।
सत्त्वानां हितकाम्यार्थं पर्यटन्ति महीतले ।
न तासां किञ्चिद् दुःसाध्यं सर्वकर्मकराः शुभाः ।
सत्त्वानामुपभोगार्थं बोधिसत्त्वेन भाषिता ।।८।।

गुह्यवासिन्या मन्त्रः- **ॐ गुहिले गुहमति गुहवासि आनय भगवति मयान्तिकं समयमनुस्मर स्वाहा।** खदिरकाष्ठैरग्निं प्रज्वाल्य प्रियङ्गुपुष्पाणां घृताक्तानां अष्टसहस्रं जुहुयात् त्रिसन्ध्यं मासमेकम्। पूर्वसेवा कृता भवति। ततः पश्चात् साधनमारभेत्। फलके वा पट्टके वा कुड्यायां वा अश्लेषकैर्वर्णकैः नवभाजनकूर्चकैः। आदौ तावत् पर्वतराजा सुमेरुर्लिखापयितव्यः चतुरस्रः चतुः शृङ्गोच्छ्रतः सप्तपर्वतपङ्क्तिपरिवेष्टितः। तेषां पर्वतानामन्ते गुहः पर्वतनिःश्रृतः आलिखतव्यम्। तत्रस्था दिव्यरूपिणी सर्वालङ्कारभूषिता एकाकिनी यक्षिणी गुह्यवासिनी नाम लिखापयितव्या पट्टवस्त्रनिवस्ता पट्टांशुकोत्तरीया कनकवर्णा विचित्रचारुरूपी तं तादृशं पटमभिलेख्य शुचौ प्रदेशे शुचिना क्षीराहारेण विद्यां दशसहस्राणि जपेत्। महापूजां कृत्वा यथाशक्तितो वा ततो जपान्ते महावभासं कृत्वा दिव्यरूपी यक्षिणी स्वयमेवागच्छति। आगताया जातीकुसुमैः श्वेतचन्दनोदकव्यतिमिश्रैः अर्घो देयः।

ततः सा ब्रवीति - वत्स किं कर्त्तव्यम्। वक्तव्यम् - माता मे भवस्वेति। कृत्वान्तर्धीयते। न च तत्र चित्तं दूषयितव्यम्। नापि कामोपसंहितं प्रार्थयितव्यम्। आर्या सा महर्द्धिका च कामं प्रार्थयति न सिद्ध्यते। ततः प्रभृति मातृवत् सर्वकार्याणि सम्पादयति। कामितं च भोजनमनुप्रयच्छते। रस-रसायनादीन् सर्वमनु प्रयच्छति। यथेष्टं चानुवर्त्तते। कुटीकुटादीमभिनिर्मिणोति। सुवर्णसहस्रमनुप्रयच्छति दिने दिने। सर्वं व्ययीकर्त्तव्यं तदह एव। यदि न करोति च्छिन्नो भवति। सर्वाणि सर्वं भवति।

अपरमपि कर्म अस्याः। अस्यैव पटस्याग्रतः खदिरकाष्ठैरग्निं प्रज्वाल्य विगतार्चिधूमविगतैः अङ्गारैः दक्षिणहस्ततले मनच्छिलया प्रतिकृतिमभिलिख्य नाम च पुरुषस्य स्त्रिया वामहस्ततले तत्रैवाङ्गारराशौ तापयेत् मन्त्रं जपता। योजनशतादपि स्त्रियमानयति। यदुच्यते तत् सर्वं कारयति। रात्रौ एतत् कर्म, न दिवा।।

नरवीराया मन्त्रः-**ॐ नरवीरे स्वाहा।** तथैव एतस्या पटमभिलिख्य वर्जयित्वा गुहालयं अशोकवृक्षाशृता लिखापयित्वा। एतस्याः अयं विशेषः सर्वं तथैव कर्म यथा गुहवासिन्या। अयं च वक्तव्या-भगिन्यास्वेति।।

एतस्यापरोऽस्ति कर्म। चन्द्रग्रहे सुवर्णगैरिकां भूर्जपत्रेण वेष्टयित्वा मुखे प्रक्षिप्य तावज्जपेद् यावच्चन्द्रो मुक्त इति। ततः सुवर्णगैरिकया यस्या नाम लिखति स्त्रियस्य वा आयोजनशतास्थिता अप्यानयति। प्रभाते तत्रैव नयति। भगिनी कार्याणि करोति। आपत्सु महारक्षां करोति। सर्वाण्येव स्त्रियां जापमात्रेण वशीकरोति। नरवीराया एष विधिः।।

यक्षकुमारिकाया मन्त्रः-**ॐ यक्षकुमारिके स्वाहा।।**

अस्य अयमुचारः-गोरोचनेन भूर्जपत्रे लिखापयितव्या। कुमारी अर्धवर्वराशिरा सर्वालङ्कारभूषिता एकवस्त्रा दक्षिणहस्तेन बीजपूर्णावसक्तफला वामहस्तेनाशोक-वृक्षशाखावलग्ना। तादृशं भूर्जपत्रं शिरःस्थाने उपरि स्थापयितव्यम्। गुह्ये प्रदेशे एकाकिना च स्वप्तव्यम्। श्वेतचन्दनेन च मण्डलकं कृत्वा त्रिसन्ध्यं जातीकुसुमैरभ्यवकीर्यं गुग्गुलुधूपं दहता विद्यामष्टसहस्रकं जपेत् यावन्मासमेकम्। ततो पूर्णमास्यां जातीकुसुमैः महती पूजां कारयित्वा घृतप्रदीपांश्च निवेद्यांश्च दत्त्वा कुशविण्डकोपविष्टेन रात्रौ तावज्जपेद् यावत् स्वरूपेणैव कुमारी पञ्चशतपरिवारा वैश्रवणस्य दुहितृ आगच्छति। सर्वं तं दिशाभागमवलोकयित्वा स्वरूपेणान्तरिक्षे तिष्ठति। सा एवमाह-किं मया कर्त्तव्यम्। ततः साधकेन वक्तव्यम् - त्रयाणां वाराणामन्यतममेकं वरं प्रार्थयितव्या। मातृत्वे भगिनीत्वे भार्यात्वे च। यदि माता भवति न चित्तं दूषयितव्यम्। दूषयतो विनाश उपजायते। मातृवद्

वर्त्तयितव्या। सा च माता पञ्चशतपरिवारस्य भक्ताच्छात्तमलङ्करणविशेषाणि च सर्वत्र चिन्तितमात्रेणैव सम्पादयति। दिने दिने दीनारसहस्रं ददाति। अत्रैव जम्बूद्वीपे विचरत: सर्वं सम्पादयति। भगिनी भवति तदा योजनशतादपि स्त्रीयमानयति। तथैव नयते। भगिनीवत् सर्वकार्याणि सम्पादयति। अथ भार्या भवति स्वभवनं नयते। दिव्यं वर्षसहस्रं जीवति। यदा म्रियते तदा आढ्यकुलोपपत्ति:। सर्वाज्ञां भार्येव सम्पादयति।।

वधूयक्षिण्या मन्त्र:- **ॐ नि:।** एषा वधूयक्षिणी।

अस्यामुपचार:-श्वेतचन्दनेन दक्षिणां बाहुमुपलिप्य वामत: कुङ्कुमेन सहस्राभिमन्त्रितं कृत्वा रात्रौ एकाकिना मौनिना प्रच्छन्ने प्रदेशे द्वारं पिधाय पञ्चाष्टौ विभीतकफलानि तिलतैले प्रक्षिप्य पचेत्। तं तैलं गृहीत्वा विभीतकफलं परित्यज्य नवे भाण्डे सौवर्णे राजते ताम्रे मृन्मये वा स्थाप्य पादान्ते शय्यायां सहस्राभिमन्त्रितं कृत्वा अनेनैव मन्त्रेण एकाक्षरयक्षिण्या अन्धकारे शयने पुष्पाभिकीर्णं स्वप्तव्यम्। आगत्य चामानुषीं पादौ म्रक्षयति। दिव्यसुखं स्पर्शकोमलहस्ततला। यस्य स्पर्शनादेव दिव्यं सुखसंस्पर्शनिद्रापूपजायते। येन सूर्योदयेऽपि रात्र्यन्ते दु:खेन प्रतिबुध्यते। प्रतिबुद्धापि सन् तदेव चिन्तयेत्। न च कामयितव्या नापि मन्त्रापयितव्या। षड्भिर्मासै: सिद्धा भवति। तत: सा दिव्यरूपी अभिनववध्वा वयात् समाना परिचारिकै: परिवारिता प्रदीपहस्ता स्वप्नभोद्योतितालोका शयनासनपरिगृहीता विचित्राभरणोज्ज्वला आगत्य च मन्त्रापयते। कामभोगोपकरण-परिगृहीता आगत्य च साधकं कण्ठे परिष्वजते। तत: प्रभृति इष्टभार्येवमनुवर्त्तते। आगता च कामयितव्या रात्रौ परिचर्य प्रभातेऽन्तर्धीयते। शय्यायां मुक्ताहारं त्यज्य सुवर्णसहस्रमूल्यं दिने दिने परित्यज्य गच्छति च। सर्वं निरवशेषं व्ययीकर्त्तव्यम्। यदि किञ्चित् स्थापयति भूयो न भवति। न कस्यचित् कथितव्यम्। यदि कथयति भूयो नागच्छति। अनर्थं वा कुरुते। मारणान्तं परमगुह्यका ह्येते परमगोप्या न द्वितीयसत्त्वमारोचनं क्षमन्ते। मातापितृसुहृत्स्वामिबान्धवानामपि नारोपयितव्यम्। अन्तश: पशुस्यापि तिर्य्यग्गतानां प्राणिनां नारोपयितव्यम्। परमगुह्यमेतत्। सर्वगुह्यकानां सर्वयक्षिणीनां च एष एव विधाना। सिद्धा अपि असिद्धा भवन्ति। यद्यारोचयते। अन्यस्त्रीमैथुनाभिगमनं च भार्याया च वर्जयेत् सदा।।

मनोज्ञाया मन्त्र:- **ॐ मनोहरे मदोन्मादकरि विचित्ररूपिणि मैथुनप्रिये स्वाहा।।**

अस्यामुपचार:-उद्यानवाटिकायां अशोकवृक्षस्याधस्तात् सविभक्तां कुटिं कारयित्वा अगुप्ततरां कृतकवाटार्गलप्राकारोच्छ्रितां शुचिना लक्षमेकं जपेत्। तत: कर्ममारभेत्।

महावसां सङ्गृह्य श्मशानवोटकेन वर्तिं कृत्वा द्वारं पिधयित्वा प्रदीपं प्रज्वालयेत्। सदशं च वस्त्रं केशापगतं बहिर्द्वारं स्थापयेत्। प्रत्यग्रं रात्रौ सा नग्निकागत्य तं वस्त्रं निवास्य प्रविशते मानुषस्त्रीरूपिणी भूत्वा। ततः साधकः तेन सार्धं रमते यावत् प्रदीपं ज्वलते। निर्वृते प्रदीपेऽन्तर्धीयते। तस्मिन् वस्त्रे सुवर्णमेकं बद्ध्वा वस्त्रं परित्यज्य शय्यायामपक्रमति। अथ साधकस्तां हस्ते गृह्णाति। अङ्गुलेयिकैकावमुञ्च्यावक्रमते। अथ कण्ठा दिव्यमुक्ताहारां अथ वाहात् कटकं कट्यां मेखलां पद्भ्यां नूपुरं शीर्षे मणिं एवमन्यतरान्यतरं दिव्यमाभरणमेकं यत्र यत्र गृह्यते तत्र तत्रानुप्रयच्छति। अवध्यां गच्छति चागच्छति च। एवं प्रत्यहं निरवशेषं व्ययीकर्त्तव्यम्। एवं यावद्भिर्मासैः मन्त्रापयति तदा मन्त्रयितव्यम्। भार्या भवति। नित्यस्था रसायनं प्रयच्छति यं पीत्वा दीर्घकालं जीवति। मनसा ध्यात्वा खदिरकीलकं भूमौ निखानयेत्। दिव्यं विमानमुपपद्यते। उद्धृतेऽन्तर्धीयते।

अस्याः मन्त्रः द्वितीयमस्ति। **ॐ महानग्नि नग्निजे स्वाहा।।** तेनैव दीपं प्रज्वाल्य अनेन मन्त्रेणाष्टशताभिमन्त्रितं कृत्वा कारयेत्! नियतमागच्छति। कीलकं चाभिमन्त्र्य निखानयेत्। उद्धृतदीपे निर्वृते चान्तर्धानं कीलकं मानुषं वसाकीलं च गोशृङ्गे गवलमहिषशृङ्गे वा श्मशाने चैलवर्तिना वोढव्यम्। देशान्तरे यत्रेष्टं तत्र ददाति। स्वयं वा करोति। न च मन्त्रा दातव्या। अथ ददाति छिन्नविद्यो भवनि। यस्य ददाति तस्यैव तत् सम्पद्यते। यत्र वाभिरुचितं यत्र वा स्थाने गुप्ते करोति। एषा सिद्धिः आवर्त्त्य नापगच्छति। अन्यां वा रमापयते। किन्तु तैः सार्धं न मन्त्रयति। अन्यस्त्रीदर्शनाभिरुचितं मनसेप्सितं तदानुरूपी तस्योपसङ्क्रमतो ह्यपूर्वस्य साधकवशादिति।

सुरसुन्दर्याया मन्त्रः-**ॐ सुरसुन्दरि! स्वाहा।**

अस्यामुपचारः-खदिरकाष्ठैरग्निं प्रज्वाल्य घृताहुतीनां अष्टसहस्रं जुहुयात्। त्रिसन्ध्यं मासमेकं शुक्लपूर्णमास्यां कुशविण्डकोपविष्टः शुचिना शुचौ देशे मन्त्रं तावज्जपेद्रहसि यावदर्धरात्रे नियतमागच्छति। ततो माता भगिनी भार्या यथैव पूर्वं तत् सर्वं करोति सर्वं च विस्तरतो वक्तव्यम्।।

इत्येताः सप्त यक्षिण्यः वज्रपाणिसमाज्ञया।
पर्यटन्ति महीं कृत्स्नां त्रैलोक्यं च सुरासुरम्।।९।।
विचेरुः कृपालुभ्यो मर्त्त्यानां मैथुनप्रियाः।
केऽपि दार्यास्तथा बाला मूढाश्चापरयक्षिका।।१०।।

पर्यटन्ति तथा रात्रौ सिंहकाम्यपरा हिता ।
बालानां जीवनाशाय लोलुपा मांसभोजिका ।।११।।
तथा रुधिरगन्धेन जम्बूद्वीपं हि मागताः ।
प्राणापरोधिका यक्षी नित्यं सा शोणितप्रिया ।।१२।।
पर्यटन्ति गृहां सर्वां आरक्षामृतकसूतकाम् ।
तेषां निग्रहमित्युक्तः समयोऽयं सम्प्रकाशितः ।।१३।।
यथा सङ्ग्रहरागं च निबन्ध्यं चेह बालिशाम् ।
तथा सर्वमिदं प्रोक्तं सत्त्वानां हितकारणात् ।।१४।।
मैथुनार्थी यथा मन्त्री रागान्धो मूढचेतसः ।
मन्त्रैराकृष्य भुञ्जीत यक्षीं वा अथ राक्षसी ।।१५।।
नागीं च मथ गन्धर्वी दैत्ययोषिमथ किन्नरीम् ।
पातालं रम्य असुराणां पुरोत्तमम् ।।१६।।
प्रविशेत् तत्र मन्त्रज्ञः यत्र स्त्रीणामसङ्ख्यकम् ।
तत्र गत्वा वसेत् कल्पं मन्त्रज्ञो मन्त्रजापिनः ।।१७।।
मैत्रेयो नाम सम्बुद्धः यदा बुद्धो भविष्यति ।
तदासौ श्रोष्यति सद्धर्मं श्रुत्वा मुक्तो भविष्यति ।।१८।।
सुरकन्यासुरीं चैव विद्याधरवराङ्गनाम् ।
मन्त्रैराकृष्य भुञ्जीत दिव्यसौख्यरतिं त्वदा ।।१९।।
जम्बूद्वीपगतो मन्त्री तत्रैवानयते सदा ।
शुचिस्थाने तदा गुप्ते शौचाचाररतः सदा ।।२०।।
मूढानामुत्तमा सिद्धिः कदाचित् तेन जायते ।
विन्मूत्रशुचिस्थानं सदा दुर्गन्धिपूतिकम् ।।२१।।
व्याधिदुःखं तथा शोकं मरणान्तं दुःखभाजनम् ।
वियोगं रतिसम्पृक्तं न स्पृशेन्मानुषीं स्त्रियाम् ।।२२।।
अनित्यदुःख तथा शून्यरिक्तस्तुच्छमशाश्वतम् ।
बालमुल्लापनं चापि सङ्कल्पजनितोद्भवेत् ।।२३।।

न गच्छेत् कामतो मन्त्री सर्वकामामनादिजाम् ।
तेषां रतिमित्युक्तो विमुक्तिः तेषु सिद्धिताम् ।।२४।।
सिध्यन्ते तस्य मन्त्रा वै ये विरक्ता तु कामतः ।
विन्मूत्ररुधिरासिक्तां + + + चैव पूजिताम् ।।२५।।
जरामृत्युसुशोकां च न स्पृशेन्मानुषीं तनुम् ।
न भजेन्मैथुनं तत्र मोहान्धा रागचेतसाम् ।।२६।।
न सिद्धिर्लभ्यते मन्त्रां तेषु सेवी सदा शुची ।
मन्त्रज्ञो मन्त्रजापी च सप्रज्ञोऽथ जितेन्द्रियः ।।२७।।
शौचाचाररतो धीरः सर्वमन्त्रोऽपि हि सदा ।
पद्मोच्चा समोदा च अजिता चापि जया सदा ।।२८।।
श्यामावर्ता तथा यक्षी इत्येता यक्षिमहर्द्धिका ।

पद्मोच्चाया मन्त्रः- **ॐ पद्मोच्चे स्वाहा ।।**

अस्याः कल्पः- गङ्गाकूले समुद्रतटे वा उद्यानपुष्पवाटिकायां मध्ये उडयं कृत्वा शुचितरं आत्मना च शुचिर्भूत्वा शिलापट्टकाकारं मृण्मये कृत्वा तत्रैव रात्रौ द्वारं पिधायित्वा सर्वकामभोग्याद्युपकरणान्युपहृत्य तत्रैवात्मसमीपे यक्षिण्यां शय्यां कल्पयेत्। ततो विद्यां दश सहस्राणि जपेत्। एवं यावन्मासाभ्यन्तरेण नियतभागच्छतीति। आगता च कामोपभोग्या भवति भार्या। दिव्यं च मुक्ताहारं शय्यां परित्यज्य प्रभाते गच्छति। एवं यावद् दिने-दिने षड्भिर्मासैः नित्यस्था भवति। तन्मुक्ताहारं न ग्रहीतव्यम्। यदि गृह्णाति तन्मात्र एवमुपपद्यते। दीनारलक्षमूल्यं तत् हारं मणिरत्नोपशोभितं षड्भिर्मासैरतिक्रान्तैः नित्यस्था भवति भार्या सर्वकामदा। यथारूपमभिलषितं तथा रूपं कृत्वा उपतिष्ठते। यथाभिरुचितमात्मानमभिनिर्मिनोति। साधकस्येच्छया सर्वेषां यक्षीणामयं विधानः यथा निर्दिष्टानां अत्र अन्यत्र।।

जयायाः मन्त्रः - **ॐ जये! सुजये! जापयति सर्वकार्याणि कुरु मे स्वाहा।।**

कनकाभा चित्राङ्गी नीलकुञ्चितमूर्धजा ।
सर्वाङ्गशोभना देवी भोग्या च सुभगा शुभा ।।३०।।

प्रियंवदा प्रमदाश्रेष्ठा सुरूपा चारुदर्शना ।
प्रशस्ताकाररुः शुक्रः सर्वलोकसुपूजिता ।
ईषिद्रक्तेन वस्त्रेण जयां तामभिनिर्दिशेत् ।।३१।।

अस्याः कल्पः - आदौ लक्षमेकं जपेत्। पूर्वसेवा कृता भवति। ततो महारण्यं प्रविश्य फलाहारः तावज्जपेद्यावत् स्वरूपेणोपतिष्ठते। आगता च ब्रवीति-किं करोमीति। यदि माता भवति। मातृवत् सर्वाशां परिपूरयते। राज्यं ददाति। महाधनपतिं करोति। दीर्घायुष्कतामधितिष्ठते। अथ भगिनी यथेप्सितं स्त्रीमानयति योजनसहस्रस्थितामपि। दीनारलक्षं दिने दिने ददाति। स च व्ययीकर्तव्यः। अथ भार्या भवति स्वभवनं नयते दिव्यविमानाभिरुढ़ो तया सार्धं रमते। दीर्घकालं त्रिंशद् वर्षसहस्राणि यथेष्टं विचरते। महायक्षप्रतिरूपो भवति।।

प्रमोदाया मन्त्रः - **ॐ ष्ठ्रीः। ह्रीः महानग्नि हूँ फट् स्वाहा।।**

अस्याः कल्पः - अर्द्धरात्रे अपरिमाणो जापः कर्त्तव्यः। भूयो निद्रां गच्छेत्। मासाभ्यन्तरेण नियतागच्छति। भार्या भवति सर्वकामदा। दिने दिने पञ्चविंशति दीनारमनुप्रयच्छति। आत्मना काश दीर्घकालं च जीवापयति।

परिशिष्टम् द्वितीय

नायिकासाधनम्

साधना ग्रन्थों में अष्टनायिका साधना का वर्णन-विवरण मिलता है। इन नायिकाओं के नाम हैं - जया, विजया, रतिप्रिया, काञ्चनकुण्डलिनी, स्वर्णमाला, जयावती, सुरङ्गिणी तथा विद्राविणी। इनकी साधना प्रेयसी के रूप में की जाती है। सिद्धि प्राप्त होने पर ये साधक को रतिसुख, धन, वस्त्र एवं आभूषणादि निरन्तर प्रदान करती रहती हैं तथा साधक की समस्त इच्छित कामनाएं पूर्ण करती रहती हैं।

किसी भी नायिका की साधना करने से पूर्व सर्वप्रथम गुरु एवं गणपति का पूजन अवश्य करे। यदि श्री गुरुदेव प्रत्यक्ष रूप में उपस्थित न हों तो उनसे मानसिक रूप से आज्ञा अवश्य प्राप्त कर ले। साधना में जहाँ पर जो दिन प्रशस्त हो उसी दिन से साधनां प्रारम्भ करे। जहाँ पर दिन का उल्लेख न हो वहाँ पर शुक्रवार से साधना प्रारम्भ करे।

जयानायिकासाधना

मन्त्र

।।ॐ ह्रीं ह्रीं नमो नमः जये हुँ फट्।।

साधक सघन वन में या निर्जन देवस्थान में बैठकर एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या तक ऊपर लिखे हुए मन्त्र का नित्य पाँच हजार बार जप करे। ऐसा करने पर जया नामक नायिका दूसरी अमावस्या को सिद्ध हो जाती है तथा साधक की प्रेमिका बनकर मनोवाञ्छित वर प्रदान करती है।

विजया नायिका साधना

मन्त्र

।।ॐ हिलिहिलि कुटी कुटी तुहु तुहु मे वशमानय अः अः स्वाहा।।

साधक श्मशान में स्थित वृक्ष पर चढ़कर शुक्रवार की रात्रि में ऊपर लिखे मन्त्र का प्रतिदिन दश हजार की संख्या में जप करे। तीन लाख जप होने पर विजया नामक नायिका सिद्ध होती है तथा प्रसन्न होकर साधक के वश में हो जाती है।

रतिप्रिया नायिका साधना

मन्त्र

।।हुँ रतिप्रिये साधय साधय जल जल धीर धीर आज्ञापय स्वाहा।।

साधक रात्रिकाल में नंगा होकर नाभि के बराबर जल में खड़ा होकर ऊपर लिखे मन्त्र का छ: महीने तक हविष्याशी होकर सम्पूर्ण रात्रि पर्यन्त जप करे। इससे रतिप्रिया नायिका वश में हो जाती है।

काञ्चनकुण्डलिनी नायिका साधना

मन्त्र

।।ॐ लोलजिह्वे अट्टाट्टहासिनि सुमुखिः काञ्चनकुण्डलिनी खे ६ च क्षैं हुँ।।

साधक सर्वप्रथम एक गोबर की पुतली बनाये। एक वर्ष तक पाद्यादि से काञ्चनकुण्डलिनी नायिका का पूजन तथा मन्त्र जप तिराहे में स्थित वटवृक्ष की जड़ में रात्रिकाल में गुप्तभाव से करे। ऊपर लिखे मन्त्र का जप साधक करे।

स्वर्णमाला नायिका साधना

मन्त्र

।।ॐ जय जय सर्वदेवासुरपूजिते स्वर्णमाले हुँ हुँ ठः ठः।।

साधक ग्रीष्मकाल के चैत्र, वैशाख एवं ज्येष्ठ—इन तीन मास में मरुभूमि में दोपहर को बैठे तथा अपने चारो ओर अग्नि प्रज्ज्वलित कर ले। इस प्रकार स्थित होकर ऊपर लिखे मन्त्र का जप करे। इस प्रकार करने से स्वर्णमाला नायिका की सिद्धि प्राप्त होती है।

जयावती नायिका साधना

मन्त्र

।।ॐ ह्रीं क्लीं स्त्रयाँ हुँ द्रुँ ब्लूँ जयावति यमनिकृन्तनि क्लीं क्लीं ठः।।

साधक निर्जन वन में जाए। वहाँ पर स्थित सरोवर के जल में रात्रिकाल में खड़ा होकर आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद मास में उपरोक्त मन्त्र का जप करे। ऐसा करने पर जयावती नायिका सिद्ध होती है।

सुरङ्गिणी नायिका साधना

मन्त्र

।।ॐ ॐ ॐ हुँ हुँ हुँ शीघ्रं सिद्धिं प्रयच्छ सुरसुरङ्गिणि महामाये साधकप्रिये ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।

साधक प्रतिदिन रात्रिकाल में शय्या पर बैठकर मंत्र का नित्य एक हजार जप करे। ऐसा एक वर्ष तक करने पर छः वर्ष में सुरङ्गिणी नायिका सिद्ध होती है।

विद्राविणी नायिका साधना

मन्त्र

।।हँ यँ वँ लँ वँ देवि रुद्रप्रिये विद्राविणि ज्वल ज्वल साधय साधय कुलेश्वरि स्वाहा।।

साधक युद्ध में मृत व्यक्ति की हड्डी को गले में धारण कर निर्जन वन में रात्रि में मन्त्र का कुल बारह लाख जप करने पर सिद्धि प्राप्त होती है। इसमें दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है।

परिशिष्टम् तृतीय

नायिका कवच एवं स्तोत्र

यक्षिणी नायिकादि की सिद्धि के लिए नायिका कवच एवं नायिका स्तोत्र का पाठ अत्यन्त ही लाभदायक माना गया है। इसके पाठ से एवं पूर्ण विधि-विधान के साथ साधना करने पर सिद्धि प्राप्त होती है। साधकों के लाभ हेतु मैं यहाँ पर नायिका कवच एवं नायिका स्तोत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह दोनों कवच एवं स्तोत्र 'वृहद्भूतसन्धानडामर महातन्त्र' नामक ग्रन्थ से लिए गए हैं -

अथ नायिकाकवचम्

उन्मत्तभैरव उवाच

शृणु कल्याणि! मद्वाक्यं कवचं देवदुर्लभम् ।
यक्षिणी नायिकानान्तु संक्षेपात्सिद्धिदायकम् ।।१।।
ज्ञानमात्रेण देवेशि! सिद्धिमाप्नोति निश्चितम् ।
यक्षिणी स्वयमायाति कवचज्ञानमात्रतः ।।२।।
सर्वत्र दुर्लभं देवि! डामरेषु प्रकाशितम् ।
पठनाद्धारणान्मर्त्यो यक्षिणीं वशमानयेत् ।।३।।
कवचस्य ऋषिर्गर्गो गायत्रीच्छन्द ईरितम् ।
देवता यक्षिणी देवी सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।।४।।
साक्षात्सिद्धिसमृद्ध्यर्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ।
ॐ शिरो मे यक्षिणी पातु ललाटं यक्षकन्यका ।।५।।
मुखं श्रीधनदा पातु कर्णौ मे कुलनायिका ।
चक्षुषी वरदा पातु नासिकां भक्तवत्सला ।।६।।
केशाग्रं पिङ्गला पातु धनदा श्रीमहेश्वरी ।
स्कन्धौ कुलालपा पातु गलं मे कमलानना ।।७।।
किरातिनी सदा पातु भुजयुग्मं जटेश्वरी ।
विकृतास्या सदा पातु महावक्रप्रिया मम ।।८।।

अस्त्रहस्ता पातु नित्यं पृष्ठमुदरदेशकम् ।
भेरुण्डा माकरी देवी हृदयं देवसम्मता ।।९।।
अलङ्कारान्विता पातु मे नितम्बस्थलं दया ।
धार्मिका गुह्यदेशं मे पादयुग्मं सुराङ्गना ।।१०।।
शून्यागारे सदा पातु मन्त्रमातास्वरूपिणी ।
निष्कलङ्का सदा पातु चाम्बुवत्यखिलां तनुम् ।।११।।
प्रान्तरे धनदा पातु निजबीजप्रकाशिनी ।
लक्ष्मीबीजात्मिका पातु निजबीजप्रकाशिनी ।।१२।।
लक्ष्मीबीजात्मिका पातु खड्गहस्ता श्मशानके ।
शून्यागारे नदीतीरे महायक्षेशकन्यका ।।१३।।
पातु मां वरदाख्या मे सर्वाङ्गं पातु मोहिनी ।
महासङ्कटमध्ये तु सङ्ग्रामे रिपुसञ्चये ।।१४।।
क्रोधरूपा सदा पातु महादेवनिषेविका ।
सर्वत्र सर्वदा पातु भवानी कुलदायिका ।।१५।।
ॐ इत्येतत्कवचं देवि! महामन्त्रौघविग्रहम् ।
अस्यापि स्मरणादेव राजत्वं लभतेऽचिरात् ।।१६।।
पञ्चवर्षसहस्राणि स्थिरो भवति भूतले ।
वेदज्ञानी सर्वशास्त्रवेत्ता भवति निश्चितम् ।।१७।।
अरण्ये सिद्धिमाप्नोति महाकवचपाठतः ।
यक्षिणी कुलविद्या च समायाति सुसिद्धिदा ।।१८।।
अणिमा लघिमा प्राप्तिः सुखसिद्धिफलं लभेत् ।
पठित्वा धारयित्वा च निर्जनेऽरण्यमस्तके ।
स्थित्वा जपेल्लक्षमन्त्रमिष्टसिद्धिं लभेन्निशि ।।१९।।
भार्या भवति सा देवी महाकवचपाठतः ।
योगिनां दुर्लभं देवि! किमन्यत् साधनादिकम् ।
ग्रहणादेव सिद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।।२०।।
।।इति वृहद्भूतसन्धानडामरे महातन्त्रे योगिनीनायिकाकवचं संमाप्तम्।।

अथ नायिकास्तोत्रम्

श्री उन्मत्तभैरव उवाच

अस्याः स्तोत्रं प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ।
साक्षात् सिद्धिं समाप्नोति योगिनीस्तोत्रपाठतः ।।१।।
हृदयाम्भोरुहे ध्याये सुन्दरीं नवयौवनाम् ।
किङ्किणीजालमालाढ्यां त्रिपुरां पद्मलोचनाम् ।
वराभयकरां धन्यां योगिनीं कामचारिणीम् ।।२।।
ॐ वन्दे योगिनि! योगसिद्धिधनदे!बन्धूकपुष्पोज्ज्वले,
नानालङ्कृतिविग्रहे! सुरमणि श्रीदेवकन्ये प्रिये! ।
दारिद्र्यं हन मे सुखं प्रियपदं वाञ्छादिसिद्धिं देहि,
राज्यं मित्रकलत्रपुत्रधनदे! मातः समाधेहि मे ।।३।।
तवाङ्घ्रिकमलद्वयं तरुणि देवते! दारुणं,
महाभयसमाकुलं हर भजामि भूमण्डले ।
कृपां कुरु ममालये सपरिवारदेवैः सह
सदा भव हि भागिनी क्षम कुलापतापं मुदा ।।४।।
त्वमेका योगिनी कन्या पिङ्गला युवती रतिः ।
गौरी विद्याधरी श्यामा प्रसन्ना भव सर्वदा ।।५।।
त्वं सन्ध्या खेचरी विद्या यक्षिणी भूतिनी प्रिया ।
त्वमेका पातु मां धात्री स्वर्णपात्रकराम्बुजा ।।६।।
हिरण्याक्षी विशालाक्षी चपला नागिनी जया ।
प्रसन्ना भव शब्दाख्या कामिनी कामदायिनी ।।७।।
सिद्धिदा कुलमन्त्राणां डाकिनी खेचरी भव ।
नमामि वरदे देवि! योगिनीगणसेविते ।।८।।
तवाङ्घ्रियुगलं कान्ते! चन्द्रकान्तिसुमालिनी ।
अमले कमले देवि! दारिद्र्यदोषभञ्जिनी ।।९।।
वन्दे त्वां मनसा वाचा प्रसन्ना भव सुन्दरि! ।
कलिकालकृते देवि! खेचरीशतनायिके ।।१०।।

धनसिद्धिं देहि शीघ्रं समागच्छ गृहे मम ।
सिद्धिदा विधुराणां च अकालमृत्युनाशिनी ।।११।।
दशवर्षसहस्राणि स्थिरा भव कुले मम ।
वाक्यसिद्धिप्रदा देवी पद्मरागसुमालिनी ।।१२।।
सर्वालङ्कारभूषाङ्गी प्रसन्ना भव सर्वदा ।
मायाबीजात्मिका देवी वधूबीजसमाकुले ।।१३।।
सिद्धिद्रव्यं सदा देहि कान्ता भव ममालये ।
विचित्राम्बरशोभाङ्गी नानालङ्कारवेष्टिते ।।१४।।
विम्बारमणिसूर्याभे चन्द्रकान्तिप्रभोज्ज्वले ।
स्मेराननाब्जे कामेशि! ममाज्ञापय दुर्लभम् ।।१५।।
कामेशि! परमानन्दराजभोगप्रदायिनी ।
सिद्धिदा वरदा माता भगिनी वा भवप्रिया ।।१६।।
तवाज्ञाकिङ्करो देवि! पूजयाम्यहमादरात् ।
ममाग्रे संस्थिरा भूत्वा सिद्धिदा भव सर्वदा ।।१७।।
कौलिनी गगनस्था त्वं मम पार्श्वचरी भव ।
शतवर्षसहस्राणि मामेकं रक्ष सेवकम् ।।१८।।
त्वामेकां जगतां देवि! सिद्धिविद्यां नमाम्यहम् ।
ममाङ्गे चैव पार्श्वे त्वं कामिनी भव मे सदा ।।१९।।
दशवर्षसहस्राणि सिद्धे! कमललोचनाम् ।
वनिता भव मे नित्यं नित्यं देहं कुरुप्रिये! ।।२०।।
एतत् स्तोत्रं पठेद् विद्वान् ध्यानाभ्याससमन्वितम् ।
पक्वान्नं नारिकेलं वा खण्डमिश्रं निवेदयेत् ।
सिद्धिं यच्छन्ति भूतिन्यः स्तोत्रपूजाप्रभावतः ।।२१।।

इति वृहद्भूतसन्धानडामरे महातन्त्रे भैरवी-भैरवसंवादे नायिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

परिशिष्टम् चतुर्थ

श्रीधनदारतिप्रिया यक्षिणी कवच एवं स्तोत्र

अथ श्रीधनदारतिप्रिया यक्षिणीकवचम्

देव्युवाच

कथयस्व महादेव धनदाकवचं शुभम् ।
यच्छ्रुत्वा कवचं दुर्गं कुबेर इव भैरव ।।१।।

भैरव उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं धनदाप्रियम् ।
दारिद्र्यखण्डनं नाम सर्वसौभाग्यदायकम् ।।२।।

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीधनदायक्षिणीकवचमन्त्रस्य कुबेरऋषि: पंक्तिच्छन्द: श्रीधनदा देवता रं बीजं श्रीं शक्ति: ह्रीं कीलकं श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्धये मे दारिद्र्यनाशाय श्रीधनदाकवचपाठे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास:- ॐ ह्रीं कुबेरऋषये नम: शिरसि। ॐ ह्रीं पंक्तिश्छन्दसे नम: मुखे। ॐ हूं श्री धनदादेवतायै नम: हृदि। ह्रँ रँ बीजाय नम: गुह्ये। ॐ ह्रौं श्रीं शक्तये नम: पादयो:। ॐ ह्र: ह्रीं कीलकाय नम: नाभौ। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्र: विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यास:।

करन्यास:- ॐ ह्राँ अंगुष्ठाभ्यां नम:। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नम:। ॐ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नम:। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नम:। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नम:। ॐ ह्र: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:। इति करन्यास:।

हृदयादिषडङ्गन्यास:- ॐ ह्राँ हृदयाय नम:। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूँ शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ह्र: अस्त्राय फट्। इति हृदयादिषडङ्गन्यास:।

अथ ध्यानम्

ॐ कुंकुमोदरगर्भाभां किञ्चिद्यौवनशालिनीम् ।
मृणालकोमलभुजां केयूराङ्गदभूषिताम् ।।३।।

नीलोत्पलदृशं किञ्चिदुद्यत्कुचविराजिताम् ।
कराभ्यां भ्राम्यत्कमलं वराभयसमन्विताम् ।।४।।
रक्तवस्त्रपरीधानं ताम्बूलाधरपल्लवाम् ।
हेमप्राकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनोपरि ।।५।।

अथ कवचम्

ॐ तत्तुर्यं रक्षयेत्सर्वशरीरं देवि सर्वतः ।
माया चक्षुर्भुजौ पातु पादौ रक्षेद्रतिप्रिया ।।६।।
वह्निजाया पातु लिङ्गं मन्त्रं सर्वत्र रक्षतु ।
धनदा सर्वदा रक्षेत्पथि दुर्गे यमालये ।।७।।
मञ्जुघोषा सदा पातु पृष्ठजानुयुगे बलम् ।
सुन्दरी दन्तजालं च कण्ठजालं च चामरी ।।८।।
भ्रामरी भ्रमणं रक्षेद्दशदिक्षु सुपाठिका ।
कालभैरवी पातु वदनं श्रुतिनेत्रयोः ।।९।।
त्रिनेत्रा त्वरिता पातु मदङ्गं सर्वसङ्कटे ।
ओष्ठाधरौ महामाया रसनां चोरुदण्डयोः ।।१०।।
अंगुलीषु तथा शक्तिर्जघनं चैव चण्डिका ।
इण्द्राणी पातु मे पूर्वे माहेश्वरी तु दक्षिणे ।।११।।
कौमारी पश्चिमे पातु वैष्णवी चोत्तरेऽवतु ।
ऐशान्यै पातु वाराही चामुण्डा वह्निकोणके ।।१२।।
कौवेरी नैर्ऋते पातु वायव्यां दुःखहारिणी ।
ऊर्ध्वं ब्राह्मी सदा पातु अधो दुर्गा सदावतु ।।१३।।
ज्ञात्वा तु कवचं दिव्यं सुखेन सर्वसिद्धिकृत् ।
ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले देवि त्वां धनदायिकम् ।।१४।।
रत्नपात्रद्वयं चाग्रे दायिनीं निधिवर्षिणीम् ।
अन्नपूर्णावराहाभ्यां श्रीभूमिं सहितां जपेत् ।।१५।।
अन्यहस्तं गतं छत्रं कुबेरश्चामरद्वयम् ।
भविष्यति महादेव्या मन्त्रैः सर्वैः समृद्धिमान् ।।१६।।

कदाचिद्यः पठेद्धीमान् न वै रोगो भवेद्ध्रुवम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं सर्वविद्यासुशोभनम् ।।१७।।

इति श्रीरुद्रयामले उत्तरतन्त्रे धनदारतिप्रियायक्षिणीकवचं सम्पूर्णम्।

अथ धनदा यक्षिणीस्तोत्रम्

देवी देवमुपागम्य नीलकण्ठं सदाशिवम् ।
कृपया पार्वती प्राह शङ्करं करुणाकरम् ।।१।।

देव्युवाच

ब्रूहि वल्लभ साधूनां दरिद्राणां कुटुम्बिनाम् ।
दारिद्र्यदलनोपायमञ्जसैव धनप्रदम् ।।२।।
पूजयन् पार्वतीवाक्यमिदमाह महेश्वरः ।
उचितं जगदम्बासि तव प्रीत्याऽनुकम्पया ।।३।।
अत्यन्तं सानुजं रामं साञ्जनेयमथानुगम् ।
प्रणम्य परमानन्दं वक्ष्येहं स्तोत्रमुत्तमम् ।।४।।
धनदा श्रद्दधानानां सद्यः सुलभसाधनम् ।
योमक्षेमकरं प्रोक्तं सत्यं मे वचनं यथा ।।५।।
पठेत्तस्याग्रतो वापि ब्राह्मणो रसिकोत्तमः ।
धनलाभो भवेदाशु नाशयेत्तस्य निःस्वताम् ।।६।।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीधनदास्तोत्रमन्त्रस्य कुबेर ऋषिः पंक्तिच्छन्दः श्रीधनदेश्वरी देवता धं बीजं स्वाहा शक्तिः श्रीं कीलकं श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्धये दारिद्र्यनाशाय स्तोत्रमन्त्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- ॐ कुबेरऋषये नमः शिरसि। पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे। धनदादेवतायै नमः हृदि। धं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः। श्रीं कीलकाय नमः करसम्पुटे। श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्ध्यर्थं दारिद्र्यनाशाय स्तोत्रमन्त्रजपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यासः- ॐ श्राँ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ श्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास:- ॐ श्राँ हृदयाय नम:। ॐ श्रीँ शिरसे स्वाहा। ॐ श्रूँ शिखायै वषट्। ॐ श्रैँ कवचाय हुं। ॐ श्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्र: अस्त्राय फट्। इति हृदयादिषडङ्गन्यास:।

अथ ध्यानम्

ॐ हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितले रत्नपीठाधिरूढां
यक्षीं बालां स्मरामि परिमलकुसुमोद्भासिधम्मिल्लभाराम् ।
पीनोत्तुङ्गस्तनाढ्यां कुवलयनयनां रत्नकाञ्ची कराभ्यां
भ्राम्यद्रक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषाङ्गरागाम् ।।७।।

एवं ध्यात्वा मानसोपचारै: सम्पूज्य स्तोत्रं पठेत्।

ॐ भूभवां सम्भवां भूत्यै पंक्तिकल्पलतांशुभाम् ।
प्रार्थयेत्तांस्तथा कामान् कामधेनुस्वरूपिणीम् ।।८।।
धरामरप्रिये पुण्ये धन्ये धनदपूजिते ।
सुधनं धार्मिकं देहि यजनाय सुसत्वरम् ।।९।।
धर्मदे धनदे देवि दानदे तु दयाकरे ।
त्वं प्रसीद महेशानि यदर्थं प्रार्थयाम्यहम् ।।१०।।
रम्ये रुद्रप्रिये रूपे रमारूपे रविप्रिये ।
शशिप्रभमनोमूर्त्ते प्रसीद प्रणते मयि ।।११।।
आरक्तचरणाम्भोजे सिद्धसर्वाङ्गभूषिते ।
दिव्याम्बरधरे दिव्ये दिव्यमाल्योपशोभिते ।।१२।।
समस्तगुणसम्पन्ने सर्वलक्षणलक्षिते ।
जातरूपमणीन्द्वादिभूषिते भूमिभूषिते ।।१३।।
शरच्चन्द्रमुखे नीले नीरनीरजलोचने ।
चञ्चरीकं च भूवासं श्रीहारि कुटिलालके ।।१४।।
मत्ते भगवति मात: कलकण्ठरवामृते ।
हासावलोकनैर्दिव्यैर्भक्तचिन्तापहारिके ।।१५।।
रूपलावण्यतारुण्ये कारुण्यामृतभाजने ।
क्वणत्कङ्कणमञ्जीरलसल्लीलाकराम्बुजे ।।१६।।

रुद्रप्रकाशिते सत्त्वे धर्माधारे दयालये ।
प्रयच्छ प्रजनायैव धनं धर्मैकशोधनम् ।।१७।।
मातरं वा विलम्बेन दिशस्व जगदम्बिके ।
कृपया करुणासारे प्रार्थितं पुरया शुभे ।।१८।।
वसुधे वसुधारूपे वसुवासववन्दिते ।
धनदे यजनायैव वरदे वरदा भव ।।१९।।
ब्राह्मण्ये ब्राह्मणे पूज्ये पार्वतीशिवशङ्करे ।
श्रीकरे शङ्करे श्रीदे प्रसीद मयि किङ्करे ।।२०।।
स्तोत्रं दारिद्र्यदावार्तिशमनं च धनप्रदम् ।
पार्वतीशप्रसादेन सुरेशशङ्करोदितम् ।।२१।।
श्रद्धया ये पठिष्यन्ति पाठयिष्यन्ति भक्तितः ।
सहस्त्रमयुतं लक्षं धनलाभो भवेद्ध्रुवम् ।।२२।।

इति श्रीरुद्रयामले उत्तरतन्त्रे भैरवभैरवीसंवादे धनदारतिप्रियायक्षिणीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

30669

हमारे अन्य प्रकाशन

१- योनितंत्रम् -भाषा टीका सहित	- अजय कुमार उत्तम	२५/-
२- निरूत्तरतंत्रम्-भाषा टीका सहित	- अजय कुमार उत्तम	५०/-
३- श्रीतारकर्पूरस्त्रोतम् -माधवी हिन्दी व्याख्या सहित	- अजय कुमार उत्तम	२०/-
४- श्रीमद्दक्षिणकालिकायाःकर्पूरस्तवः - 'दीपिका' संस्कृत-माधवी हिन्दी व्याख्या सहित	- अजय कुमार उत्तम	२५/-
५- रत्नावली - आर्य नागार्जुनपाद प्रणीत - 'विमला' हिन्दी व्याख्या सहित	- डॉ॰ अवधेश कुमार चौबे	२५/-
६- योगरत्नमाला - नागार्जुन प्रणीत- संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्या सहित	- अजय कुमार उत्तम	२५/-
७- दिव्याङ्गनातन्त्रम्	- अजय कुमार उत्तम	४०/-
८- कङ्कालमालिनीतंत्र -हिन्दी व्याख्या सहित	- एस॰ एन॰ खण्डेलवाल (१९९३)	४०/-
९- ज्ञानसङ्कुलीतंत्र -हिन्दी व्याख्या सहित	- एस॰ एन॰ खण्डेलवाल (१९९३)	१०/-
१०- भूत-डामर-महातंत्र -भाषा टीका सहित	- अजय कुमार उत्तम (२००२)	५०/-
११- मंत्र-तंत्र-मञ्जूषा-(श्रीमत्रिविक्रमभट्टारकप्रणीता)	- वासुदेवशर्मा (२००२)	१००/-
१२- महामायातंत्र -भाषा टीका सहित	- एस॰ एन॰ खण्डेलवाल (१९९७)	२०/-
१३- महामोक्षतंत्र -भाषा टीका सहित	- एस॰ एन॰ खण्डेलवाल (१९९३)	१५/-
१४- शिवमहिम्नस्त्रोत-हिन्दी व्याख्या सहित	- बृजकिशोर त्रिपाठी	१५/-
१५- शक्तितत्त्वविमर्श	- देशराज त्रिपाठी (२००१)	२००/-
१८- सामुद्रिक-रहस्यम्	- डॉ॰ देवीप्रसाद त्रिपाठी (२००२)	
१७- सौन्दर्य लहरी -भाषा टीका सहित	- अजय कुमार उत्तम (२००२)	
१८- हस्तसंजीवनम् -भाषा टीका सहित	- गणेशदत्त पाठक एवं डॉ॰ हरिशंकर पाठक (१९	
१९- स्वप्नकमलाकर -'स्वप्नेश्वरी' हिन्दी व्याख्या सहित	- अजय कुमार उत्तम (२००२)	

29
B
JAC

प्रकाशक
भारतीय विद्या संस्थान
सी. 27/59 जगतगंज, वाराणसी-221002